CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

6·1

31:2/109A

ठुमरी- संग्रह

भाग- 2

ग्रन्थालय
, वाराणसी-५
1·09A

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ. 2/109A
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी प्रकाशन–३

ठुमरी-संग्रह

[ठुमरी-संकलन भाग दो]

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

संकलनकर्त्ता एवं लिपिकार

गंगाधर राव तैलंग

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ–१

प्रथमावृत्ति] [सन् १९७७ ई०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

THUMARI-SANGRAH
ठुमरी-संग्रह
(स्वर-लिपियुक्त ठुमरियाँ)

प्रकाशक :
नरेन्द्रमोहन मेहरोत्रा
सचिव
उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी,
कैसरबाग, लखनऊ।

सर्वाधिकार–
उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी

प्रथमावृत्ति १९७७

मूल्य रु० २०–००

मुद्रक :
छाया प्रेस,
आर्यनगर, कानपुर
टेलीफोन : ४४७२२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

सन्त-गायक आचार्य नानू भइया तैलंग

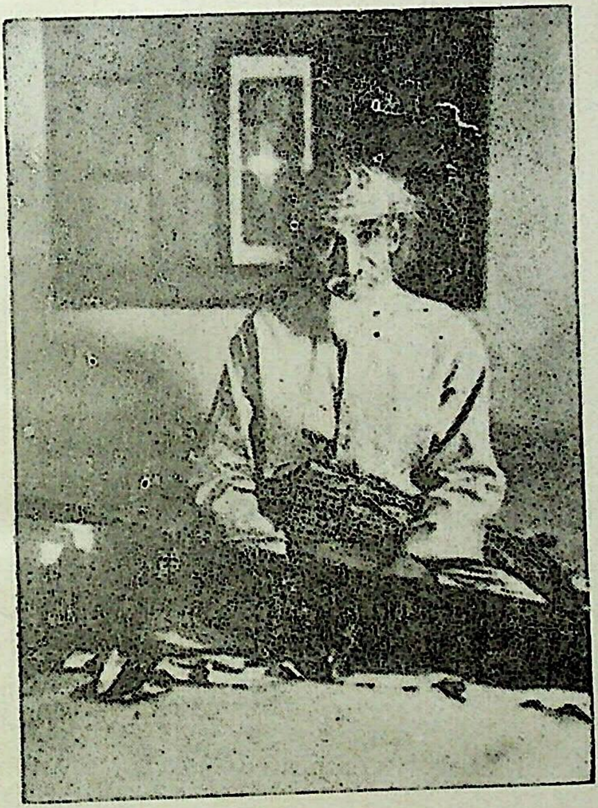

जन्म—५ जुलाई १८७९ : मृत्यु—अनन्त चतुर्दशी, १७ सितम्बर १९४८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपनी बात

जीवन में अनेक शुभ संकल्प उठते रहते हैं, किन्तु इनमें बिरले ही ऐसे होते हैं, जो क्रियात्मक रूप में पूर्ण हो पाते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि कार्य-साधना के श्रीगणेश का संयोग ही समुपस्थित नहीं हो पाता। प्रस्तुत ग्रन्थ की विषय-सामग्री की दशा भी यही हुई होती, यदि इसे एक विशेष संयोग न प्राप्त हुआ होता। बात लगभग सन् १९७०–७१ की है। प्रातःकालीन अभ्यास के लिए मैं तम्बूरा लेकर बैठा ही था कि देश के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्, संगीतशास्त्र-मर्मज्ञ तथा मेरे ज्येष्ठ गुरुबन्धु श्रद्धेय ठाकुर जयदेव सिंह जी मेरे निवास-स्थान पर अकस्मात् पधारे। ठाकुर साहब ने अपने आवासकाल में कला और संस्कृति के क्षेत्र में कानपुर नगर की जो सर्वतोमुखी सेवा की है, वह यहाँ के संगीत के विकास के इतिहास में चिरस्मरणीय है। कानपुर नगर में अपने आवास के कुछ दिनों बाद ही ठाकुर साहब ने पूज्य 'गुरुजी' अर्थात् मेरे पिता स्व० नानू भइया से प्रायोगिक संगीत की विधिवत् शिक्षा ग्रहण की थी। उनके हृदय में गुरुजी के प्रति सदैव अटूट श्रद्धा रही है। कानपुर छोड़ने के बाद सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक समारोहों में भाग लेने के उद्देश्य से अथवा पारिवारिक कारणों से, वे जब कभी कानपुर पधारे, समय निकालकर उन्होंने मेरे घर आने की अनकम्पा अवश्य की। गुरुजी को ब्रह्मलीन हुए एक युग बीत गया है, तथापि गुरुपत्नी का आशीर्वचन लेने के लिए सदैव की भाँति वे इस बार भी आये थे। अनेकानेक प्रसंगों के बीच प्राचीन बंदिशों के बोलों के संकेत देकर पूज्य 'भइया जी' (मेरे बड़े भाई पं० कृष्णराव तैलंग) व मुझसे उन्होंने अनेक बंदिशें सुनी और सुनाई भी। अन्त में ठाकुर साहब ने गुरुजी की प्राचीन बंदिशों के प्रकाशन की चर्चा चलाई और चलते समय आदेश दिया कि सर्वप्रथम कम से कम एक शतक ठुमरियाँ स्वरलिपि-बद्ध कर उनके पास भेज दी जाय। मेरी अपनी भी यही इच्छा थी; अब ठाकुर साहब का आदेश भी होगया। अतः स्वभावतः इस दायित्व के निर्वाह का मैंने संकल्प कर लिया। इसके बावजूद कतिपय अनिवार्य विवशताओं के कारण इस कार्य में विलम्ब होता चला गया। गांधी संगीत महाविद्यालय का कार्य-भार तो मुझ पर था ही, कुछ विशेष जिज्ञासु विद्यार्थी अभ्यास हेतु मेरे घर पर भी मेरा समय लेने पहुँच जाते थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फलतः ठुमरियों के संकलन-कार्य में रुकावट आती रही। फिर भी इस कार्य को सम्पन्न तो करना ही था।

पूज्य पिता जी ने ग्वालियर घराने की गायकी के संरक्षक बाला साहेब गुरुजी से संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी। गुरु-प्रसाद से वे ख्याल शैली के अप्रतिम गायक सिद्ध हुए। साथ ही ध्रुवपद, धमार, ठुमरी, टप्पा आदि शैलियों पर भी उनका समान अधिकार था। इन सभी शैलियों की बंदिशों का उनके पास भण्डार था। ठाकुर साहब के ही शब्दों में "उनकी गायन शैली परिष्कृत, मधुर और मर्मस्पर्शी थी। आलाप, तान, बोलतान और लयकारी सभी में वह समान रूप से सौंदर्य की सृष्टि करते थे।" गुरुजी ने आजीवन संगीत को साधना के रूप में ही अपने व्यक्तित्व में समाहित कर लिया था। संगीत को अर्थ अथवा यश का निमित्त अथवा साधन बनाना उनके जीवन-लक्ष्य के विपरीत था। ऐसी अवस्था में उनका जीवन ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता गया, वे अधिकाधिक अध्यात्मनिष्ठ एवं वीतरागी होते चले गये और उनका अधिकांश समय गायत्री-जप एवं भगवद्भजन में व्यतीत होने लगा। यह मेरा परम सौभाग्य था कि पूज्य पिता जी से लगभग बारह वर्षों तक मैंने संगीत की शिक्षा ग्रहण करने का अवसर पाया। इसके अतिरिक्त पूज्य 'भइयाजी' से भी मैंने संगीत की पर्याप्त शिक्षा प्राप्त की।

प्रस्तुत 'ठुमरी-संग्रह' का आकलन भी 'भइया जी' के मार्गदर्शन से ही सम्भव होसका है। बंदिशों का अभ्यास एवं उन्हें सही रूप में लिपिबद्ध कराने में उनका अमूल्य योगदान रहा है। संग्रह की एक सौ तीन बंदिशों के अन्तर्गत सुघर पिया, कदर पिया, अख्तर पिया, ललन पिया, नसीर पिया, माधो पिया, नात पिया, कृष्ण कान्ह, मेहरबान, महाराज बिन्दादीन आदि की ठुमरियों, दादरे एवं होली गीतों का समावेश किया गया है। ख्याल, ठुमरी, टप्पा एवं तराने आदि की प्राचीन बंदिशों को स्वरलिपि-बद्ध करने का कार्य गुरुवर्य भइया जी के मार्ग-दर्शन में अभी तक जारी है। परमात्मा की कृपा से उन बंदिशों का लाभ भी संगीत-रसिकों को शीघ्र ही हो सकेगा—ऐसी आशा है। प्रस्तुत संग्रह की सभी बंदिशें यथासम्भव मूलरूप में ही देने की मैंने चेष्टा की है; फिर भी अत्यधिक शृंगारिक, भाषा एवं शब्दार्थ-शिथिल कुछ बंदिशों में यत्र तत्र भाषा, स्वर आदि का अल्प संशोधन किया गया है, ताकि वे अधिक उपयोगी सिद्ध हों। फर्रुखाबाद के मेरे एक मित्र श्री सतीशचन्द्र रस्तोगी ने अपने गुरु श्री केशव देव गोस्वामी से ललन पिया की दस स्वरलिपियाँ लिख कर मुझे साभार प्रेषित की थीं। इनमें से पाँच बंदिशों का समावेश प्रस्तुत संग्रह में होगया है। गुरुबन्धु ठाकुर जयदेव सिंह जी के व्यक्तिगत भेंट के अवसर पर एवं पत्रों द्वारा बार-बार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रोत्साहन एवं प्रेरणा के फलस्वरूप प्राचीन बंदिशों को स्वरलिपि-बद्ध करने का शुभारम्भ हुआ और उन्हीं के प्रयास से इस 'ठुमरी-संग्रह' का प्रकाशन भी सम्भव होसका है।

सभी प्रकार की सावधानियों के पश्चात् भी स्वर-ताल चिन्हों आदि की त्रुटियाँ सम्भव हैं। आशा है कृपालु पाठक एवं रसिक बन्धु उनकी ओर ध्यान न देकर हम बन्धु-द्वय के इस प्रयास का स्वागत करेंगे।

गंगाधर राव तैलंग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आमुख

श्रद्धेय श्री नानू भैया तैलंग एक अनुपम गायक थे। ध्रुवपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा सभी शैलियों पर उनका पूर्ण अधिकार था। उनको लगभग ढाई सौ ध्रुवपद-धमार, आठ सौ से अधिक ख्याल, ढाई सौ ठुमरियाँ और लगभग सौ टप्पे याद थे।

मुझे उनके चरणों के समीप बैठ कर नौ वर्षों तक संगीत सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैंने उनके आत्मज श्री गंगाधर तैलंग से पूज्य गुरु जी द्वारा प्राप्त गीतों को स्वरलिपिबद्ध करने के लिए कई बार कहा था। ख्यालों का तो आदरणीय भातखण्डे जी ने एक बृहद् संग्रह प्रकाशित कर दिया है, किन्तु ठुमरियों का अभी तक कोई अच्छा संग्रह देखने में नहीं आया। इसीलिए मैंने श्री गंगाधर को ठुमरियों को स्वरलिपिबद्ध करने का सुझाव दिया। मेरे आग्रह पर उन्होंने १०३ ठुमरी-दादरा का स्वरलिपि में संग्रह तैयार किया है, जो प्रकाशित होरहा है। यदि यह संग्रह संगीतानुरागियों को रुचिकर प्रतीत हुआ, तो अन्य ठुमरियों का भी संग्रह दूसरे भाग में प्रकाशित किया जायेगा।

ठुमरी की गायकी का अपना वैशिष्ट्य है। यह रूपक संगीत का ही एक प्रारूप है। सभी कलाओं की अभिव्यक्ति में मानव की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं, जो भरत के शब्दों में सात्वती और कैशिकी वृत्ति कही जासकती हैं और आधुनिक शब्दों में classical (क्लासिकल) romantic (रोमाण्टिक)। ठुमरी कैशिकी वृत्ति या रूमानी शैली की गायकी है। इसका सबसे प्राचीन रूप मिलता है छलिक संगीत में। यह अभिनयात्मक संगीत था। श्रीकृष्ण जी के सुपुत्र साम्ब और प्रद्युम्न ने वृजनाभपुर में असुरों के रंगमंच पर इसका प्रदर्शन किया था। कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक में मालविका इसका प्रदर्शन करती हुई दिखलाई गयी है। इसमें स्वराश्रित वाचिक और आंगिक दोनों प्रकार के अभिनय होते थे।

ठुमरी में छलिक की ही प्रवृत्ति विद्यमान है। यह उसीका एक देशी प्रारूप है। इसमें भी स्वराश्रित वाचिक और आंगिक अभिनय होते रहे हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे छलिक का प्रयोग नृत्य के साथ होता रहा, वैसे ही ठुमरी का भी प्रयोग नृत्य के साथ होता रहा है। इसका गान बाई लोग, कथक और भाण्ड नृत्य के साथ किया करते रहे हैं, जिसमें अभिनय का पर्याप्त रूप में प्रयोग होता रहा है। कर्णाटक संगीत में इसकी समकक्षी शैली "पदम्" है, जो अब भी नृत्य और अभिनय के साथ गाया जाता है। हिन्दुस्तानी संगीत में ठुमरी-गायकी से धीरे-धीरे अभिनय का अंश लुप्त होता जारहा है। अब केवल कथक लोग भाव-नृत्य के लिए ठुमरी गाते हैं, जिसमें नृत्य के साथ ठुमरी के बोलों के भाव वाचिक और आंगिक अभिनय के द्वारा व्यक्त करते हैं। उस्ताद लोग जब ठुमरी गाते हैं, तब वे अभिनय का प्रयोग नहीं करते। भाव की अभिव्यक्ति वे केवल स्वरों के द्वारा करते हैं, अंग के द्वारा नहीं।

ठुमरी दो प्रकार की है—(१) बोल-बनाव की ठुमरी या बोल-आलाप-विशिष्ट ठुमरी और (२) बन्दिश की ठुमरी या बोल-बाँट की ठुमरी, या लयप्रधान ठुमरी। बोल-बनाव की ठुमरी विलम्बित लय में—अधिकतर दीपचन्दी, चाचर या पंजाबी ठेके के त्रिताल में गाई जाती है। बोल-बाँट की ठुमरी मध्य लय में अधिकतर त्रिताल में गायी जाती है।

कुछ लोगों ने ठुमरी को चपल और क्षुद्र गायकी बतलाया है। लगता है उन्होंने मध्यलय की ठुमरी के आधार पर यह धारणा बना ली है। विलम्बित लय में गायी जाने वाली ठुमरी में चपलता नहीं है और कुशल गायक उसमें जिस प्रकार का बोल-बनाव या बोल-आलाप करता है, वह अत्यन्त मनमोहक होता है। मध्यलय की ठुमरियों में लय की चपलता की ही विशेषता है। ये ठुमरियाँ अधिकतर वाद्य की "गत" के आधार पर बनायी गयी हैं और नृत्य के साथ गाने के लिए अधिक उपयोगी हैं। विशेषकर सनद पिया और ललन पिया की ठुमरियाँ सितार और सरोद की गतों से होड़ लेती हैं। बन्दिश की ठुमरी का एक प्रकार और है, जो न तो बहुत विलम्बित है, न द्रुत। इस प्रकार की ठुमरी अधिकतर सावकाश अभिनय के लिए रची गयी होती है।

कुछ लोगों ने ठुमरी को काव्य के शृङ्गार रस की ही एक शैली समझ रखा है। ठुमरी काव्य का अंग नहीं है, वह संगीत की ही एक भाव-प्रधान शैली है। १९वीं शती में प्रकाशित कृष्णानन्द व्यास के संगीत-राग-कल्पद्रुम में ठुमरी शीर्षक के अन्तर्गत कुछ भजन दिये हुए हैं। ठुमरी यदि केवल शृङ्गार रस की शैली होती, तो उसमें भजन का समावेश कैसे होजाता ? कुछ भजनों को ठुमरी शीर्षक में रखने का अर्थ यही है कि वे ठुमरी-अंग से गाये जाते रहे। कई वादक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ गतों को विशेषकर ललित, मर्मस्पर्शी, लोकप्रिय रागों यथा भैरवी, पीलू, खमाज, काफ़ी इत्यादि में ठुमरी-अंग से बजाते हैं। "ठुमरी-अंग" शब्द ही यह सिद्ध करता है कि ठुमरी संगीत की ही एक शैली है, काव्य की नहीं।

तो ठुमरी-अंग अथवा ठुमरी-शैली का क्या तात्पर्य है? इस पर भाव-पक्ष अथवा गुण और कला-पक्ष—इन दो दृष्टियों से विचार करना होगा। कला विशेषकर काव्य और संगीत के तीन मुख्य गुण हैं—ओज, प्रसाद और द्रुति। प्रसाद गुण तो एक प्रकार से सभी शैलियों में होना चाहिए। किन्तु ओज और द्रुति ऐसे गुण हैं, जो विशेष-विशेष शैलियों में ही होते हैं। जितने रस हैं उन सभी का अन्तर्भाव उक्त तीन गुणों में होजाता है। ठुमरी द्रुति गुण की शैली है। इस द्रुति गुण में शान्त, शृङ्गार, करुण और भक्ति का समावेश है। अतएव ठुमरी अंग से ये सभी व्यक्त किये जा सकते हैं। यह भ्रान्त धारणा है कि ठुमरी द्वारा केवल शृङ्गार व्यक्त होता है या होसकता है। हाँ, यह सच है कि ठुमरी के अधिक निबन्धन (बन्दिशें) शृङ्गार के ही मिलते हैं। उसका कारण यह है कि ठुमरी प्रायः नवाबों, सामन्तों, राजाओं के दरबार में गायी जाती रही और उनको शृङ्गार ही सबसे अधिक प्रिय था। इसलिए उसके निबन्धन प्रायः शृङ्गार के ही मिलते हैं। मुहम्मद करम इमाम ने, जो वाजिद अली शाह के काल में हुए थे, मदनुलमूसीकी में लिखा है कि उस समय ठुमरी में ऐसी बन्दिशें चलने लगी थीं, जो सर्वथा भ्रष्ट और अश्लील थीं और उन्होंने इस प्रकार की बन्दिशों की जी खोल कर निन्दा की है। किन्तु बन्दिशों की दृष्टि से ख्याल की दशा भी कुछ अच्छी नहीं रही। लगभग ७५ प्रतिशत ख्याल लंगर की ढिठाई, कर मरोड़ने और चूड़ियाँ फोड़ने, सास–ननद का झगड़ा, 'सास–ननद मोरी जनम की बैरिन' इत्यादि भावों से भरा पड़ा है। इसलिए केवल ठुमरी को ही क्षुद्र नहीं कह सकते। बोल की बन्दिश की दृष्टि से ख्याल कुछ कम क्षुद्र नहीं है। अख्तर पिया (वाजिद अली शाह) की मुद्रा की एक ठुमरी मिलती है, जिसमें उक्त प्रकार के भाव की गन्ध भी नहीं है—'सुध बिसर गई आज अपने गुनन की'। यह सच है कि ऐसी ठुमरियों की संख्या अत्यन्त अल्प है।

कला-पक्ष की दृष्टि से ठुमरी की निराली विशेषता है। रूपकालप्ति की भूरि मनोहर भंगियाँ, काकु का मर्मस्पर्शी प्रयोग, मुरकी, झटका, खटका, मीड, दर्द, पुकार, भाव के अनुकूल स्वरों का लगाव–इत्यादि इसकी कलापक्ष की विशेषताएँ हैं। अतएव ठुमरी-अंग संगीत की एक विशेष शैली है, जो सर्वथा romantic music या कैशिकी कही जा सकती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ लोगों ने यह प्रचार कर रखा है कि ठुमरी के जन्मदाता वाजिद अली शाह थे। यह सर्वथा कपोलकल्पित प्रचार है, एक भ्रान्त धारणा है। कैप्टेन विलर्ड बाँदा के नवाब की सेना के एक विशेष अधिकारी थे। वह एक बड़े संगीतज्ञ थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'Music of Hindustan' में ठुमरी गायकी की बड़ी प्रशंसा की है। कैप्टेन विलर्ड की उक्त पुस्तक का प्रथम प्रकाशन ईसवी शती १८३८ में हुआ था। पुस्तक के प्रकाशन के कई वर्ष पूर्व लगभग १८१८-२० में विलर्ड ने ठुमरी सुनी थी। उस समय भी उसे ठुमरी ही कहते थे। उसका कोई अन्य नाम नहीं था। वाजिद अली शाह सन् १८२२ की ३० जुलाई को पैदा हुए थे। जब कैप्टेन विलर्ड ने ठुमरी सुनी थी, उस समय वाजिद अली शाह दो-चार वर्ष के रहे होंगे। क्या जन्म लेते ही वह ठुमरी के भी जन्मदाता होगये? इससे बढ़ कर और बाजारू गप क्या होसकती है? वाजिद अली शाह ने ठुमरी को प्रोत्साहन अवश्य दिया। वह उसके जन्मदाता नहीं थे।

रूपक अथवा अभिनयात्मक संगीत मानव के स्वभाव में है। भिन्न-भिन्न काल में उसकी अभिव्यक्ति में, शैली में परिवर्तन तो थोड़ा-बहुत होता ही रहा। ठुमरी उसी प्रवृत्ति का देशी रूप रही। किसी एक व्यक्ति ने एक दिन प्रातः उठ कर ठुमरी बना दी हो-इसका कोई प्रमाण नहीं है, न ऐसी धारणा युक्तियुक्त है। कम से कम लगभग १६वीं शती से ठुमरी की गायकी चली आ रही है। इसके पूर्व इसका क्या रूप था-यह कहना कठिन है। धीरे-धीरे इसका विकास होता रहा। लगभग २०० वर्षों से इसका स्पष्ट रूप बहुत अल्प परिवर्तन के साथ इसी प्रकार का चला आया है, जैसा वह आज कल हमको सुनने के लिए मिलता है।

ठुमरी को स्वरलिपिबद्ध करना अत्यन्त कठिन है। श्री गंगाधर ने बड़े परिश्रम के साथ इन गीतों को स्वरलिपि में निबद्ध किया है। उनका यह बहुत सफल प्रयास है। अतः वह हमारे साधुवाद के पात्र हैं।

—जयदेव सिंह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	गीत	रचयिता	राग	पृष्ठ सं०
१	देखो बलिहारी तोरी कृष्ण मुरारी रे		खमाज	२
२	कान्ह मुरली वाले नन्द को छैल	सुघर पिया	,,	४
३	मैं तो पनियाँ भरन नहीं जाऊँ	कदर पिया	,,	६
४	बराजोरी जिन छुवो छैल बंगरी	कदर पिया	,,	८
५	समझ पिया मान मोरी	नसीर पिया	,,	१०
६	मोरा वस कीना बाट चलत जिया पिया	सनद पिया	,,	१२
७	हटो चलो मोरा छुओ न गात	कृष्ण कान्ह	,,	१५
८	घात करे नित नई साँवरो	,,	,,	१७
९	जाओ जी तुम तो सौतन के हो मीत कान्ह	,,	,,	१९
१०	मल दीना सखि साँवरिया अबीर मोहे	ललन पिया	,,	२१
११	बरस गई बरस गई घन गगन	,,	,,	२३
१२	बिन मोहनवा री कैसे कटेंगे दिन	,,	,,	२५
१३	सो नई नार नयो रंग ढंग छल बल	,,	,,	२८
१४	मोरा नेक नजर मन वस कीना रे	,,	,,	३०
१५	साँची कहो मोसे बतियाँ पिया	माधो पिया	,,	३२
१६	गोरी झलक दिखाये	नाथ पिया	,,	३४
१७	कहूँ मुरली मधुर धुन बाजी रे	श्याम पिया	,,	३७
१८	तोरी बंसी छिना लूँगी कान्हा रे	श्यामा	,,	४०
१९	डगर चलत कान्हा ने मोसे कीनी रार	मेहरबान	,,	४२
२०	कसकत मसकत मोसे चलत चाल	सुन्दरा	,,	४४
२१	बंशी धुन से बजावे		,,	४६
२२	चूनरिया दे दे मोरी श्याम		,,	४८
२३	सैंया से संदेसा मोरा कहियो जाय		,,	५०
२४	करत श्याम बरजोरी सखी री		,,	५२
२५	प्यारे तोसे ना बोलूँगी		,,	५५
२६	साँवरी सलोनी मुसक्यानी हो प्यारीं नार		,,	५८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम सं०	गीत	रचयिता	राग	पृष्ठ सं०
२७	बारी में ना जइयो रे		खमाज	६०
२८	कोयलिया कूक सुनावे सखि		,,	६२
२९	भरी गगरी मोरी ढुरकाइ श्याम		,,	६५
३०	तिरछी नैना कटारी		,,	६७
३१	नेक सुना जैयो तान मुरली वाले		,,	६९
३२	हे छबि दिखला जा बाँके साँवरिया		,,	७१
३३	बन्द बन्द पदारबिन्द गोविन्द		,,	७४-क
३४	ऐसो होरी को खिलैया	ललन पिया	,,	७५
३५	सुघर पिया प्यारी से नैना लगो रे	सुघर पिया	,,	७८
३६	सैंयाँ बिन नाहीं आवत चैन	हैदर	,,	८१
३७	लचक लचक चलत मोहन आवे		,,	८४
३८	कदर पिया नैया मोरी कैसे लागे पार	क़दर पिया	काफी	८७
३९	मैं वारी सैंयाँ और वारूँ तन, मन, धन	,,	,,	८९
४०	पिया झूम झूम मोहे निंदिया	,,	,,	९१
४१	तट पनियाँ कैसे जाऊँ री	अख़्तर पिया	,,	९३
४२	मृग लोचन मधु बतियाँ	सुल्तानी	,,	९५
४३	बतियाँ न बनाओ मोसे	ललन पिया	,,	९८
४४	श्याम कैसी मुरलिया बजाई		,,	१००
४५	हम तुमसे कीनी रार		,,	१०२
४६	साँवरिया तोरी बंसी ने मेरो मन बस कीनो.		,,	१०५
४७	जिन डारो रंग मानो गिरधारी		,,	१०७
४८	छाँड़ दे लँगरवा मुरक मोरी बाँही रे		,,	१०९
४९	जानी जानी तेरे मन की बात		,,	१११
५०	ऐसो होरी को खिलारी		,,	११३
५१	खेलत राम सिया संग होरी		,,	११५
५२	कैसी ये होरी खिलाई		,,	११८
५३	हमसे न बोलो पिराय मोरी अँखियाँ		,,	१२२
५४	बराजोरी करत मैं ना जाऊँ दैया		गारा	१२५
५५	मोरा सैंयाँ गारी दीनी लाखन में	माधो पिया	,,	१२७
५६	कन्हैया तेने बंशी बजाई आज		,,	१२९
५७	म्हारे पिया परदेश गईलवा		,,	१३१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम सं०	गीत	रचयिता	राग	पृष्ठ सं०
५८	तूने कहे रंग की पिचकारी मार दई		,,	१३३
५९	रंग भर गगरी		,,	१३६
६०	आँगन में मत सोवे री		झिंझोटी	१३९
६१	जसोदा के लाल ने मेरे भर पिचकारी दई		,,	१४२
६२	कन्हैया बैंयाँ मुरक गई मोरी रे		विहाग	१४७
६३	देखो सखी, कन्हैया रोके ठाढ़ो है गैल		,,	१५०
६४	कान्हा मोरी गगरिया फोरी रे		,,	१५२
६५	देखो री सखी री काहे मोरी बैंयाँ झझकोरी		,,	१५४
६६	मोहे छेड़त मोहन गिरधारी	बिन्दादीन	हमीर	१५६
६७	आज मन बस गई साँवरे की	सनद पिया	सिन्दूरा	१५८
६८	जाने बीर को पीर पराई	सनद पिया	बागेश्री	१६१
६९	छाइस तेरे री तन मन	ललन पिया	अड़ाना	१६३
७०	मोरी सुनो श्याम	बिन्दादीन	,,	१६६
७१	जाने दे मैंका सुनो सजनवां	बिन्दादीन	शहाना	१६९
७२	रात सैंयाँ बिन नींद न आवे री	प्रीतम पिया	मिश्र तिलक कामोद	१७१
७३	दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी	प्रेमदास	तिलक कामोद	१७३
७४	ऐसो ढीठ लंगर मोरी बैंयाँ मरोरी	नानक	तिलक कामोद	१७६
७५	छाँड़ो बैंयाँ मोरी घर जाने दे		तिलक कामोद	१८०
७६	चुभी गई जिया विच प्यारे छवि तिहारी	सनद पिया	तिलक कामोद	१८३
७७	दई पिया बिन कैसे रतियाँ भई भारी		देस	१८५
७८	हो श्याम मोरी बैंयाँ गहो ना !		देस	१८८
७९	घन गगन घन घुमड़ कीनो	ब्रजराजदास	देस मल्हार	१९०
८०	फुलवा बिनन चली एजी भला !		तिलंग	१९३
८१	राधे, जमुना के तीर		तिलंग	१९५
८२	आये मोहनवा मोरे भवनवा		कौशिया	१९६-क
८३	कान्हाँ मोरे द्वारे बँसिया बजाए		भैरवी	१९७
८४	कटत नही सजनी पिया बिन	मेहरबान	भैरवी	१९९
८५	गोरी दरवजवा ठाढ़ी रहूँ		भैरवी	२०२
८६	बाट चलत मोरी चुनरी रंग डारी रे	कुँवर कान्ह	,,	२०४
८७	गुजरी गागरं भरने चली		,,	२०७
८८	बाँसुरी बाज रही धुन मधुर		,,	२०९
८९	काहे रामा मोरी बंगरी मुरक गई		,,	२११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम सं०	गीत	रचयिता	राग	पृष्ठ सं०
९०	कैसे भरूँ मैं जल की गगरिया		आसा	२१३
९१	सूरत कृष्णा प्यारे दीं		आसा	२१७
९२	मेरी सुनो, मेरी सुनो राम	बिन्दादीन	सामन्त सारंग	२२०
९३	गये री माधो सैंया विदेश	माधो पिया	पीलू	२२३
९४	पपीहा पी की बोली न बोल		,,	२२५
९५	कदर प्यारे लागे तुम्मे नैन	कदर पिया	,,	२२७
९६	चालो हिंडन चालो, चालो महाराज!		,,	२२९
९७	कृष्णमुरारी, विनती करत कर हारी		भीम पलासी	२३२
९८	श्याम दृगन की चोट बुरी री	नारायण	धानी	२३५
९९	ऐसा तू मोरा सैंयाँ निपट अनारी भयो	इनायत	धानी	२३७
१००	कैसी वजाइ आज बाँसुरी		माँड	२३९
१०१	श्याम मोरी बैंयाँ न मरोर गिरधारी		गौरी	२४१
१०२	डगर चलत दीन्ही गारी		गौरी	२४४
१०३	देखी छवि साँवरिया की		यमन	२४६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	६	सा	सां
२०	१६–१७	सो	सो ०
२०	१६–१७	हो	हो ३
२०	१६–१७	का	का ×
३१	१०	नी	नी़
३६	३	न	नीं
३८	२२–२३	– – छपा नहीं है	– – ऽ ऽ
४५	६–७	ग– ‿ क ‿	ग– ‿ क ऽ ‿
४५	२३	नीध ‿ व ऽ ‿	नीध — ‿ व ऽ ‿
४७	४	स ब	सां ब
५१	४–५	रे छपा नही	रे सं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१	७–८	छपा नहीं जा	ग जा
५३	१०–११	सां स्पष्ट नहीं	सां ठि
७४-ख	१०	पध	पध
९०	९–१०	स ब	स ब ३
९२	१७–१८	पधनी सेऽऽ	पधनी सेऽऽ
९२	१७–१८	प धप ई रेऽ	प धप ई रेऽ
१०६	४	म	ग
१०६	२३	ग	ग
११२	२२–२३	ब नीचे हो गया है	ध नी लि प
११४	७–८	नीध रीऽ	नीध रीऽ
११७	१०	पिमा	पिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२६	४–५	ग रे छपा नहीं ऽ	ग रे मैं ऽ
१२६	१६–१७	सा ग ग ल प क झ	सा ग ग ग ल प क झ
१४६	९–१०	रे सा – घे ऽ	रे सा – घे ऽ ऽ
१५३	७	मो	मो २
१५३	१०	मो	मो २
१५३	१०	फ ऽ री	फो ऽ री
१५५	६–७	री स	सां गं री स
१५५	१३	चु रि याँ	चु रि याँ ३
१५९	७	नी ध प म स खि री मैं	नी ध प म स खि री मैं
१८७	१०	स मं –	मं मं –
१८७	१३	न सां रें –	नी सां रें –
१९८	१३	गरे (ग)	गरे (ग)
२१४	७–८	। सां ज ल	सां सां ज ल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१९	६	सांरें ग	सांरें गं
२२२	३	नी – सा नी	नी – सां नी
२२२	१२	नी सां रें सा	नी सां रें सां
२२६	९–१०	बो ऽऽ २	बो ऽऽ ३
२३३	१३–१४	सां सां सां म ड त ना	सां सां सां म ड र त ना
२४०	१५–१६	म धु र २	म धु र ०
२४५	११	नी ऩी ऩी ऩी	ऩी ऩी ऩी ऩी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठुमरी-संग्रह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

देखो बलिहारी तोरी
कृष्ण मुरारी रे ।

अन्तरा-

हमरे हरी ने ऐसी
बँसिया बजाई, सुध बिसराई,
मधुर धुन सुन परी
तोरी कृष्ण मुरारी रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

धनी पध –नी सां	नी धप गम ग	ग म प ध	सां नी सां –
देऽ खोऽ ऽव लि	हा रीऽ तोऽ री	कृ ऽ ष्ण मु	रा री रे ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग म ध नी	सां नी सां सां	प नी सां रें	सांनी सां नी धप
ह म रे ह	रि ने ऐ सी	बँ सि या ब	जा ऽ ऽ ई ऽऽ
३	×	२	०
ग म प धप	ग म ग –	सा म ग म	ग म प ध
सु ध बि सऽ	रा ऽ ई ऽ	म धु र धु	ऽ न सु न
३	×	२	०
सांनी रेंसां नी धप	ग म प ध	सां नी सां –	
पऽ रीऽ तो रीऽ	कृ ऽ ष्ण मु	रा री रे ऽ	
३	×	२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

कान्ह मुरली वाले नन्द को छैल
कान्ह मुरली वाले नन्द को छैल
बंसिया बजाये मन हर लीनो जाय

अन्तरा-

मोहन मुरली टेर सुना जा
सुघर पिया की अरज ले मान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

सांनी रेंसां नी ध	प पम गरे ग	ग म प म	ग – – ग
कॉंऽ ऽन्ह मु र	ली वाऽ ऽऽ ले	नं द को छै	ऽ ऽ ऽ ल
०	३	×	२
सांनी रेंसां नी ध	प पम गरे ग	ग म प मप	धप मग रेग ग
कॉंऽ ऽन्ह मु र	ली वाऽ ऽऽ ले	नं द को छैंऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ल
०	३	×	२
सा सा ग म	प प नी नी	सां रें नी सां	– नीनी धप ध
व सि या व	जा ये म न	ह र ली नो	ऽ जाऽ ऽऽ य
०	३	×	२

अन्तरा

म ग म प	प पध नी ध	नी – नी नी	नी – सां –
मो ह न मु	र लीऽ ऽ ऽ	टे ऽ र सु	ना ऽ जा ऽ
०	३	×	२
ग म ग म	प – नी –	प नी नी सां	– सांनी धप ध
सु घ र पि	या ऽ की ऽ	अ र ज ले	ऽ माऽ ऽऽ न
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

मै तो पनियाँ भरन नहीं जाऊँ आज
वो तो ठाड़ो है कदर मोरी गई रे लाज ।

अन्तरा–

कर जोरत हूँ पैयाँ परत हूँ
काहू की न माने सखि उनको राज ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

सा सा
मै तो

सा सा ग ग	ग मग मप ध	सांनी धनी प ग	प मग –ग म
प नि या भ	र नऽ ऽन हीं	जाऽ ऽऽ ऊँ आ	ऽ जऽ ऽवो तो
०	३	×	२
प नी नी नी	नी (सां) –नी धप	ध नी धप ग	प मग –ग सा
ठा डो है क	द र ऽमो रीऽ	ग ई रीऽ ला	ऽ जऽ ऽमैं तो
०	३	×	२

अन्तरा

ग म ध नी	सां नी सां –	प नी सां रें	सांनी सां- नी धप
क र जो ऽ	र त हूँ ऽ	पै ऽ याँ प	रऽ तऽ हूँ ऽऽ
०	३	×	२
म प म ग	ग म प ध	सांरें सांसां नी ध	प प– म ग
का हू की न	मा ते स खि	उऽ नऽ को रा	ऽ जऽ मैं तो
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

बराजोरी जिन छुवो छैल बंगरी
विनती करत गुजरी रैन सगरी ।

अन्तरा–

कदर पिया को जो मैं पाती
काहे को आती मैं तोरी नगरी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

मग	रेग	–म	प	ग	म	गरे	सा	–	पम	गरे	ग	म	म	प	–
वऽ	राऽ	ऽजो	री	जि	न	छुऽ	वो	ऽ	छैंऽ	ऽऽ	ल	वँ	ग	री	ऽ
२				०				३				×			
प	नी	ध	नी	प	ध	म	ध	प	पम	गरे	ग	म	म	प	–
वि	न	ती	क	र	त	गु	ज	री	रैंऽ	ऽऽ	न	स	ग	री	ऽ
२				०				३				×			

अन्तरा

गम	ग	म	प	–	पध	नी	–	नी	–	नी	–	नी	–	सां	–
कद	र	पि	या	ऽ	कोऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	मैं	ऽ	पा	ऽ	ती	ऽ
२				०				३				×			
नी	नी	सां	नीध	पध	प	–	–	ध	पम	गरे	ग	म	म	प	–
का	हे	को	आऽ	ऽऽ	ती	ऽ	ऽ	मैं	तोऽ	ऽऽ	रे	न	ग	री	ऽ
२				०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

समझ पिया मान मोरी
मोहे कल न परत अब तो
करत अरज गरज ।

अन्तरा–

नसीर पिया को बस नहिं गुइयाँ
काहे करत अब कौन जतन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

गरे	ग	म	ध	प	मग	रे	ग	म	–	प	–	ग	म	रे	ग
सऽ	म	ज	पि	या	माऽ	ऽ	ने	मो	ऽ	री	ऽ	मो	हे	क	ल
०				३				×				२			
रे	म	ग	रे	सा	ऩी	प़	ऩी	सा	रे	रे	ग	म	ध	म	प
न	प	र	त	अ	ब	तो	क	र	त	अ	र	ज	ग	र	ज
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	–	पध	नी	ध	नीनी	नी	नी	नी	–	सां	–
न	सी	र	पि	या	ऽ	कोऽ	ऽ	ऽ	बस	न	हीं	गुंइ	ऽ	या	ऽ
०				३				×				२			
–	–	नी	सां	नी	रें	सां	नि॒	ध	प	पध	नि॒	ध	प	म	ग
ऽ	ऽ	का	हे	ऽ	क	र	त	अ	ब	कोऽ	ऽ	न	ज	त	न
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

मोरा बस कीना बाट चलत जिया पिया
मोरा बस कीना बाट चलत जिया पिया
कैसे करूँ मोरी आली डगर चलत मन हर लीना
बाट चलत जिया पिया ।

अन्तरा-

ऐसो टोना कीनो मोरी सुध बिसराई
सनद पिया ने मन हर लीना
बाट चलत जिया पिया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी

म गम
मो राऽ

प नी नी सां	-नीसां रें सा नी॒	धप म म प	धप मप म गम
ब स की ना	ऽवाऽ ऽ ट च	लऽ त जि या	पिऽ याऽ मो राऽ
×	२	०	३
प नी नी सां	ऽनीसां रें सां नी॒	धप म म प	धप मप म ग
व स की ना	ऽवाऽ ऽ ट च	लऽ त जि या	पिऽ याऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
नी़ सा ग म	प प नी नी	प नी सां मं	मंगं सां नी नी
कैं से क रुँ	मो री आ ली	ड ग र च	लऽ त म न
×	२	०	३
प नी सां रें	पनीसां रें सां नी॒	धप ग म प	धप मप म गम
ह र ली ना	ऽवाऽ ऽ ट च	लऽ त जि या	पिऽ याऽ मो राऽ
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा सा ग म	प प नी नी	प प नी नी	सां – सां सां
ऐ सो टो ना	की नो मो री	सु ध वि स	रा ऽ ई ऽ
०	३	×	२
सां गं गं मं	मंगं सां नी नी	प नी सां रें	पनीसां रें सां नी
स न द पि	याऽ ने म न	ह र ली ना	ऽवाऽ ऽ ट च
०	३	×	२
धप ग म प	धप मप म गम		
लऽ त जि या	पिऽ याऽ मो राऽ		
०	३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७

राग खमाज–ताल एकताल

स्थायी–

हटो चलो मोरा छुओ न गात,
जावो जी जागे सगरी रात ।

अन्तरा–

बिथुरी अलक शिथिल बैन
मद भरे अलसाने नैन
कृष्ण कान्ह तोरे अधर अंजन
नाहक मोसे बनावत बात ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–ताल एकताल

स्थायी

रे	रे	ग	म	ध	प	ग	म	रे	सा	नि़	सा
ह	टो	च	लो	मो	रा	छु	वो	न	गा	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	
प	नी	नी	नी	सां	–	ध	नी॒	ध	प	–	प
जा	वो	जी	जा	गे	ऽ	स	ग	री	रा	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	नी॒	प	नी	नी	सां	–	सां
वि	थु	री	अ	ल	क	शि	थि	ल	वै	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
प	प	नी	नी	नी	सां	धनी	सां	नी॒	ध	प	प
म	द	भ	रे	अ	ल	साऽ	ऽ	ने	नै	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
नी॒	ध	प	म	ग	रे	रे	रे	म	म	प	प
कृ	ष्ण	का	न्ह	तो	रे	अ	ध	र	अं	ज	न
×		०		२		०		३		४	
प	नी	सां	रें	नी	सां	ध	नी॒	ध	प	–	प
ना	ह	क	मो	से	ब	ना	व	त	बा	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

घात करे नित नई साँवरो ।

अन्तरा-[१]

मैं जमुना जल भरन जात थी
रोकन लाग्यो मोरी गैल साँवरो

अन्तरा-[२]

कृष्ण कान्ह तुम कपटी भये हो
बैंया पकर करकाई चुरियाँ मोरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

नी ध प म	मग म प ध	नी सां – नी	ध नी पध नीसां
घा ऽ त क	रेऽ ऽ नि त	न ई ऽ साँ	ऽ व रोऽ ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा [१]

ग म ध नी	सां – सां सां	प नी सां रें	सांनी सां नी ध
मैं ऽ ज मु	ना ऽ ज ल	भ र न जा	ऽऽ त थी ऽ
०	३	×	२
म प म ग	ग म प ध	नी सां सां नी	ध नी पध नीसां
रो ऽ क न	ला ग्यो मो री	गै ऽ ल सां	ऽ व रोऽ ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा [२]

ग म ध नी	सां नी सां सां	प नी सां रें	सांनी सां नी ध
कृ ऽ ष्ण का	ऽ न्ह तु म	क प टी भ	येऽ ऽ हो ऽ
०	३	×	२
म प म गग	ग म प ध	नी सां सां नी	ध नी पध नीसां
बैं या प कर	क र का ई	चु रि याँ मो	ऽ ऽ रीऽ ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

जाओ जी तुम तो सौतन के हो मीत कान्ह
जान गई तोरी छल बतियाँ सारी कान्ह ॥

अन्तरा-

कपट की प्रीत छिपत न ललन पिया
अन्त उदित ह्वै जो भोर भान
तुम तो सौतन के हो मीत कान्ह ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

म
जा

ग रे सा ऩी	सा ग गरे ग	म प – म	ग – – म
वो जी तु म्तो २	सो त ऽऽ न्के ०	हो मी ऽ त ३	का ऽ न्ह जा ×
ग रे सा ऩी	सा ग गरे ग	म प – म	प सां नी रें
वो जी तु म्तो २	सो त ऽऽ न्के ०	हो मी ऽ त ३	जा ऽ न ग ×
सां – प प	ध रें सां नी॒	ध पम धप म	ग – – म
ई ऽ तो री २	छ ल व ति ०	यां साऽ ऽऽ री ३	का ऽ न्ह जा ×
ग रे सा ऩी	सा ग गरे ग	म प – म	ग – –
वो जी तु म्तो २	सो त ऽऽ न्के	हो मी ऽ त	का ऽ न्ह

अन्तरा

ग म ग म	प – नी नी	नी नी नी नी	सां नी सां सां
क प ट की ०	प्री ऽ त छि ३	प त न ल ×	ल न पि या २
प नी सां रें	सां नी॒ ध प	पध नी॒ ध प	म गरे सा ऩी
अं ऽ त उ ०	दि त ह्वै जो ३	भोऽ ऽ र भा ×	ऽ नऽ तु म्तो २
सा ग गरे ग	म प – म	ग – –	
सो त ऽऽ न्के ०	हो मी ऽ त ३	का ऽ न्ह ×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

मल दीना सखि सँवरिया अबीर मोहे
ऐसो डीठ नोखो छैल मानत ना मोरी कही
मसक दई चूरियाँ बेग चीर रँग दीना

अन्तरा–

अठिलाये उघार उघार घूँघट पट
मुख चूमे ललन पिया निज बस कीना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

प नी पनी सांरें	सां नी ध पध	ग म प ध	ग म ग ग
म ल दीऽ ऽऽ	ना स खि सँऽ	व रि या अ	वी र मो हे
×	२	०	३
सा सा ग म	प ध म प	ग म प ध	ग म ग ग
ऐ सो ढी ठ	नो खो छै ल	मा न त ना	मो री क ही
×	२	०	३
प सां नी सां	नी सां नी ध	प म ग म	प नी नी सां
म स क द	ई चू रि याँ	वे ग ची र	रं ग दी ना
×	२	०	३

अन्तरा

म ग ग म	प नी – नीनी	सां – -सां नी	ध प म ग
अ ठि ला ये	उ घा ऽ रउ	घा ऽ ऽर घूँ	घ ट प ट
×	२	०	३
म ग ग म	प नी सां रें	नी सां नी ध	प मं ग म
मु ख चू मे	ल ल न पि	या ऽ नि ज	व स की ना
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

बरस गई बरस गई घन गगन
आलि आज कहा कहूँ जिया पिया बिन
तरस गई तरस गई भाग जाग अपने सुहाग
बरस गई बरस गई घन गगन ।

अन्तरा-

हूँ तो विकल उत्कल प्रेम प्रीत
रसिक करत ललन पिया सौत
भाग पग पराग सुख सो पाग ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

सा	सा	ग	म	प	–	सा	सा	ग	म	प	म	ग	म	ध	प
व	र	स	ग	ई	ऽ	व	र	स	ग	ई	घ	न	ग	ग	न
×				२				०				३			
ध	–	म	ग	–	ग	ग	म	ग	ग	ग	म	ग	म	ग	ग
आ	ऽ	लि	आ	ऽ	ज	क	हा	क	हूँ	जि	या	पि	या	वि	न
×				२				०				३			
म	प	म	ग	–	सा	सा	सा	ग	म	प	–	सा	सा	ग	म
र	ह्यो	न	जा	ऽ	य	त	र	स	ग	ई	ऽ	त	र	स	ग
×				२				०				३			
प	–	नी	–	नी	सां	नी	सां	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	म
ई	ऽ	भा	ऽ	ग	जा	ऽ	ग	अ	प	ने	ऽ	सु	हा	ऽ	ग
×				२				०				३			
प	ध	प	सां	सां	–	प	ध	प	सां	सां	म	ग	म	ध	प
व	र	स	ग	ई	ऽ	व	र	स	ग	ई	घ	न	ग	ग	न
×				२				०				३			

अन्तरा

		म	ग	म	प	प	प	नी	नी	सां	सां	प	नी	सां	रें
ऽ	ऽ	हूँ	ऽ	तो	वि	क	ल	उ	त	क	ल	प्रे	ऽ	म	प्री
×				२				०				३			
नी	सां	नी	ध	प	म	ग	ग	सा	सा	ग	म	प	–	नी	–
ऽ	त	र	सि	क	क	र	त	ल	ल	न	पि	या	ऽ	सौ	ऽ
×				२				०				३			
नी	सां	नी	सां	गं	गं	सां	नी	सां	सां	नी	ध	प	म	ग	ग
त	भा	ऽ	ग	प	ग	प	रा	ऽ	ग	सु	ख	सो	पा	ऽ	ग
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

बिन मोहनवा री कैसे कटेंगे दिन
बिन मोहनवा री कैसे कटेंगे
चलो गोकुल तज माधोपुर माधो मिलन
अस यतन कर सजनी री कोऊ यतन दिन ।

अन्तरा–

हरि बलदोऊ दृग के तारे भये
ओट हमारे, विरहा मारे डारे हाँ रे
बैरी अक्रूर प्रकटो आन ललन जीवन प्राण
कान्ह छिन में न्यारे किये, बैरिन दिन बिन मोहनवा री ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanași

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी

सा	सा	ग	म	प	ध	म	प	सां	–	<u>नी</u>	ध	प	ध	म	ग
वि	न	मो	ह	न	वा	ऽ	री	कै	ऽ	से	क	टैं	गे	दि	न
०				३				×				२			
सा	सा	ग	म	प	ध	म	प	सां	–	<u>नी</u>	ध	प	ध	म	ग
वि	न	मो	ह	न	वा	ऽ	री	कै	ऽ	से	क	टैं	गे	च	लो
०				३				×				२			
म	<u>नी</u>	ध	<u>नी</u>	ध	<u>नी</u>	प	ध	नी	सां	नी	सां	<u>नी</u>	ध	प	म
गो	कु	ल	त	ज	मा	धो	पु	र	मा	धो	मि	ल	न	अ	स
०				३				×				२			
ग	म	प	ध	म	ग	ग	म	प	ध	प	सां	<u>नी</u>	ध	प	म
य	त	न	क	र	स	ज	नी	री	को	ऊ	य	त	न	दि	न
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म	ग म प नी	नी नी नी सा	नी सां नी ध
ऽ ऽ ह रि	व ल दो ऊ	दृ ग के ता	ऽ रे भ ये
×	२	०	३
ग म प ध	म ग ग म	प ग – म	ग सा – सा
ओ ऽ ट ह	मा रे वि र	हा मा ऽ रे	ऽ डा ऽ रे
×	२	०	३
ऩी सा ग म	प ध म म	ग म प म	ग ग ग म
हाँ रे वै री	अ क्रू ऽ र	प्र क टो आ	ऽ न ल ल
×	२	०	३
प नी नी नी	नी – नी सां	नी सां नी ध	प प – ध
न जी व न	प्रा ऽ ण का	ऽ न्ह छि न	में न्या ऽ रे
×	२	०	३
प ध प सां	नी ध प म	ग सा ग म	प ध म प
ऽ कि ये वै	रि न दि न	बि न मो ह	न वा ऽ री
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

सो नई नार नयो रंग ढंग छल बल
वो देखो आली आयी रँगीली रसीली छवि ।

अन्तरा–

नैनन की चलन फेरन चितवन चित
चोर मन हरन हेरन निराली ऐ आली !
ललन पिया प्यारी प्यारी छवि पै वारी
वारी मुख मयंक दुति मुखड़ा अजब सो नई नार ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

प	ध	प	सां	–	नी	ध	पध	ग	म	ग	सा	ग	म	प	ध
सो	न	ई	ना	ऽ	र	न	योऽ	रं	ग	ढं	ग	छ	ल	ब	ल
×				२				०				३			
म	नी	ध	नी	ध	नी	प	ध	नी	सां	नी	सां	नी	सां	नी	ध
वो	दे	ऽ	खो	आ	ली	आ	ई	रं	गी	ली	र	सी	ली	छ	बि
×				२				०				३			

अन्तरा

ग	म	नी	ध	सां	नी	सां	सां	ध	नी	सां	रें	सांनी	सां	नी	ध
नै	न	न	की	च	ल	न	फे	र	न	चि	त	वऽ	न	चि	त
३				×				२				०			
ग	म	प	ध	ग	म	ग	ग	ग	म	प	ध	नी	ध	प	ध
चो	ऽ	र	म	न	ह	र	न	हे	र	न	नि	रा	ऽ	ली	ऽ
३				×				२				०			
ध	म	ग	ग	सा	सा	ग	म	प	–	नी	नी	सां	सां	नी	नी
ए	आ	ऽ	ली	ल	ल	न	पि	या	ऽ	प्या	री	प्या	री	छ	बि
३				×				२				०			
सां	नी	सां	सां	पनी	सांरें	नी	सां	नी	सां	नी	धनी	प	ध	नी	सां
पे	वा	ऽ	री	वाऽ	रीऽ	मु	ख	म	यं	ऽ	कऽ	दु	ति	मु	ख
३				×				२				०			
नी	सां	नी	ध	प	ध	प	सां	–	नी	ध	पध	ग	म	ग	सा
डा	अ	ज	ब	सो	न	ई	ना	ऽ	र	न	योऽ	रं	ग	ढं	ग
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

मोरा नेक नजर मन बस कीना रे
हाँ साँवरी सूरत मतवारी नैन
जादू टोनवा बसीकरन मोहनी सैन ।

अन्तरा–

श्याम गात दुति दरसत कमल दृग कजरा दीनो रे
हाँ नन्द के ललन पिया वारी तन मन
मुख सो वचन बोलत रँग - भीना रे हाँ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–ताल त्रिताल

स्थायी

ध	प	–	ध	मप	सां	नी	ध	प	म	ग	सा	ग	म	प	–
मो	रा	ऽ	ने	ऽक	न	ज	र	म	न	व	स	की	ना	रे	ऽ
×				२				०				३			
ग	–	ग	म	ग	म	ग	ग	ग	म	प	–	म	ग	सा	सा
हां	ऽ	साँ	व	री	सू	र	त	म	त	वा	ऽ	रे	नै	ऽ	न
×				२				०				३			
नी	सा	ग	म	प	नी	नी	नी	सां	सां	नी	सां	नी	ध	प	प
जा	दू	टो	न	वा	व	सी	क	र	न	मो	ह	नी	सै	ऽ	न
×				२				०				३			

अन्तरा

		म	ग	ग	म	प	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	प	नी
ऽ	ऽ	श्या	ऽ	म	गा	ऽ	त	द्रु	ति	द	र	स	त	क	म
×				२				०				३			
सां	रें	नी	सां	नी	ध	प	–	पध	–	म	ग	गम	पध	म	ग
ल	दृ	ग	क	ज	रा	ऽ	ऽ	दीऽ	ऽ	नो	ऽ	रेऽ	ऽऽ	हाँ	ऽ
×				२				०				३			
सा	सा	ग	म	प	प	नी	नी	गं	गं	नी	नी	सां	नी	सां	सां
नं	द	के	ल	ल	न	पि	या	वा	री	त	न	म	न	मु	ख
×				२				०				३			
पनी	सांरें	सांनी	सां	नी	ध	प	धप	ध	म	गम	पध	ग	म	ग	–
सोऽ	वऽ	चऽ	न	बो	ल	त	रँऽ	ऽ	ग	भीऽ	ऽऽ	ना	रे	हाँ	ऽ
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५

राग खमाज—ताल दीपचन्दी

स्थायी—

साँची कहो मोसे बतियाँ पिया
कहाँ गुजारी सारी रतियाँ पिया।

अन्तरा—

माधो पिया तोरी विनती करत हूँ
अब ना छिपावो मोसे बतियाँ पिया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–दीपचन्दी

स्थायी

			ग
मप गग –म	मग रेग साग मग	पप – प	धप मग गमपध नीसां – –
साँऽ ऽची ऽक	होऽ ऽऽ ऽमो मेऽ	बति ऽ याँ	ऽपि याऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ
०	३	×	२
	नी		
नीनी –नी नीसां	– नीध धनीसां सां	पसां नीसां –,धसां	नीध,प धप मग रेग
कहाँ ऽगु जारी	ऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽ	सारी ऽऽ ऽ,रति	याँ ऽ,ऽ ऽपि याऽ ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

गम गमपध नीसां,नी	सां –,नीध धनीसां सां	पनी – सांनी	–सां धसां नीध प
माऽ धोऽऽऽ ऽऽ,पि	याऽ ऽ,ऽऽ तोऽऽ री	विन ऽ तीऽ	ऽक रत हूँऽ ऽ
०	३	×	२
गग –ग ––	–म पध पध सां	धसां नीध पध,प	मप – मग रेग
अब ऽना ऽऽ	ऽछि पावो ऽमो से	बति याँऽ ऽऽ,पि	याऽ ऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६

राग खमाज–धीमा त्रिताल

स्थायी–

गोरी झलक दिखावे, ऐसी साँवरी सलोनी ॥

अन्तरा–[१]

बार बार मोरे जिया को लुभावे
ऐसी साँवरी सलोनी ॥

अन्तरा–[२]

बाँकी भौंहें नैना रसीले
अरे नाथ पिया मोरे जिया को लुभावे
ऐसी साँवरी सलोनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज—धीमा त्रिताल

स्थायी

ग म
गो री

प प प —, प ध	गप मग, मगरेग ग रे ग ग म प
झ ल क ऽ, दि ऽ	खाऽ वेऽ, ऽऽऽऽ ऐऽऽ सी ऽ ऽ
×	२

प ग प प म ग रे ग ——, सा	सारे सारेगम, रे ग —— गम
साँऽ ऽव री ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, स	लोऽ नीऽऽऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ गो री
०	३

अन्तरा (१)

ग म प ध नी सां —सां सां—सां नी धप—प ध प,—— गप, गप
वा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र ऽ वा ऽ ऽ ऽ ऽ र मोरे, ऽऽ जिया, कोऽ
×

धसां नी ध नी धप— ग प म ग म ग रे ग ग म प
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ लु ऽ ऽ भा ऽ वे ऽ ऽ ऐ ऽ ऽ सी ऽ ऽ
२

पग प प मग रेग ——, सा	सारे सा रे गमरे ग —— गम
साँऽ ऽव रीऽऽऽ ऽ ऽ, स	लोऽ नी ऽऽऽऽ ऽ ऽऽ गोरी
०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (२)

ग म ग	म प –	पधनी	– – प	नी नी सां नीं ध	सां– –	नी नी नी	
वाँ ऽ की	ऽ भौं ऽ	हें ऽ ऽ	ऽ ऽ नै	ना र सी	ले ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ अरे
०				३			
नीनीनी	धनीसां–सांनीधप	धप –	गप,गप	धसांनीधनीधप–	गपमगप	गरेग	ग म प
नाथपि	या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	मोरेऽ	जिया,कोऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ लु ऽ ऽ	भाऽव्ेऽऽ	ऐऽ	सी ऽ ऽ
×				२			
प ग	प प	म ग रे ग	– –, सा	सारे	सारेगमरे	ग– –	गम
साँऽ	ऽ व	री ऽ ऽ ऽ	– ऽ ऽ, स	लोऽ	नी ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	गोरी
०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१७

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी :–

कहूँ मुरली मधुर धुन बाजी रे श्याम
कहूँ मुरली मधुर धुन बाजी रे
मधुबन कुंजन में देखो मोरी आली
ना माने बिनती हूँ तो सगरी जतन कर हारी ॥

अन्तरा :–

सप्त सुरन मन मोह लियो है
व्याकुल भई धुन सुन के नार
एक लाख जतन कर बँसिया बजावे
श्याम पिया तोपे वारी वारी वारी ॥ कहूँ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी

धसां
क हूँ

नी ध प मप	(रे) मग ग -सा रे	म ग म -	प धप -ध सां
मु र ली मऽ	धुऽ र ऽधु न	वा जी रे ऽ	श्या ऽम ऽक हूँ
	३	×	२
नी ध प मप	(रे) मग ग -सा रे	म ग म -	नी नी सां सां
मु र ली मऽ	धुऽ र ऽधु न	वा जी रे ऽ	म धु व न
०	३	×	२
ध नी ध प	ग म -प धप	ग म ग -	सा म ग म
कुं ज न में	दे खो ऽमो रीऽ	आ ऽ ली ऽ	ना मा ने वि
०	३	×	२
प प नी नी	-प नी सां रें	सांनी सां- -ध नी	धप ध -नी सां
न ती हूँ तो	ऽस ग री ज	तऽ नऽ ऽक र	हाऽ री ऽक हूँ
०	३	×	२

अन्तरा

ग म ग म	नी ध ध धनी	सां सां नीध प-	प - प प
स ऽ प्त सु	र न म नऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	मो ऽ ह लि
×	२	०	३
प -पध सांरें	गं - - -	गं - सां सां	रें गं सां सां
यो ऽ हैऽ ऽऽ	ऽ ऽ	व्या ऽ कु ल	भ ई धु न
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	रें	(रें) गं–	गं	–	सां	सां	सां	नीसां	रें	नी नी	नी	नीध	पध	पम	मग
सु	न	केऽ	ना	ऽ	र	ए	क	लऽ	ऽ	ऽख	ज	तऽ	नऽ	ऽक	रऽ
×				२				०				३			
रे	रे	म	म	प	–	प	–	मप	–	नी	नी	नी	–	नी	नी
वँ	सि	या	ब	जा	ऽ	वे	ऽ	श्याऽ	ऽ	म	पि	या	ऽ	तो	पे
×				२				०				३			
नी	सां	नी	सां	नीध	पध	पध	सां	नी	ध	प	मप	मग	(रे) ग–	–सा	रे
वा	री	वा	री	वाऽ	रीऽ	ऽव	हूँ	सु	र	ली	मऽ	घुऽ	रऽ	ऽघु	न
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१८

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी–

तोरी बंसी छिना लूँगी कान्हां रे ।

अन्तरा–

या बँसिया में मोरा प्राण बसत है
श्यामा फिरत दिवाना ।। तोरी बंसी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

		रें	
पम (प) – ग	म प – ध	नी – सां –	नी नीध प ध
बंऽ सी ऽ छि	ना लूं ऽ गी	काँ ऽ न्हां ऽ	रे ऽऽ तो री
०	३	×	२

(पहला प्रकार)

अन्तरा

गम – ग म	प प नी नी	– प नी नी	सां सां सां –
याऽ ऽ व सि	या मे मो रा	ऽ प्रा ण ब	स त है ऽ
०	३	×	२
प – नी –	नी सां रें रें	(नी) – – –ध	प – प ध
श्या ऽ मा ऽ	फि र त दि	वा ऽ ऽ ऽऽ	ना ऽ तो री
०	३	×	२

(दूसरा प्रकार)

		रें	
(म) म ध नी	सां सां सां सां	ध नी सां सां	ध ध– प –
या ऽ ब सि	या में मो रा	प्रा ऽ णऽ ब	स तऽ है ऽ
०	३	×	२
प – नी –	नी सां रें रें	(नी) – – –ध	प – प ध
श्या ऽ मा ऽ	फि र त दि	वा ऽ ऽ ऽऽ	ना ऽ तो री
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१९

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

डगर चलत कान्हाँ नें मोसे कीनी रार
डगर चलत कान्हाँ नें मोसे कीनी रार
चुरियाँ करक गईं सुन गँवार ॥ डगर ॥

अन्तरा–

मेहेरबान कैहना मानत नाहीं
जो चित आवे सो मन ठानी
कमर लचक गई नाच वारे नाच वारे
गागर सिर मोरे भार ॥ डगर चलत ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

रे ग
ऽ ग

रे	म	ग	रे	सा	नी़	सा	ग	म	प	–	म	ग	–ग	रे	ग
र	च	ल	त	का	न्हाँ	नें	मो	से	की	ऽ	नी	रा	ऽर	ड	ग
२				०				३				×			
रे	म	ग	रे	सा	नी़	सा	ग	म	प	–	म	ग	–	–	–
र	च	ल	त	का	न्हाँ	नें	मो	से	की	ऽ	नी	रा		ऽ	र
२				०				३				×			
प	नी	सां	रें	सां	नी॒	ध	प	–	ग	प	म	ग	–ग	रे	ग
चु	रि	याँ	क	र	क	ग	ई	ऽ	सु	न	गँ	वा	ऽर	ड	ग
२				०				३				×			

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	प	नी	नी	नी	–	नी	नी	नी	–	सां	–
मे	हे	र	वा	ऽ	न	कँह	ना	मा	ऽ	न	त	ना	ऽ	हीं	ऽ
०				३				×				२			
प	–	नी	नी	नी	–	नी	–	धनी	सां	नी	सां	ध	नी	प	–
जो	ऽ	चि	त	आ	ऽ	वे	ऽ	सोऽ	ऽ	म	न	ठा	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	ग	म	प	प	नी	नी	नी	सां	नी	सां	नी॒	ध	प	प
क	म	र	ल	च	क	ग	ई	ना	च	वा	रे	ना	च	वा	रे
०				३				×				२			
ग	ग	ग	ग	म	प	–	म	ग	–ग	रे	ग	रे	म	ग	रे
गा	ग	र	सि	र	मो	ऽ	रे	भा	ऽर	ड	ग	र	च	ल	त
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२०

राग खमाज—त्रिताल

स्थायी—

ए कसकत मसकत वो तो चलत चाल
कसकत मसकत वो तो चलत चाल
वाकी भोली भोली सुरतियाँ घूँघर वाले बाल।

अन्तरा—

साँवरी सुरतियाँ वाकी नैना रसीले
सुंदरा कहत गोरी जोबना सँभाल ॥ कसकत ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

पप पध
एक सऽ

ग– मग मरे रेग	सा– रे– ऩीसा सा-	प प पध ग	म ग– –प पध
कऽ तऽ ऽम सऽ	कऽ तऽ ऽवो तोऽ	च ल तऽ चा	ऽ लऽ ऽक सऽ
०	३	×	२
ग– मग मरे रेग	सा– रे– ऩीसा सा-	प प पध ग	म ग– गम गम
कऽ तऽ ऽम सऽ	कऽ तऽ ऽवो तोऽ	च ल तऽ चा	ऽ लऽ ऽवा की
०	३	×	२
प प प प	पध पधनीध पम ग	म ध –ध नीसां	
भो ली भो ली	सुऽ रऽऽऽ ऽऽतियाँ	घूँ घ ऽर वाले	
०	३	×	
सांसांनीध पम,गग	मप पध	ग– मग मरे रेग	सा– रे– ऩीसा सा-
बाऽऽऽ ऽऽ,ऽल	ऽक सऽ	कऽ तऽ ऽम सऽ	कऽ तऽ ऽवो तोऽ
२		०	३

अन्तरा

			ध नी
गम गम प प	पध पधनीसां नी नीं	प नी –नी नी	सां नी सां –
साँव रीसु र ति	याँऽ ऽऽऽऽ वा की	नै ना ऽर सी	ले ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
,नीनीनीनीनीधनीसां	सांनी धप –ध प	धसां नीध पप –प	मग -,-ग मप पध
ऽ,सुंदराक हतऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽगो री	जोऽ बऽ ऽना ऽस	भाऽ ऽ,ऽल ऽक सऽ
०	३	×	२
ग– मग मरे रेग	सा–रे– ऩीसा सा–		
कऽ तऽ ऽम सऽ	कऽ तऽ ऽवो तोऽ		
०	३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१

राग खमाज-एकताल

स्थायी-

बंशी धुन से बजावे
गावत श्री वृन्दावन
उमड़ घुमड़ रहो सघन
गरजत बादल असमान ।

अन्तरा-

रहस रहस गावत गोपी
जनु दामिनी दमकत
नैंना रतनारे पर
भौंहें सोहे धनुष बान ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–एकताल

स्थायी

नी	–	सां	–	सां	नी	सां	नी	स	ध	पध	प
बं		शी	ऽ	धु	न	से	ऽ	ब	जा	ऽऽ	वे
×		०		२		०		३		४	
ग	म	प	ध	पध	नी	ध	प	ग	म	म	ग
गा	ऽ	व	त	श्रीऽ	ऽ	वृ	ऽ	न्दा	ऽ	व	न
×		०		२		०		३		४	
सा	म	ग	म	प	ध	नी	सां	–	नी	सां	सां
उ	म	ड़	घु	म	ड़	र	हो	ऽ	स	घ	न
×		०		२		०		३		४	
–	रें	गं	रें	सां	–	नी	सां	रें	नी	धप	ध
ग	र	ज	त	बा	ऽ	द	ल	अस्	मा	ऽऽ	न
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म	ग	म	नी	ध	नी	सां	–	सां	सां	रें	सांनी
र	ह	स	र	ह	स	गा	ऽ	व	त	गो	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	–	नी	सां	रें	गं	रें	सां	सांनी	सां	नीं	ध
पी	ऽ	ज	नु	दा	ऽ	मि	नि	दऽ	म	क	त
×		०		२		०		३		४	
म	–	ग	म	प	ध	नी	–	सां	नी	सां	सां
नै	ऽ	ना	ऽ	र	त	ना	ऽ	रे	ऽ	प	र
×		०		२		०		३		४	
रें	गं	रें	सां	नी	सां	नी	सां	रें	नी	धप	ध
भौं	ऽ	हें	सो	ऽ	हे	ध	नु	ष	बा	ऽऽ	न
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

चूनरिया दे दे मोरी श्याम
चूनरिया दे दे मोरी
बार बार कर जोरत तुमसों
तन मन मोरा काँपन लागो देखो, मुरारि !

अन्तरा–

आवत देखत सब जन हमको
जाय सास घर कहे सब उनको
हाय दैया अब कैसे करूँ री !!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज—त्रिताल

स्थायी

सां	नी	ध	प	–	गम	गरे	ग	म	–	प	–	–	–	प	प
चू	न	रि	या	ऽ	देऽ	ऽऽ	दे	मो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	श्या	ऽम
०				३				×				२			
सां	नी	ध	प	–	गम	गरे	ग	म	–	प	–	–	–	–	–
चू	न	रि	या	ऽ	देऽ	ऽऽ	दे	मो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
									म				रे		
ग	–	ग	ग	-	म	गरे	ग	गम	पध	ग	म	ग	ग	सा	–
वा	ऽ	र	बा	ऽ	र	कऽ	र	जोऽ	ऽऽ	र	त	तु	म	सों	ऽ
०				३				×				२			
गग	गग	म	प	नी	नीनी	सां	सां	नी	सां	नी	रें	सां	नी	ध	प
तन	मन	मो	रा	काँ	पन	ला	गो	दे	खो	ऽ	मु	रा	ऽ	रि	ऽ
				३				×				२			

अन्तरा

ग	म	ग	म	प	–	नी	नी	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	–
आ	ऽ	व	त	दे	ऽ	ख	त	स	ब	ज	न	ह	म	को	ऽ
०				३				×				२			
नी	–	नी	नी	–	सां	ध	नी	सां	रें	नी	सां	ध	नी	प	–
जा	ऽ	य	सा	ऽ	स	ध	र	क	हे	स	व	उ	न	को	ऽ
०				३				×				३			
म	–	ग	म	प	–	नी	नी	नी	सां	नी	–रें	सां	नी	ध	प
हा	ऽ	ऽय	दै	या	ऽ	अ	ब	कै	से	ऽ	ऽक	हँ	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२३

राग मिश्र खमाज—त्रिताल

स्थायी—

सैंया से संदेसा मोरा कहियो जाय
सैंया से संदेसा मोरा कहियो जाय
कागा रे जा रे जा रे सैंया से संदेसा मोरा कहियो जाय।

अन्तरा—

याद आवत उनकी बतियाँ
कल न परत जिया जा रे पिया से संदेसा मोरा
कहियो जाय ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मिश्र खमाज–त्रिताल

स्थायी

सा	सा रे – रे	रे ग – ग	म प प म
ऽ ऽ ऽ सैं ×	या से ऽ सं २	दे सा ऽ मो ०	रा क हि यो ३
– ग नी़	सा रे – रे	रे ग – ग	म (प) प म
जा ऽ य सैं ×	या से ऽ सं २	दे सा ऽ मो ०	रा क हि यो ३
ग – – –	– ग प ध	म – म ग	रे ग सा रे
जा ऽ ऽ ऽ ×	ऽ य का ऽ २	गा ऽ ऽ ऽ ०	रे ऽ जा रे ३
सा सानी़ सा – नी़	सा रे – रे	रे ग – ग	म (प) प म
जाऽ रे ऽ सैं ×	या से ऽ सं २	दे सा ऽ मो ०	रा क हि यो ३

अन्तरा

ग म ग म	प प नी नी	नी – सां नी	सां – – –
या ऽ द आ ०	व त उ न ३	की ऽ ब ति ×	याँ ऽ ऽ ऽ २
प नी सां रें	सां नी ध प	म ग रे नी़	सा रे – रे
क ल न प ०	र त जि या ३	जा रे ऽ पि ×	या से ऽ सैं २
रे ग – ग	म प प म		
दे सा ऽ मो ०	रा क हि यो ३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२४

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

करत श्याम बरजोरी सखीरी मोरी !
चूनर फारी, पकर के बैंया मरोरी !
डगर चलत मोसे करत ठिठोली ;
माला मोहन की तोरी रे देखो !

अन्तरा–

जात रही मैं दधि बेंचन को,
ढीठ लँगर ना माने दधि की मटकी फोरी
विनती करत वासो अब तो मैं हारी रे देखो ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

नी	ध	प	म	ग	म	गरे	ग	ग	म	प	सां	नी	धप	गम	ग
क	र	त	श्या	ऽ	म	वऽ	र	जो	ऽ	री	स	खी	रीऽ	मोऽ	री
०				३				×				२			
गम	पध	ग	म	ग	–	सा	–	ग	ग	सा	सा	ग	म	प	म
चूऽ	ऽऽ	न	र	फा	ऽ	री	ऽ	प	क	र	के	बै	ऽ	याँ	म
०				३				×				२			
ग	–	सा	–	नी̣	सा	ग	म	प	ध	नी	सां	नी	सां	नी	सां
रो	ऽ	री	ऽ	ड	ग	र	च	ल	त	मो	से	क	र	त	ठि
०				३				×				२			
ध	नीध	प	ध	नी	सां	नी	सां	–	ग	–	म	नीध	पध	नी	सां
ठो	लीऽ	मा	ला	मो	ह	न	की	ऽ	तो	ऽ	री	रेऽ	ऽऽ	दे	खो
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ध	नी	सां	–	सां	–	नी	नी	सां	–	सांनी	रेसां	नी	धप
जा	ऽ	त	र	ही	ऽ	मैं	ऽ	द	धि	वें	ऽ	चऽ	नऽ	को	ऽऽ
३				×				२				०			
ग	म	ग	म	प	प	नी	धप	ग	म	ग	–	–	–	–	–
ढी	ऽ	ठ	लँ	ग	र	ना	ठऽ	मा	ऽ	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३				×				२				०			
नी	सा	ग	म	प	ध	नी	सां	नी	सां	नी	सां	ध	नीध	प	ध
द	ध	की	म	ट	की	फो	री	बि	न	ती	क	र	तऽ	वा	सों
३				×				२				०			
नी	सां	नी	सां	–	ग	–	म	नीध	नीप	पध	नीसां	नी	ध	प	
अ	ब	तो	मैं	ऽ	हा	ऽ	री	रेऽ	ऽऽ	देऽ	खोऽ	क	र	त	
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२५

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी:–

प्यारे तोसे ना बोलूंगी;
प्यारे तोसे ना बोलूंगी;
प्यारे तोसे वंशीवाले ढीठ लँगरवा प्यारे ॥

अन्तरा :–(१)

हूँ जमुना जल भरन जात थी
रस की गगरी मोरी फोरी ॥ प्यारे तोसे ॥

अन्तरा :–(२)

वृन्दावन की कुंज गलिन में
रोकत गैल मोरी सारी ॥ प्यारे तोसे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

प	ग	–	म	प	–	–	–	प	सां	ध	नी	(मे)प	प	–	ध
रे	तो	ऽ	से	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	लूं	गी	ऽ	प्या
३				×				२				०			
प	ग	–	म	प	–	–	–	प	सां	ध	नी	(मे)प	प	–	ध
रे	तो	ऽ	से	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	लूं	गी	ऽ	प्या
३				×				२				०			
प	ग	–	म	प	रें	सां	रें	नी	सां	ध	नी	(मे)प	प	–	ध
रे	तो	ऽ	मे	बं	शी	वा	ले	ढी	ठ	लं	ग	र	वा	ऽ	प्या
३				×				२				०			
प	ग	–	म												
रे	तो	ऽ	से												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (१)

प – प प	पध नी नी नी	सां सां सां सां	– रें सां –
हूँ ऽ ज मु	नाऽ ऽ ज ल	भ र न जा	ऽ त थी ऽ
×	२	०	३
प रें सां रें	नी सां ध नी	मे प प – ध	प ग – म
र स की ग	ग री मो री	फो री ऽ प्या	रे तो ऽ से
×	२	०	३

अन्तरा (२)

प – प –	प प पध नी	ध नी नी नी	सां नी सां –
वृं ऽ दा ऽ	व न कीऽ ऽ	ऽ कुं ज ग	लि न में ऽ
×	२	०	३
प रें सां रें	नी सां ध नीध	मे प प – ध	प ग – म
रो क त गैं	ऽ ल मो रीऽ	सा री ऽ प्या	रे तो ऽ से
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२६

राग खमाज—त्रिताल

स्थायी—

साँवरी सलोनी मुसक्यानी हो प्यारी नार,
जिया चाहे करूँ तोसे प्यार ।। साँवरी ।।

अन्तरा—

उझकत झिझकत झाँकत झुकत हो !
नेहा लगावत क्यों तरसावत ?
कासे कहूँ पिया जा रे न, जा रे न जा रे तोरी बलिहार ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

सा
सां

सा रे – रे	रे ग – ग	म प – ध	नी सां – नीध
व री ऽ स	लो नी ऽ मु	स क्या ऽ नी	हो प्या ऽ रीऽ
×	२	०	३
प– – गम रेग	म प – म	ग सारे – नी	सा – – सा
नार ऽ जिऽ याऽ	चा हे ऽ क	रूँ तोऽ ऽ से	प्या ऽ र सां
×	२	०	३

अन्तरा

ग म ग म	प प नी नी	नी नी नी नी	सां नी सां –
उ झ क त	झि झि क त	झाँ क त झु	क त हो ऽ
२	०	३	×
प – नी नी	नी – नी नी	धनी सां नी सां	नीध नी प प
ने ऽ ह्य ल	गा ऽ व त	क्योंऽ ऽ त र	साऽ ऽ व त
२	०	३	×
म – ग म	प – नी नी	नी सां – नी	ध नी – ध
का ऽ से क	हूँ ऽ पि या	जा रे ऽ न	जा रे ऽ न
२	०	३	×
पमे प – ग	म प – म	ग – – सा	सा रे –
जाऽ रे ऽ तो	री ब ऽ लि	हा ऽ र सां	व री ऽ
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२७

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी –

इस बारी में ना जैयो रे ॥

अन्तरा –

इस बारी में अरे क्या क्या बोया
इश्क मोहब्बत सारी ॥ इस ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी

प	नी	सां	सां	नी	प	ग	म	ग	–	–	–	–	–	–	गम
बा	री	ऽ	मैं	ना	ऽ	जै	यो	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	इस
०				३				×				२			

अन्तरा

गम	गमपध	नीसांऽऽ	नीसां	सां	नीध	सां	–	पपनीनी	नीनीरेंसां	नी	सां
इस	बाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽरी	में	ऽऽ	ऽ	ऽ	अरेक्या	क्याबोऽ	या	ऽ
३				×				२			

नीध	प	मपमग	रेग,–ग
ऽऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽ,ऽइ
०			

मगम	प	–नी	नीनी	सां	–	–	नी	धप	मपमग	ग	ऽम
एकमो	हो	ऽब	तसा	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	ऽऽ
३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२८

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी–

कोयलिया कूक सुनावे सखि,
मोहे बिरहा सतावे !
पिया बिन कछु न सुहावे,
निसि अँधियारी कारी बिजरी चमके,
मोरा जिया डरपावे हाँ ।

अन्तरा–

इतनी बिनती मोरी कहियो उन्हींसे
तुम बिन जिया घबरावे !
कैसे करूँ मोरी आली मोरा जिया डरपावे हाँ ।। कोयलिया ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

														सां	–
														को	ऽ
नी̲	ध	प	म	ग	म	रे	ग	म	–	प	म	प	प	सां	–
थ	लि	या	कू	ऽ	क	ऽ	सु	ना	ऽ	वे	ऽ	हाँ	हाँ	को	ऽ
०				३				×				२			
नी̲	ध	प	म	ग	म	रे	ग	म	–	प	म	ग	म	म	ग
थ	लि	या	कू	ऽ	क	ऽ	सु	ना	ऽ	वे	स	खी	ऽ	मो	हे
०				३				×				२			
ग	म	प	म	ग	रे	सा	–	ग	ग	सा	सा	ग	म	प	म
बि	र	हा	स	ता	ऽ	वे	ऽ	पि	या	बि	न	क	छु	न	सु
०				३				×				२			
ग	रे	सा	–	ऩी	सा	ग	म	प	ध	नी	सां	नी	सां	नी	सां
हा	ऽ	वे	ऽ	नि	स	अँ	धि	या	री	का	री	बि	ज	री	च
०				३				×				२			
ध	नी̲	प	ध	नी	सां	नी	सां	–	ग	–	म	प	ध	सां	–
म	के	मो	रा	जि	या	ड	र	ऽ	पा	ऽ	वे	हाँ	ऽ	को	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ध	नी	सां	नी	सां	सां	नी	नी	सां	नी	(सां)	–	नी	ध
इ	त	नी	वि	न	ती	मो	री	क	हि	यो	उ	न्ही	ऽ	से	ऽ
०				३				×				२			
प	ध	प	सां	नी	ध	म	प	ग	म	प	–	नी	सा	ग	म
तु	म	बि	न	जि	या	घ	ब	रा	ऽ	वे	ऽ	कै	से	क	रुँ
०				३				×				२			
प	ध	नी	सां	नी	सां	नी	सां	ध	नी	प	ध	गम	पध	सां	–
मो	री	आ	ली	मो	रा	जि	या	ड	र	पा	वे	हाँऽ	ऽऽ	को	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२९

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

भरी गगरी मोरी ढुरकाई श्याम;
भरी गगरी मोरी ढुरकाई श्याम;
तुम राखत हो कछु मन में मैल !

अन्तरा-

मैं जमुना जल भरन जात थी;
आयो अचानक मैं ना जानी;
रोक लई पनघट की गैल ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–त्रिताल

स्थायी

ग ग
भ री

म नी ध प	ग म प म	ग – सा सा	नीं सा ग ग
ग ग री मो	ऽ री ढु र	का ऽ ई श्या	ऽ म भ री
०	३	×	२
म नी ध प	ग म प म	ग – सा सा	– सा सा नी
म ग री मो	ऽ री ढु र	का ऽ ई श्या	ऽ म तु म
०	३	×	२
सा – ग म	प – नी ध	नी रेंसां नीध प	– प ग (रे) ग
रा ऽ ख त	हो ऽ क छु	म नऽ मेंऽ मैं	ऽ ल भ री
०	३	×	२

अन्तरा

ग म ग म	प – नी नी	प नी नी सां	– रें सां –
मैं ऽ ज मु	ना ऽ ज ल	भ र न जा	ऽ त थी ऽ
०	३	×	२
नी – नी नी	नी – नी नी	धनी सां नी सां	ध नी प –
आ ऽ यो अ	चा ऽ न क	मैंऽ ऽ ना ऽ	जा ऽ नी ऽ
०	३	×	२
ग म ग म	प – नी नी	नी सां नीध प	– प ग (रे) ग
रो ऽ क ल	ई ऽ प न	घ ट कीऽ गै	ऽ ल भ री
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३०

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी-

तिरछी नैना कटारी हाय हाय!
तिरछी नैना कटारी!
हाय लगी कोमल मन मोरे;
सुध बुध भूल गई प्यारी सारी ।

अन्तरा-

निसदिन चैन नहीं चित चमकत;
चमकत बिरहानल चिनगारी!
हाय गुंया मन बस कीना तेने प्यारी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज-त्रिताल

स्थायी

सां	नी	ध	प	—	प	ग	म	प	—	प	—	प	—	प	—
ति	र	छी	नै	ऽ	ना	ऽ	क	टा	ऽ	री	ऽ	हा	य	हा	य
०				३				×				२			
सां	नी	ध	प	—	प	ग	म	प	—	प	—	—	—	—	—
ति	र	छी	नै	ऽ	ना	ऽ	क	टा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
प	—	ग	ग	ग	म	रे	ग	ग	म	प	म	ग	रे	सा	—
हा	ऽ	य	ल	गी	ऽ	को	ऽ	म	ल	म	न	मो	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			
नी़	सा	ग	म	प	—	नी	नी	पनी	सांरें	नीसां	नी	नीध	म	प	मप
सु	ध	बु	ध	भू	ऽ	ल	ग	ईऽ	ऽऽ	ऽऽ	प्या	रीऽ	सा	री	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

प	प	प	प	पध	नी	नी	नी	नी	—	नी	ध	नी	नी	सां	सां
नि	स	दि	न	चैऽ	ऽ	न	न	ही	ऽ	चि	त	च	म	क	त
०				३				×				२			
प	प	रें	रें	रें	रें	रें	गंरें	सां	नी	सां	रेंसां	नी	ध	प	—
च	म	क	त	वि	र	हा	ऽऽ	न	ल	चि	नऽ	गा	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
—	म	ग	म	प	—	नी	नी	सां	रें	नी	सां	नी	ध	म	प
ऽ	हा	य	गुं	या	ऽ	म	न	ब	स	की	ना	ते	ने	प्या	री
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३१

राग खमाज–दीपचन्दी

स्थायी–

नेक सुना जैयो तान मुरली वाले ।

अन्तरा–[१]

तेरी मुरलीं ने मेरो मन हर लीनो
निकसत हैं मोरे प्रान मुरली वाले!

अन्तरा–[२]

वृन्दावन की कुंज गलिन में
मोह लई बृज वाम मुरलीवाले ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज—दीपचन्दी

स्थायी

प मप –ग –म	मग रेग साग मग	प – प	पध मगरेग –म पध
नेऽ ऽक ऽसु	नाऽ ऽऽ ऽजै योऽ	ता ऽ न	मुर लीऽऽऽ ऽवा लेऽ
०	३	×	२

अन्तरा (१)

–ग मप नीनी	नीसांरेंरें सांनीधनी सां– सांनी	सां – नीसां, –
ऽते रीमु रली	नेंऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ ऽमे	रो ऽ ऽऽ, ऽ
०	३	×

–प नीनी सां, सांनी धप, ध
ऽम नह र, लीऽ ऽऽ, ऽ
२

प –ग मग	मप धप –ध सां–	ध सां नीधप	पध मगरेग –म पध
नो ऽनि कस	तहै ऽऽ ऽमो रेऽ	प्रा ऽ नऽऽ	मुर लीऽऽऽ ऽवा लेऽ
०	३	×	२

अन्तरा (२)

नोट :—दूसरा अन्तरा पहिले अन्तरे की भाँति ही गाया जायेगा।

वृन्दावन की कुंज गलिन में
मोह लई बृज वाम ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३२

राग मिश्र खमाज–दीपचन्दी

स्थायी–

हे छबि दिखला जा बाँके साँवरिया !
ध्यान लगो मोहे तोरा साँवरिया !
ध्यान लगो मोहे तोरा।

अन्तरा–

बाँकी चितवन नैना रसीले,
चाल चलत मतवाली;
का री करूँ कित जाऊँ ?
ना माने जिया मोरा साँवरिया !
ना माने जिया मोरा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज—दीपचन्दी

स्थायी

गम	पध	नीसां	नी	नी	नी	नीं	नी	सां	–	नीध	धनी	सां	–
हेऽ	ऽऽ	ऽऽ	छ	वि	दि	ख	ला	जा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	म	–	ध	–	–	नी	प	ध	–	पध	नीसां	नीध	प
बाँ	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	सँ	व	री	ऽ	याऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
×			२				०			३			
पध	–	–	म	–	–	प	ग	–	सा	ग	–	म	–
ध्याऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ल	गो	ऽ	ऽ	मो	ऽ	हे	ऽ
×			२				०			३			
प	–	–	प	–	ध	प	ग	प	–	मग	रेग	–	–
तो	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	सँ	व	रि	ऽ	याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
गम	पध	–	म	–	–	प	मग	रेसा	–	रे	–	ग	–
ध्याऽ	ऽऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ल	गोऽ	ऽऽ	ऽ	मो	ऽ	हे	ऽ
×			२				०			३			
ग	–	–	–	–	–	–रे	सा	–	–	–	–	–	–
तो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	—	म	—	ग	म	प	पध	नीसां	नी	—	नी	—
बाँ	ऽ	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	चि	तऽ	ऽऽ	व	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
प	—	—	नी	—	—	नी	नी	सां	—	नीध	नीसां	—	—
नैं	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	र	सी	ले	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
नी	—	—	नी	—	—	नी	नी	सां	—	नी	—	सां	—
चा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	च	ल	त	ऽ	म	ऽ	त	ऽ
×			२				०			३			
धनी	सां	—	सांनी	धप	ध	—	प	—	—	—	—	—	—
वाऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	म	—	ग	—	—	म	प	—	—	प	—	ध	—
का	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	क	रूँ	ऽ	ऽ	कि	ऽ	त	ऽ
×			२				०			३			
पध	नीसां	—	—	—	—	—	सांनी	धप	ध	प	—	—	—
जाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऊँऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
								रे					
गम	पध	—	म	—	प	—	मग	ग—	सा	ग	—	म	ग
नाऽ	ऽऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	नेऽ	ऽऽ	ऽ	जि	ऽ	या	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	—	—	प	—	ध	प	ग	प	—	मग	रेग	—	—
मो	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	साँ	व	रि	ऽ	याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
प	ध	—	म	—	प	—	मग	रेसा	—	रे	—	ग	—
ना	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	नेऽ	ऽऽ	ऽ	जि	ऽ	या	ऽ
×			२				०			३			
ग	—	—	—	—	—	रे	सा	—	—	—	—	—	—
मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३३

राग खमाज–ताल रूपक

स्थायी –

बंद बंद पदारविन्द गोविन्द,
आनन्दकंद के;
गोकुलचंद विमंद मति सर वो;
परोतम चंद के ॥

अन्तरा –[१]

विश्वोद्धारक बहु सुखारक,
प्रणत जन जग बंद के;
मंगलेश परेश पूरन,
हरन हरि दुख–द्वद के ॥

अन्तरा –[२]

प्राणनाथ कृपालु करुणा रूप,
सुजसन वृन्द के,
भक्तवत्सल सुफलदायक,
मन मनोर्थ अनंद के ॥

अन्तरा –[३]

ललन पिया, जन शरन यदुपति;
चरन हरि निरद्वंद के;
नंद नंद के सुखकंद के;
सब फंद रिपु छल छंद के ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज-तालरूपक

स्थायी

ग	—	सा	ग	—	ग	ग
बं	ऽ	द	बं	ऽ	द	प
०			२		३	
म	प	म	प	—	सां	सां
दा	ऽ	र	विं	ऽ	द	गो
०			२		३	
नि	ध	प	पध	म	प	प
विं	ऽ	द	आंऽ	ऽ	नं	द
०			२		३	
धप	ध	म	ग	—	ग	—
कंऽ	ऽ	द	के	ऽ	ऽ	ऽ
०			२		३	
म	ग	म	नि	ध	प	ध
गो	कु	ल	चं	ऽ	द	वि
०			२		३	
नि	सां	नि	सां	सां	सां	सां
मं	ऽ	द	म	ति	स	र
०			२		३	
नि	—	नि	सां	नि	सां	सां
वो	ऽ	प	रो	ऽ	त	मं
०			२		३	
रेंसां	रे	नि	ध	प	म	ग
चंऽ	ऽ	द	के	ऽ	ऽ	ऽ
०			२		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (१)

म	ग	मं	नि॒	ध	प	ध
वि	श्वो	ऽ	द्वा	ऽ	र	क
०			२		३	
नि	सां	नि	सां	—	सां	सां
ब	हु	सु	खा	ऽ	र	क
०			२		३	
नि	नि	नि	सां	नि	सां	सां
प्र	ण	त	ज	न	ज	ब
०			२		३	
रेंसां	रें	नि॒	ध	—	प	—
वं ऽ	ऽ	द	के	ऽ	ऽ	ऽ
०			२		३	
रें	—	रें	रें	पं	मं	गं
मं	ऽ	ग	ले	ऽ	श	प
०			२		३	
रें	गं	रें	नि	नि	सां	सां
रे	ऽ	श	पू	ऽ	र	न
०			२		३	
नि	नि	नि	सां	नि	सां	सां
ह	र	न	ह	रि	दु	ख
०			२		३	
रेंसां	रें	नि॒	ध	प	म	म
द्वं	ऽ	द	के	ऽ	ऽ	ऽ
०			२		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेष अंतरे भी इसी प्रकार से गाये जायेंगे ।

अन्तरा (२) प्राणनाथ कृपालु करुणा रूप सुजसन वृन्द के ।
भक्तवत्सल सुफलदायक मन मनोर्थं अनन्द के ।। बंद० ।।

अन्तरा (३) ललन पिया जन शरन यदुपति; चरन हरि निरद्वंद के ।
नंद नंद के सुखकंद के, सब फंद रिपु छल छंद के ।। बंद० ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३४

राग खमाज-दीपचन्दी

स्थायी-

ऐसो होरी को खिलैया मुरारी नटखट;
ठाड़ो वंशीवट तट जमुना के निकट;
कोऊ जाने न पावे वृजनारी पनघट ।। ऐसो ।।

अन्तरा-

रंग पिचकारी मारी;
अबीर प्रहारी रोरी केसर गुलाल मुख मल अंग लाली;
ऐसो ललन अनारी, लिये सखन खिलारी
मोरी कर दई कुगत निपट ही विकट ।। ऐसो ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–दीपचन्दी

स्थायी

										ग	म	ध	प
										ऐ	ऽ	सो	ऽ
ध	म	–	ग	रे	ग	सा	सारे	ग	रे	ग	म	प	मे
हो	री	ऽ	को	ऽ	ऽ	खि	लैऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	मु
×			२				०			३			
प	–	–	प	–	मेप,सां	पध	मे	ग	–	ग	म	प	ध
रा	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽऽ,ऽ	नट	ख	ट	ऽ	ठा	ऽ	ड़ो	ऽ
×			२				०			३			
नी	नी	–	सां	नी	सां	रें	सांनी	सां	–	नी	ध	प	ध
बं	सी	ऽ	व	ऽ	ऽ	ट	तऽ	ट	ऽ	ज	ऽ	ऽ	मु
×			२				०			३			
ध	सां	–	नी	ध	प	ध	म	ग	–	ग	म	प	ध
ना	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	नि	क	ट	ऽ	को	ऽ	ऊ	ऽ
×			२				०			३			
नी	–	–	सां	नी	सां	रें	सांनी	(सां)	–	नी	ध	प	ध
जा	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	न	पाऽ	वे	ऽ	बृ	ऽ	ऽ	ज
×			२				०			३			
ध	सां	–	नी	ध	प	ध	म	ग	–	ग	म	प	ध
ना	ऽ	ऽ	री	ऽ	प	न	घ	ट	ऽ	ऐ	ऽ	सो	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

गग	सासा	नीसा	गम	पप	पप	पप	गम	पनी	नीनी
रंग	भि न	कारी	मारी	भरी	रंग	हारी	रोरी	केस	रगु
×			२				०		

सांनी,सां	नीध	नीनी	धप
ला ऽ ,ल	मुख	मल	अंग
३			

धम	गम	पनी	नीनी	सांनी,सां	नीध	नीनी	धप	धम	गम
लाली	ऐसो	लल	न अ	नाऽ,री	लिये	सख	नखि	लारी	मोरी
×			२				०		

पनी	नीनी	सांनीसां	पप
कर	दई	कु ऽ गं	त,नि
३			

ध	सां	–	नी	ध	प	ध	म	ग	–	ग	म	ध	प
प	ट	ऽ	ही	ऽ	ऽ	वि	क	ट	ऽ	ऐ	ऽ	सो	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३५

राग खमाज–दादरा

स्थायी –

सुघर पिया प्यारी से नैना लगो रे !
प्यारी से नैना लगो रे ।

अन्तरा –

जब से नैना लगो प्यारी से कोटिन काम जगो रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग खमाज–दादरा

स्थायी

सां
सु

सां	सां	सां	धसां	नीध	प	गप	धसां	नीध	पध	म–	प
ध	र	पि	याऽ	ऽऽ	ऽ	प्याऽ	ऽऽ	उऽ	ऽऽ	रीऽ	से
×			०			×			०		
ग	—	सा	सारे	ग	–म	रे	ग	—	सा	—	—
नै	ऽ	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽल	गो	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
रेग	सारे	—	म	—	म	प	—	—	प	—	–प
प्याऽ	ऽऽ	ऽ	री	ऽ	से	नै	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽल
×			०			×			०		
पध	नीध	पम	गम	पध	रें						
गोऽ	ऽऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ	सु						
×			०								

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	ग	—	प	—	—	प	—	प	पध	नीध	पम
ज ×	ब्से	ऽ	नै ०	ऽ	ऽ	ना ×	ऽ	ल	गोऽ ०	ऽऽ	ऽऽ
गम	प	ध	सां	—	—	नी	ध	सां	नी	नी	नी
ध्याऽ ×	री	ऽ	से ०	ऽ	ऽ	ऽ ×	ऽ	ऽ	को ०	टि	न
धप	ध	—	म	ग	म	प	—	—	पध	पध	रेंरें
काऽ ×	ऽ	ऽ	म ०	ऽ	ज	गो ×	ऽ	ऽ	रेऽ ०	ऽऽ	ऽसु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३६

राग खमाज—दादरा

स्थायी—

सैंया बिन नाहीं आवत चैन,
कासे कहूँ अपने जिया के बैन।

अन्तरा—

याद आवत निस दिन,
हैदर बाँके रसीले तीखे नैन॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज–दादरा

स्थायी

											सां
											सै
नीसां	नीध	नी	ध	प	–	गप	धसां	नीध	पध	मप	–
याऽ	ऽऽ	ऽ	वि	न	ऽ	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	हींऽ	ऽ
×			०			×			०		
ग	–	सा	सारे	ग	–म	गरे	ग	–	सा	–	–
आ	ऽ	ऽ	वऽ	ऽ	ऽत	चैंऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
रेग	रेसा	रे	ग	–	ग	म	–	–	म	प	नी
काऽ	ऽऽ	ऽ	से	ऽ	क	हूं	ऽ	ऽ	अ	प	ने
×			०			×			०		
नी	नी	नी	सां	–	सां	नीसां	नीध	नी	ध	प	–
जि	या	के	बै	ऽ	ऽसैं	याऽ	ऽऽ	ऽ	बि	न	ऽ
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रेग	सारे	–	म	–	म	प	–	–	प	–	–प
याऽ	ऽऽ	ऽ	द	ऽ	आ	व	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽनि
×			०			×			०		
पध	नीध	धप	म	ग	म	गम	पध	नीसां	नी	सां	–
सऽ	ऽऽ	ऽऽ	दि	न	ऽ	हैंऽ	ऽऽ	ऽऽ	द	र	ऽ
×			०			×			०		
नी	ध	सां	–	–	–	नी	नी	नी	नी	नी	(सां)
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बाँ	ऽ	के	र	सी	ले
×			०			×			०		
नी	सां	नीध	प	–	पसां	नीसां	नीध	नी	ध	प	–
ती	ऽ	खेऽ	नैं	ऽ	नसैं	याऽ	ऽऽ	ऽ	वि	न	ऽ
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३७

राग खमाज–दादरा

स्थायी–

लचक लचक चलत मोहन आवे !
मनभावे अधर अधर मधुर मधुर बाँसुरी बजावे कहीं ॥

अन्तरा–

हाथ लकरिया, काँधे कमरिया, वन में धेनु चरावे कहीं !
सोहनी सूरत, मोहनी मूरत, मुख से बेनु बजावे कहीं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज-दादरा

स्थायी

प	नी	सां	रें	सां	नी	ध	प	ध	म	ध	प
ल	च	क	ल	च	क	च	ल	त	मो	ह	न
×			०			×			०		
ध	म	ग	—	रे	ग	मम	गरे	ग	सा	—	—
आ	ऽ	वे	ऽ	म	न	भाऽ	ऽऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
ग	म	ग	म	प	ध	नी	नी	सां	नी	सां	सां
अ	ध	र	अ	ध	र	म	धु	र	म	धु	र
×			०			×			०		
रें	गं	रें	सां	—	नी	सांरें	सांसां	ध	नी	प	ध
वाँ	ऽ	स	री	ऽ	ब	जाऽ	ऽऽ	वे	क	हीं	ऽ
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ग	म	ध	ध	नीनी	धप	ध	—	—	—
हा	ऽ	थ	ल	क	रि	याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
नी	—	नी	नी	सां	नी	सां	—	—	नीध	सां	—
काँ	ऽ	धे	क	म	रि	या	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
रें	गं	रें	सांनी	सां	नी	सांरें	नीसां	ध	नी	ध	—
ब	न	में	धेऽ	नु	च	राऽ	ऽऽ	वे	क	हीं	ऽ
×			०			×			०		
ग	म	ग	म	प	ध	नी	नी	सां	नी	सां	सां
सो	ह	नी	सू	र	त	मो	ह	नी	मू	र	त
×			०			×			०		
रें	गं	रें	नी	सां	नी	सांरें	सांसां	ध	नी	ध	नी
मु	ख	से	बे	नु	ब	जाऽ	ऽऽ	वे	क	हीं	ऽ
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३८

राग काफी–त्रिताल (पंजाबी)

स्थायी–

कदर पिया नैया मोरी कैसे लागे पार ?
तू केवट, अनारी हूँ ठाढ़ी मँझधार ॥ कदर पिया ॥

अन्तरा–

ना मोरी नैया ना रे खिवैया;
आन परी मँझधार । कदर पिया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल (पंजाबी)

स्थायी

पध	मग रेग –म प	मपध पमप मगरेग रे	रे मगरेग सारे पम
ऽ ऽ ऽ कऽ	दऽ रऽ ऽपि या	नैंऽऽ याऽऽ मोऽऽऽ री	कैं सेऽऽऽ ऽला ऽगे
×	२	०	३
प – –प पध	मग रेग –म प	मपध पमप मगरेग रे	रे मगरेग सारे पम
पा ऽ ऽर कऽ	दऽ रऽ ऽपि या	नैंऽऽ याऽऽ मोऽऽऽ री	कैं सेऽऽऽ ऽला ऽगे
×	२	०	३
प – –प मग	म ध नी सां	नीसांरेंसां नीध नी धप	पधनी धप –प गम
पा ऽ ऽर तूऽ	के व ट अ	नाऽऽऽ रीऽ ऽ हूँऽ	ठाऽऽ ढ़ीऽ ऽम जऽ
×	२	०	३
प – –प पध	मग रेग –म प		
धा ऽ ऽर कऽ	दऽ रऽ ऽपि या		
×	२		

अन्तरा

ध म –प ध	नी – सां –	धसांरेंगं रेंगं – रेंसां	ध सां नी धप
ना ऽ ऽमो री	नै ऽ या ऽ	नाऽऽऽ ऽऽ ऽ रेखि	वै ऽ या ऽऽ
०	३	×	२
नी – नी नी	सांरेंसांसां नीध पम पध	प – –प पध	मग रेग –म प
आ ऽ न प	रीऽऽऽ ऽऽ ऽऽ मझ	धा ऽ ऽर कऽ	दऽ रऽ ऽपि या
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३९

राग काफी-त्रिताल

स्थायी-

मैं वारी सैंयाँ !
और वारूँ तन मन धन सबही तुम्हरे कारन ।

अन्तरा-

तन से जोगन, मन से वियोगन हम तुम्हरे बिन
कदर पिया तुम जुग जुग जियो कर लूं नैन भर कर दरशन ।
॥ मैं वारी सैंयाँ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल

स्थायी

ग	रे	–	ग	प म	–	प	–	ग	म	ध	–	धनी	सां	नी	ध
मैं	वा	ऽ	री	सैं	ऽ	याँ	ऽ	औ	र	वा	ऽ	रूऽ	ऽ	त	न
०				३				×				२			
प	म	ग	म	रे	ग	रे	–	सा	सा	ग	–	साग	मप	मग	म
म	न	ध	न	स	ब	ही	ऽ	तु	म्ह	रे	ऽ	काऽ	ऽऽ	रऽ	न
०								×				२			

अन्तरा

म	म	प	ध	नी	–	सां	सां	रें	मं गं	रें	सां	रें	सांनी	सां	सां
त	न	से	ऽ	जो	ऽ	ब	न	म	न	से	वि	यो	ऽऽ	ग	न
×				२				०				३			
नी	नी	सां	सां	रें	नी	ध	प	ग	म	नी	प	ग	म	ग	रे
ह	म	तु	म्ह	रे	ऽ	बि	न	क	द	र	पि	या	ऽ	तु	म
×				२				०				३			
रें	गं	रें	गं	सां	रें	नी	सां	प	नी	सां	–	रें	सां	नी	ध
जु	ग	जु	ग	जी	ऽ	यो	ऽ	क	र	लू	ऽ	नै	ऽ	ऽ	न
×				२				०				३			
सां	नी	ध	प	नी	ध	प	म	रे ग	रे	–	ग	म	–	प	–
म	र	क	र	द	र	ब	न	मैं	वा	ऽ	री	सैं	ऽ	याँ	ऽ
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४०

राग काफी–त्रिताल

स्थायी–

पिया, झूम झूम मोहे निंदिया आई रे पिया !
भोर भई आये, जावो जहाँ रैन गँवाई। पिया ॥

अन्तरा–

कर के ढिठाई कदर विनती करत हो !
ये भी चतुराई मोरे जिया से बुराई रे। पिया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल

स्थायी

म प
पि या

मग म– पध पम	गरे ग –सा रे	प — ध प	मग रेग –म प
झूऽ मऽ झूऽ मऽ	मोऽ हे ऽनि दि	या ऽ आ ई	रेऽ ऽऽ ऽपि या
०	३	×	२
ग मग म ध	नी सां नी धप	पध नी ध प	मग रेग –म प
भोर् भई आ ये	जा वो ज हाँऽ	रैऽ ऽ न गँ	वाऽ ईऽ ऽपि या
०	३	×	२

अन्तरा

–म म प ध	नी नी सां नीसां	रें गं (मं) रें सां	रें सांनी सां —
ऽक र के ढि	ठा ई क दर	वि न ती क	र तऽ हो ऽ
२	०	३	×
प रें सां रें	सांनी सां –नी ध	प ध पधनी नी	ध प धप मग
ये भी च तु	राऽ ई ऽमो रे	जि या सेऽऽ बु	रा ई रेऽ ऽऽ
२	०	३	×
रेग –– म प			
ऽऽ ऽऽ पि या			
२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४१

राग काफी—त्रिताल

स्थायी—

तट पनियाँ कैसे जाऊँ री ?
सखि, नागर नटखट हट निपट बाल
मोसे करत ठिठोली वंशीवट जमुना ॥ तट पनियाँ ॥

अन्तरा—

उचक उचक कहाँ देखे अखंतर ?
तट पनघट वंशीवट यमुना ॥ तट पनियाँ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल

स्थायी

म प ध प	म मग रेसा रे	प म प –	– – – –
त ट प नि	याँ कँऽ ऽऽ से	जा ऊँ री ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
म प ध प	म मग रेसा रे	प म प –	म नी धप ध
त ट प नि	याँ कँऽ ऽऽ से	जा ऊँ री ऽ	स खी नाऽ ऽ
०	३	×	२
नी सां नी ध	प म ग म	ग रेसा रे ग	– रे रे सा
ग र न ट	ख ट ह ट	नि पऽ ट वा	ऽ ल मो से
०	३	×	२
नी सा नी नी	नी नी प –	नीसां रें सां नी	ध प मग म
क र त ठि	ठो ली बं ऽ	शीऽ ऽ व ट	ज मु नाऽ ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म नी ध नी	सां सां नी सां	– सां नी रेंसां	नी नी ध ध
उ च क उ	च क क हाँ	ऽ दे ऽ खेऽ	अ ख त र
०	३	×	२
रें सां रें नी	सां सां प –	नीसां रें सां नी	ध प मग म
त ट प न	घ ट बं ऽ	शीऽ ऽ व ट	ज मु नाऽ ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४२

राग काफी-त्रिताल(टप्पा अंग)

स्थायी-

मृग लोचन मधु बतियाँ
तेरे नैना मतवारे सुल्तानी अलंकृत ।। मृग ।।

अन्तरा-

एक चन्द्ररूप एक भक्ति रूप
डोले डोले जोबना
तेरे नैना मतवारे सुल्तानी अलंकृत ।। मृग ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल (टप्पा अंग)

स्थायी

			रे म
			मृ ग
म ग रेसा सा रे ग रे	सा नी ध प – –	सा नी सा – रे ग	रे – – –
लोऽ ऽऽ चऽ ऽऽ	नऽ ऽऽ ऽ ऽ	मऽ धु ऽब ति	याँ ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
– – सा ग रे	सा नी सा – –	– – – नी सा	नीसा रे ग रे –
ऽ ऽ ते रेऽ	नैंऽ ना ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽम त	वाऽ ऽऽ रे ऽ
२	०	३	×
सा नी सा ग – सा	ग म प प मम रे ग	म म ग ग सा रे ग रे	सा नी सा रे म
सुऽ ल्ता नीऽअ	लंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	कुऽ ल मृ ब
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा सा ग —	ग म ग म	म म रेम पध	धप गरे – रे
ए क चं ऽ	द्र रू ऽ प	एक भऽ ऽऽ	क्तिऽ रूऽ ऽ प
०	३	×	२
नी़ प़ ध़ सा	– – रे म	रेम गरे सारे -	– – सा गरे
डो ले डो ले	ऽ ऽ जो ब	नाऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ते रेऽ
०	३	×	२
सानी़ सा – –	– – नी़ सा	नी़सा रेग रेऽ –	सानी़सा ग–सा
नैऽ ना ऽ ऽ	ऽ ऽ म त	वाऽ ऽऽ रे ऽ	सुऽ ल्ता नी ऽब
०	३	×	२
गम पप मम रेग	मम गग सारे गरे	सानी़ सा रे म	
लंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	कृऽ त मृ ग	
०	३	×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४३

काफी–त्रिताल (पंजाबी ठेका)

स्थायी –

बतियाँ न बनावो मोसे फेर फेर;
मैंने जान लियो तोरे जिय में फेर ।। बतियाँ ।।

अन्तरा –

हाँ, अपने गरज मतलब के;
प्रीत की रीत न जानत जबतैं
कब प्रतीत हो फेर फेर ।। बतियाँ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साँझ काफी–त्रिताल (पंजाबी ठेका)

स्थायी

म म
ब तिं

गमपध नीसां नी प	ग रे नी सा	ग सारे म म	रेमपध नीप ग म
याँऽऽऽ ऽऽ न ब	ना वो मो से	फे ऽऽ र फे	ऽऽऽऽ ऽर मैं ने
०	३	×	२
प नी नी नी	सांनी (सां) नी ध	नी नी प प	ध प म म
जा ऽ न लि	योऽ ऽ तो रे	जि य में फे	ऽ र ब ति
०	३	×	२

अन्तरा

– म प प	नी – नी नी	सां – सां सां	गं गं सां –
ऽ हाँ अ प	ने ऽ ग र	ज ऽ म त	ल ब के ऽ
०	३	×	२
(सां) नी ध ध	ध नी प ध	नी सां रे सां	नी ध नी प
ऽ प्री त की	री ऽ त न	जा ऽ न त	ज ब तें ऽ
०	३	×	२
– नी नी नी	नी सांनी (सां) –	नीध नी प प	प ध प मम
ऽ क ब प्र	ती ऽऽ त ऽ	होऽ फे ऽ र	फे ऽ र बति
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४४

राग काफी-त्रिताल

स्थायी-

श्याम कैसी मुरलिया बजाई ?
धुन सुन मोहे तो कछु नहीं सूझत ।

अन्तरा-

ना मैं जानू पशु-पक्षादिक;
तूने कैसे मोह लियो बाँसुरी की धुन सों ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल

स्थायी

प –प ध प	नी प ग रे	ग सा – रे	प म प –
श्या ऽम कै सी	मु र ली ऽ	ऽ या ऽ व	जा ऽ ई ऽ
२	०	३	×
म ध ध ध	ध नी धप ध	नी सां ध नी	प ऽ पम प
धु न सु न	मो तोऽ ऽ	क छु न हीं	सू ऽ झऽ त
२	०	३	×

अन्तरा

म – प ध	सां – सां –	रें गं रें सां	नी – नी ध
ना ऽ मैं ऽ	जा ऽ नू ऽ	प शु प ऽ	क्षा ऽ दि क
२	०	३	×
प रें सां रें	नी सां ध नी	प ध नी सां	नी ध प –
तू ने कै से	मो ह लि यो	बाँ सु री की	धु न सो ऽ
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४५

राग काफी–त्रिताल

स्थायो—

हम तुमसे कीनी रार
अरे हाँ रे साँवरे कन्हैया ।।हम तुमसे ।।

अन्तरा—

वृन्दावन में रास रचो है,
मोर मुकुट धरैया !
गिरि गोवरधन नख पे धारी
मुरली अधर बजैया !
अरे हाँ रे साँवरे कन्हैया ।।हम तुमसे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी-त्रिताल

स्थायी

														प	–
														हं	ऽ
मप	धम	प	ग	–	सा	–	नी	सा	–	सा	–	–	–	प	–
म्तुऽ	ऽऽ	ऽम्	से	ऽ	की	ऽ	नी	रा	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	हं	ऽ
०				३				×				२			
मप	धम	म	ग	–	सा	–	नी	सा	–	सा	–	–	–	सा	सा
म्तुऽ	ऽऽ	ऽम्	से	ऽ	की	ऽ	नी	रा	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रे
०				३				×				२			
सां	सां	–	नी	ध	नी	–	सां	ध	–	प	–	–	–	प	–
हाँ	रे	ऽ	सां	व	रे	ऽ	क	न्है	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ह	म्
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	–	ग	–	रेसा	रे	सा	–	रे	–	।		प	–	प	–
बृं	ऽ	दा	ऽ	वऽ	न	में	ऽ	रा	ऽ	स	र	चो	ऽ	है	ऽ
०				३				×				२			
म	–	म	म	प	प	–	प	मप	ध	म	प	ग	ऽ	सारे	–
मो	ऽ	र	मु	कु	ट	ऽ	घ	रैऽ	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग		गम	पध	म	प	प	ध
गि	रि	गो	ऽ	व	र	ध	न	न	ख	पैऽ	ऽऽ	धा	री	मु	र
०				३								२			
पम	प	म	ग	गरे	सा	–	नी	सा	–	सा	–	–	–	सा	सा
लीऽ	ऽ	ऽ	अ	धऽ	र	ऽ	ब	जै	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रे
०				३				×				२			
सां	सां	–	नी	ध	नी	–	सां	ध	–	प	–	–	–	प	–
हाँ	रे	ऽ	सां	व	रे	ऽ	क	न्है	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ह	म्
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४६

राग काफी-आड़ाचौताल

स्थायी-

साँवरिया, तोरी बंसी ने मेरो मन बस कीनो ।

अन्तरा-

संग की सहेली हिल मिल गई पनियाँ;
कोऊ हँसती कोऊँ गावनियाँ;
तोरी बंसी ने मेरा मन बस कीनो ।।साँवरिया।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–ताल–आड़ाचौताल

स्थायी

रे सा	ध़ नी	सा ग	म ध	म ध	नी सां	ध नी
साँ ऽ	व रि	या ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	तो री
४	०	×	२	०	३	०
प ध	म प	ग म	रे ग	सा रे	म ग	रे सा
बं ऽ	सी ने	मे रो	म न	ब स	की ऽ	नो ऽ
४	०	×	२	०	३	०

अन्तरा

म म	म नी	ध नी	सां सां	सां सां	सां सां	सां सां
सं ग	की स	हे ली	हि ल	मि ल	ग ई	प नि
×	२	०	३	०	४	०
सां सां	मं गं	रें सां	नी —	ध म	ग रे	ध़ नी
याँ ऽ	को	हँ स	ती ऽ	को ऊ	गा ऽ	व नि
×	२	०	३	०	४	०
सा ग	म ध	म ध	नी सां	ध नी	प ध	म प
याँ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	तो री	बं ऽ	सी ने
×	२	०	३	०	४	०
ग म	रे ग	सा रे	म ग	रे सा	रे सा	ध़ नी
मे रो	म न	व स	की ऽ	नो ऽ	साँ ऽ	व रि
×	२	०	३	०	४	०
सा ग	म ध					
या ऽ	ऽ ऽ					
×	२					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४७

राग काफी–त्रिताल

स्थायी–

जिन डारो रंग, मानो गिरधारी !

अब सास सुनें तो देगी गारी, हम हारी। जिन डारो ॥

अन्तरा–

गिरि कैलास को बास हम छाँड़ो

हम अबला अति बारी, भीजि सारी ॥ जिन डारो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी-त्रिताल

स्थायी

														ध	प
														जि	न
ग	म	ग	रे	रे	ग	म	म	प	—	प	—	—	—	ध	प
डा	रो	रं	ग	मा	नो	गि	र	धा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	जि	न
०				३				×				२			
ग	म	ग	रे	रे	ग	म	म	प	—	प	—	—	—	म	ग
डा	रो	रं	ग	मा	नो	गि	र	धा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	अ	व
०				३				×				२			
म	नी	ध	नी	प	ध	नी	सां	नी	ध	नी	धप	ग	म	ध	प
सा	ऽ	स	सु	ने	तो	दे	गी	गा	री	ह	मऽ	हा	री	जि	न
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	प	ध	नी	नी	सां	सां	रें	गं	रें	सां	रें	नीं	सां	—
गि	रि	कैं	ऽ	ला	ऽ	स	को	वा	स	ह	म	छाँ	ऽ	ड़ो	ऽ
०				३				×				२			
नी	नी	सां	सां	नीसां	रेंसां	नी	धप	ध	प	म	प	ग	म	ध	प
ह	म	अ	व	लाऽ	ऽऽ	अ	तिऽ	वा	री	भीं	जि	सा	री	ज़ि	न
०				३				×				२			
ग	म	ग	रे	रे	ग	म	म	प	—	प	—	—	—	ध	प
डा	रो	रं	ग	मा	नो	गि	र	धा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	जि	न
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४८

राग काफी–त्रिताल

स्थायी–

छाँड़ दे लँगरवा मुरक मोरी बाँहीं रे !
ढीठ भयो नहीं मानत कन्हाई रे !

अन्तरा–

हेर फेर झटपट कुंजन सों
मोहन निकसो आन के;
नाहक नाहक नाहक रे !
चंचल छैल छिकत मोरी राई रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल

स्थायी

ग	ग	म	प	ग	म	रे	ग	सा	रे	म	प	नी	ध	प	—
छां	ऽड़	दे	लं	ग	र	वा	मु	र	क	मो	री	बाँ	ही	रे	ऽ
२				०				३				×			
नी	—	नी	नी	सां	—	नी	नी	नी	नीध	मप	प	नी	ध	प	—
ढी	ऽ	ठ	भ	यो	ऽ	ना	हीं	मा	नऽ	तऽ	क	न्हा	ई	रे	ऽ
२				०				३				×			

अन्तरा

म	—	म	प	—	प	नी	नी	नी	नी	नी	—	सां	नी	सां	—
हे	ऽ	र	फे	ऽ	र	झ	ट	प	ट	कुं	ऽ	ज	न	सों	ऽ
२				०				३				×			
प	—	नी	नी	नी	नी	सां	—	नीसां	रें	रें	नी	धप	ध	प	—
मो	ऽ	ह	न	नि	क	सो	ऽ	आऽ	ऽ	ऽ	न	केऽ	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			
पध	सां	नी	नी	धप	ध	म	म	रे	—	म	म	प	—	—	—
नाऽ	ऽ	ह	क	नाऽ	ऽ	ह	क	ना	ऽ	ह	क	रे	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			
म	प	नी	नी	सां	—	सां	प	नी	नी	सां	रेंसां	नी	ध	प	—
चं	ऽ	च	ल	छै	ऽ	ल	छि	क	त	मो	रीऽ	रा	ई	रे	ऽ
२				०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४९

राग काफी–त्रिताल

स्थायी–

जानी जानी तोरे मन की बात !
साँवरो नन्द जी के घर जाऊँ !
गारी दूँगी, गारी दूँगी, ना हम से बोलो !
का परो है तेरो डर ॥ जानी जानी ॥

अन्तरा–

जो जो हटकत न भटक कछु मन लाये;
झट सनमुख आये त्यों त्यों तुम, त्यों त्यों तुम
लिपट जात पनघट घर अब ॥ जानी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी—त्रिताल

स्थायी

			सा नी
			जा नी
सा रे – रे	ग म प म	प – – प	ग म पध नी
जा नी ऽ तो	रे म ऽ न्की	वा ऽ ऽ त	साँ व रोऽ ऽ
०	३	×	२
ध प ग म	रे ग सा रे	रे नी ध नी	प ध म प
नं द जी के	घ र जा ऊँ	गा री दूँ गी	गा री दूँ गी
०	३	×	२
ग म ग प	म – ग रे	ग म ग रे	सा नी सा नी
ना ह म्से बो	लो ऽ का प	रो है ते रो	ड र जा नी
०	३	×	२

अन्तरा

म म प प	नी नी नी नी	सां नी सां नी	सां नी सां सां
जो जो ह ट	क त न भ	ट क क छु	म न ला ये
०	३	×	२
प रें सां नी	धप ध प प	प प रें रें	नी नी सां सां
झ ट स न	मुऽ ख आ ये	त्यों त्यों तु म	त्यों त्यों तु म
०	३	×	२
ध नी ध नी	– प प म	प ध प म	ग रे सा नी
लि प ट जा	ऽ त प न	घ ट घ र	अ व जा नी
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५०

राग काफी–त्रिताल

स्थायी—

ऐसो होरी को खिलारी !
लिये डोले पिचकारी, नहिं मानेगा तो दूँगी तोंको गारी रे।
।।ऐसो।।

अन्तरा—

हेर फेर मोहन सों अटकी;
ले गुलाल मोरी चूनर झटकी;
सँग की सहेली मोरी दूर निकस गईं;
वासों करत मोरी न्यारी रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–त्रिताल

स्थायी

														म	ग
														ऐ	सो
म	नी	ध	नी	ध	नीध	प	ध	नी	सां	नी	ध	प	प	प	म
हो	री	को	खि	ला	रीऽ	लि	ये	डो	ले	पि	च	का	री	न	हि
०				३				×				२			
प	नी	ध	प	ग	रे	सा	रे	प	म	प	–	प	धप	म	ग
मा	ने	गा	तो	दूं	गी	तो	को	गा	री	रे	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऐ	सो
०				३				×				२			

अन्तरा

म	–	म	प	–	प	नी	–	नी	नी	नी	–	सां	नी	सां	–
हे	ऽ	र	फे	ऽ	र	मो	ऽ	ह	न	सों	ऽ	अ	ट	को	ऽ
०				३				×				२			
प	–	नी	नी	–	नी	सां	सां	नीसां	रें	सां	नी	ध	ध	प	–
ले	ऽ	गु	ला	ऽ	ल	मो	री	चूऽ	ऽ	न	र	झ	ट	की	
०				३				×				२			
प	रें	रें	रें	नी	नी	सां	सां	नीसां	रें	सां	नी	ध	ध	प	प
सं	ग	की	स	हे	ली	मो	री	दूऽ	ऽ	र	नि	क	स	ग	ई
०				३				×				२			
प	ध	प	म	ग	रे	सा	रे	प	म	प	–	प	धप	म	ग
वा	ऽ	सों	क	र	त	मो	को	न्या	री	रे	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऐ	सो
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५१

राग काफी–त्रिताल

स्थायी –

खेलत राम सिया सँग होरी;
पिचकारी उड़त, चली चन्द्रमुखी चित चहुँ ओरी।

अन्तरा –

चोवा चन्दन अबीर कुमकुमे
हाथ लिये सब आये;
पिया प्यारी, प्यारी पिया ऊपर,
उड़त परस्पर जनक किशोरी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५७

राग काफी-त्रिताल

स्थायी

सा	नीसा	रे	सारे	गरे	ग	म	पम	प	–	–	धप	ग	–	रे	गरे
खे	ऽऽ	ल	तऽ	राऽ	ऽ	म	ऽसि	या	ऽ	ऽ	सँग	हो	ऽ	री	ऽऽ
०				३				×				२			
ध	म	प	ध	सां	–	–	सांरें	नी	–	धप	ध	प	–	–	–
पि	च	का	ऽ	री	ऽ	ऽ	उड़	त	ऽ	ऽऽ	च	ली	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
–	प	प	प	धध	पम	प	प	सां	–	–	नीप	ग	–	रे	गरे
ऽ	च	न्द्र	मु	खीऽ	ऽऽ	ऽ	चि	त	ऽ	ऽ	चहुं	ओ	ऽ	री	ऽऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प -- रें रें	रें रेंरें रेंगंमंमं गंरेंगं-	सां रेंसां नी प	धसां -सां सांरें गं
चो ऽ वा ऽ	च ऽन्द्र नऽऽऽ ऽऽऽऽ	अ बीऽ र ऽ	कुम ऽकु मेंऽ ऽ
०	३	×	२

सां रें नी -नी	ध म प ध	नी -सां धनी सां	सां - - -
हा ऽ थ ऽलि	ये ऽ स ब	आ ऽऽ ऽऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

गग - ग ग	ग म पध नीसां,नी	सां - रेंरेंसांनी धनीसांसां	नीध नी पध प-
पिमा ऽ प्या री	प्या ऽ रीऽ ऽऽ,पि	या ऽ ऊऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽ ऽ पऽ रऽ
०	३	×	२

नीनी - नी -नी	सांनी सां नी धप	गग - गमप धप	ग - रे गरे
उड़ ऽ त ऽप	रऽ ऽ स्प रऽ	जन ऽ कऽऽ ऽकि	शो ऽ री ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५२

रग काफी–दीपचन्दी

स्थायो–

कैसी ये होरी खिलाई ?
श्याम मोहे चोरी लगाई रे।

अन्तरा–

खेलत गेंद गिरी जमुना में,
किन्नें मेरी गेंद चुराई ?
हाथ डार अँगिया बिच देखूँगी;
एक गई दो पाई ।। श्याम मोहे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी-दीपचन्दी

स्थायी

(सा) नी़	सा	–	रे	रे	–	रे	ग॒	रे	ग॒	म	–	प	म
कैं	ऽ	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ये	हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	खि
×			२				०			३			
प	–	–	प	–	–	–	प	–	प	प	ध	म	–
ला	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	श्या	ऽ	म	मो	ऽ	हे	ऽ
×			२				०			३			
ग	म	–	पध	नीसां	–	सां	नी॒	प	–	ग॒	रे	ग॒	रे
चो	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽ	ल	गा	ई	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
सा	नी॒	सा	रे	–	रे	–							
कैं	ऽ	ऽ	सी	ऽ	ये	ऽ							
×			२										

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	–	–	रें	–	रें	–	रें	–	–	गं	रें	गं	रें
खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	त	ऽ	गें	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
सां	रें	सां	नी	–	ध	प	ध	सां	–	सां	रें	सांरें	गं
गि	री	ऽ	ज	ऽ	मु	ऽ	ना	ऽ	ऽ	में	ऽ	ऽऽ	ऽ
×			२				०			३			
सां	रें	सां	नी	–	नी	–	ध	म	–	प	–	–	ध
कि	न्ने	ऽ	मे	ऽ	री	ऽ	गें	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	चु
×			२				०			३			
नी	–	–	सां	–	–	–	नी	–	धं	धनी	सां	–	–
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	–	ग	–	ग	–	म	ग	म	प	–	ध	–
हा	थ	ऽ	डा	ऽ	र	ऽ	अँ	गि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
नी	नी	–	सां	–	–	–	सांसां	नीध	नी	ध प	–	–	–
वि	च	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	खूँऽ	ऽऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
नी	–	–	नी	–	–	नी	सां	नी	सां	नी	ध	प	ध
ए	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ग	ई	ऽ	ऽ	दो	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	नी	–	ध	–	प	–	ग	ग	–	ग	–	म	–
पा	ई	ऽ	ठ	ऽ	ऽ	ऽ	श्या	म	ऽ	मो	ऽ	हे	ऽ
×			२				०			३			

ग	म	–	पध	नीसां	–	सां	नी	प	–	ग	रे	ग	रे
चो	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽ	ल	गा	ई	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५३

राग काफी-त्रिताल

स्थायी–

हमसे न बोलो पिराय मोरी अँखियाँ।

अन्तरा–[१]

रात कहे पिया झुलना गढ़ा दूँ,
होत बिहान बिसर गईं बतियाँ॥

अन्तरा–[२]

जावो वहीं जहाँ रैन गवाँई,
घूँघट पट जिन खोलो, दुखाय मोरी अँखियाँ॥

अन्तरा–[३]

कृष्ण पिया पर-पीर न जानें,
अपनी गरज की भावे बतियाँ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी–दादरा

स्थायी

रे ग॒	रे	सा	नी॒	ध॒	नी॒	सा	—	—	सा	—	रेसा
ह	ऽ	ऽ	म्से	ऽ	न	बो	ऽ	ऽ	लो	ऽ	पिऽ
×			०			×			०		
नी ध॒	—	नी॒	रे	रे	ग॒	सा	रे	—	सारे	गम	गम
रा	ऽ	य	मो	री	ऽ	अँ	खि	ऽ	याँऽ	ऽऽ	ऽऽ
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (१)

सा	—	—	ग	—	ग	प	—	—	ग	म	—
रा	ऽ	ऽ	त	ऽ	क	हे	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ
×			०			×			०		
म̇	रे	—	ग	—	म	मग	रेग	—	सा	—	—
झु	ल	ऽ	ना	ऽ	ग	ढ़ाऽ	ऽऽ	ऽ	दूँ	ऽ	ऽ
×			०			०			०		
										सा	
नी	ध़	नी	रे	—	रे	रे	—	ग	सा	—	रे
हो	ऽ	ऽ	त	ऽ	वि	हा	ऽ	ऽ	न	ऽ	वि
×			०			×			०		
नी	ध़	नी	रे	रे	ग	सा	रे	—	सारे	गम	पम
स	ऽ	र	ग	ईं	ऽ	ब	ति	ऽ	याँऽ	ऽऽ	ऽऽ
×			०			×			०		

अन्तरा दूसरा

जावो वहीं जहां रैन गँवाई । घूँघट पट जिन खोलो ।
दुखाय मोरी अँखियाँ ।।

अन्तरा तीसरा

कृष्ण पिया पर पीर न जाने । अपनी गरज की भावे बतियाँ ।।

नोट :—दूसरा व तीसरा अन्तरे पहिले अन्तरे के समान ही गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५४

राग गारा–त्रिताल

स्थायी–

बराजोरी करत मैं ना जाऊँ दैया !
छैला पग रोके ठाड़ो ठिठोली करत मोसे ।

अन्तरा–

ऐसो ढीठ लँगरवा कबहूँ न देखो दैया !
लपक झपक कर पकरत बतियाँ करत मोसे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गारा–त्रिताल

स्थायी

गरे सा– –नी़ सा	रे ग रे –	– ग रे म	ग गरे सानी़ सा
बऽ राऽ ऽजो री	क र त ऽ	ऽ मैं ऽ ना	जा ऊँऽ दैंऽ या
३	×	२	०
सा ग रे ग	सा रे नी़ सा	रे म ग रे	सा नी़ ध़ प़
छै ला प ग	रो के ठा ड़ो	ठि ठो ली क	र त मो से
३	×	२	०
ध़ सा– –नी़ सा	रे ग रे –		
ब राऽ ऽजो री	क र त ऽ		
३	×		

अन्तरा

नी़ सा ग म	प प प प	– म नी प	ग गरे सानी़ सा
ऐ सो ठी ठ	लँ ग र वा	ऽक ब हूँ न	दे खोऽ दैंऽ या
०	३	×	२
सा ग ग ग	ग ग –ग म	ग ग म म	प ध प म
ल प क झ	प क ऽक र	प क र त	ब ति याँ क
०	३	×	२
ग रेसा नी धप	ध़ सा ऽनी़ सा		
र तऽ मो सेऽ	ब राऽजो री		
०	३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५५

राग गारा–त्रिताल

स्थायी–

मोरा सैंयाँ गारी दीनी लाखन में;
हो नन्द को छैल तोहे लाज नहिं आवे।

अन्तरा–

कब की मैं ठाड़ी माधो वृन्दावन में;
बाँसुरी की धुन सुनी कानन में ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गारा–त्रिताल

स्थायी

														सा	रे
														मो	रा
ऩी	सा	–	ग	ग	म	ग	म	रेग	–	प	म	ग	गरे	सा	रे
सैं	याँ	ऽ	गा	री	दी	ऽ	नी	लाऽ	ऽ	ख	न	मे	ऽऽ	मो	रा
०				३				×				२			
ऩी	सा	–	ग	ग	म	ग	म	रेग	गरे	प	म	ग	—	पमे	धप
सैं	याँ	ऽ	गा	री	दी	ऽ	नी	लाऽ	ऽऽ	ख	न	मे	ऽ	होऽ	ऽऽ
०				३				×				२			
म	ग	रे	सा	–	सा	सा	ऩी	सा	ग॒	रे	सा	ऩी	ध़	प़	ध़
नं	द	को	छै	ऽ	ल	तो	हे	ला	ज	न	हिं	आ	वे	मो	रा
०				३				×				२			

अन्तरा

सा	सा	ग	म	प	प	प	प	–	ग	–	म	रे	ग	सा	–
कु	व	की	मैं	ठा	ड़ी	मा	धो	ऽ	वृ	ऽ	न्दा	व	न	में	ऽ
०				३				×				२			
सा	नी॒	ध	नी॒	प॰	ध	म	प	म	ग	ग	म	मग	रे	सा	रे
बाँ	सु	री	की	धु	न	सु	नी	का		न	न	मेंऽ	ऽ	मो	रा
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५६

राग गारा-त्रिताल

स्थायी-

कन्हैया तेंने बंशी बजाई आज;
सुनत मोहे कछु नहिं सूझत;
जिया ललचत मेरो ऐसी नीकी धुन सुनन को।

अन्तरा-

या कैसी बंसी में जादू भरा है !
सबके मन हर लेत, देखत जन चकित होत है सुन्दरवा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गारा—त्रिताल

स्थायी

																ग
																क
रे	रे	ग	रे	नी	सा	—	नी	नीसा	रेसा	ध	नी	ध	—	नी	प	
न्है	या	ते	ने	बं	शी	ऽ	ब	जाऽ	ऽऽ	ई	ऽ	आ	ऽ	ज	सु	
२				०				३				×				
ध	नी	सा	सा	सा	म	ग	म	रेग	रे	नी	सा	नी	सा	ग	म	
न	त	मो	हे	क	छू	न	हिं	सू	ऽ	झ	त	जि	या	ल	ल	
२				०				३				×				
प	प	म	ग	म	नी	ध	नी	प	ध	म	धप	म	ग	रे	रे	
च	त	मे	रो	ऐ	सी	नी	की	धु	न	सु	न	न	को	ऽ	क	
२				०				३				×				

अन्तरा

सा	—	ग	म	प	—	प	प	ग	—	म	धप	ग	म	ग	—
या	ऽ	कै	सी	बं	ऽ	शी	में	जा	ऽ	दू	भऽ	रा	ऽ	है	ऽ
०				३				×				२			
म	नी	ध	नी	प	ध	म	प	—	प	म	ग	रे	नी	सा	ग
स	ब	के	म	न	ह	र	ले	ऽ	त	दे	ख	त	ज	न	च
०				३				×				२			
रे	सा	ध	नी	ध	ध	—	म	ध	नी	मा	रे	रे	रे	ग	रे
कि	त	हो	ऽ	त	है	ऽ	सुं	द	र	वा	क	न्है	या	ते	ने
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५७

राग गारा—त्रिताल

स्थायी—

म्हारे पिया परदेस गइलवा;
नाहीं पठाई मोहे पाती।

अन्तरा—

म्हारे पिया ने सुधहू न लीनी;
तलफ़त जिया मोरा उन बिन दिन रैन॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गारा—त्रिताल

स्थायी

रे	रे	ग	गरे	सा	सा	नी़	सा	नी़सा	रेग	रे	सा	ध़	नी	ध़	—
म्हा	रे	ऽ	पिऽ	य	र	प	रऽ	देऽ	ऽऽ	स	ग	इ	ल	वा	ऽ
०				३				×				२			
ग	—	ग	म	मग	रेग	सा	सा	सारे	ग	—	—	रेग	सा	ग	म
ना	ऽ	ही	प	ठाऽ	ईऽ	मो	हे	पाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तीऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

सा	—	ग	म	प	—	प	—	ग	ग	म	धप	ग	म	ग	—
म्हा	ऽ	रे	पि	या	ऽ	ने	ऽ	सु	ध	हू	नऽ	ली	ऽ	नी	ऽ
०				३				×				२			
म	नी	ध	नी	प	ध	म	प	ग	ग	म	धप	ग	म	मग	रे
त	ल	फ	त	जि	या	मो	रा	उ	न	बि	नऽ	दि	न	रैऽ	न
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५८

राग गारा-दीपचन्दो

स्थायी –

तूने काहे रंग की पिचकारी मार दई।

अन्तरा –

देखी ये सब मोरी भीजी ये चूनर सारी,
म्हारे नगर के लोगवा एक एक उठ उठ देत मोहे तारी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गारा-दीपचन्दी

स्थायी

													नी	ध़
													तू	ने
ध़	नी	—	रे	—	—	—	ग	रे	—	रेग	मग	रेग	— —
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	रं	ग	ऽ	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
×			२				०			३			
सा	रे	—	नि़	—	सा	—	ध़सा	रेग	रेरे	सानि़	सा	नी	ध़
पि	च	ऽ	का	ऽ	री	ऽ	माऽ	ऽऽ	रद	ईऽ	ऽ	तू	ने
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	सा	—	नी़सा	रेग	म	—	ग	ग	—	म	—	म	—
दे	खी	ऽ	येऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	स	ब	ऽ	मो	ऽ	री	ऽ
×			२				०			३			
सा	सा	—	ग	—	म	—	गम	पम	म	रे	म	ग	रेसा
भी	जी	ऽ	ये	ऽ	चू	ऽ	नऽ	ऽऽ	र	सा	ऽ	री	ऽऽ
×			२				०			३			
नी	ध़	नी	सा	सा	साग	रेसा	(नी) ध़	—	नी	ध़	—	—	—
म्हा	रे	न	ग	र	केऽ	ऽऽ	लो	ऽ	ग	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ध़	—	नी	ध	—	नी	—	प	ध	—	(प) म	—	प	—
ए	ऽ	क	ए	ऽ	क	ऽ	उ	ठ	ऽ	उ	ऽ	ठ	ऽ
×			२				०			३			
ग	—	ग	म	ग	म	—	(म) रे	म	—	ग	रे	नी	ध़
दे	ऽ	त	मो	ऽ	हे	ऽ	ता	ऽ	ऽ	री	ऽ	तू	ने
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५९

राग गारा—दीपचन्दी

स्थायी—

रंग भर गगरी,
रंग भर गगरी;
सिर धर लिये आये आज।

अन्तरा—

चोवा चन्दन अबीर गुलाल लगाये;
एक मुख मीजत बरजोरी आज॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गारा-दीपचन्दी

स्थायी

(सा) ग	रे	सा	सा	–	(नी) ध़	नी	सा	सा	–	सा	–	–	–
रं	ग	ऽ	भ	ऽ	र	ऽ	ग	ग	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
(सा) ग	रे	सा	ऩीसा	रेसा	नीध़	नी	सा	सा	–	सा	–	नी	ध़
रं	ग	ऽ	भऽ	ऽऽ	रऽ	ऽ	ग	ग	ऽ	री	ऽ	सि	र
×			२				०			३			
नी	रे	–	ग	–	म	–	रे	म	ग	ग	रे	सानी	सा
ध	र	ऽ	लि	ऽ	ये	ऽ	आ	ऽ	ये	आ	ऽ	जऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	–	–	ग	–	–	–	ग	–	–	म	–	म	–
चो	ऽ	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	च	ऽ	ऽ	न्द	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	–	ग	–	ग	ग	गम	गरे	सा	रे	ग	म	
अ	बी	ऽ	र	ऽ	ऽ	गु	लाऽ	ऽऽ	ल	ल	गा	ये	–
×			२				०			३			
रे	रे	–	म	–	म	–	म	प		प	–	प	–
ए	क	ऽ	मु	ऽ	ख	ऽ	मोऽ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	त	ऽ
×			२				०			३			
पम	प	प	ग	–	रे	–	नी़	–	–	सा	–	नी़	सा
बऽ	ऽ	र	जो	ऽ	री	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६०

राग झिंझोटी-त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी—

आँगन में मत सोवे री !
सुन्दर आज की रैन, तोहे चाँद गहो ना ।

अन्तरा—

मैं जो गई थी गुलाब के बाग में,
फूलों के लिए मैंने डारी झुकाई;
आई जो खोजे अँगिया बिच आली !
आन चकोरन घेर लियो है;
चंदा जानके चोंच चलाई ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग झिंझोटी–त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी

ग	-रे	ग	म	मग	सा	-	ऩी	सा	-	-	-	-	-	ग	म
आँ	ऽऽ	ग	न	मेंऽ	म	ऽ	त	सो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सो	वे
०				३				×				२			
प	-	-	-	-	-	गम	धप	म	ग	रेग	-	सा	-	ग	रे
रीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सुंऽ	दऽ	र	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ
०				३				×				२			
				रे										ऩी	
ग	म	म	ग	ग	सा	-	ऩी	सा	-	-	-	-	-	ध़	-
ज	की	रै	ऽ	ऽ	न	-	तो	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चाँ	ऽ
०				३				×				२			
म															
ग	-	-	-	-	रे	-	सा	ऩीसा	रेसा	ऩी	ध़	-	-	-	-
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	ऽ	ग	होऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे – म म	प – प –	मम –म प मप	मप धप मग रेगरे
मैं ऽ जो ग	ई ऽ थी ऽ	गुला ऽब के वाऽ	ऽऽ ऽग मेंऽ ऽऽऽ
०	३	×	२
प – म ग	रेग सा – ऩी	सा – – –	– – ऩी ध़
फू ऽ लों ऽ	ऽऽ के ऽ लि	ये ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ मैं ने
०	३	×	२
ध़ – ग॒ –	– रे – सा	ऩी सा ऩीसा रेसा	ऩी ध़ ऩी प़
डा ऽ ऽ ऽ	ऽ री ऽ झु	का ऽ ऽऽ ऽऽ	ई ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
रे – म म	प – प प	म म प प	मप धप मग रेगरे
आ ऽ ई जो	खो ऽ जे अँ	गि या बि च	आऽ ऽऽ लीऽ ऽऽऽ
०	३	×	२
रे – म म	प – प प	म – प प	मप धप मग रेगरे
आ ऽ न च	को ऽ र न	घे ऽ र लि	योऽ ऽऽ हैऽ ऽऽऽ
०	३	×	२
प – म ग	(रे)ग सा – ऩी	सा – – –	– – ध़ –
चं ऽ दा ऽ	ऽ जा ऽ न	के ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ चों ऽ
०	३	×	२
ग॒ – – रे	– सा ऩी सा	ऩीसा रेसा ऩी ध़	ऩी प़ – –
ऽ ऽ ऽ च	ऽ च ला ऽ	ऽऽ ऽऽ ई ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६१

राग झिंझोटी–दीपचन्दी

स्थायी–

जसोदा के लाल ने मेरे भर पिचकारी दई ।

अन्तरा –(१)

भर पिचकारी मुख पर मारी
छतिया धरक गई ॥

अन्तरा –(२)

हमरी न मानो पूछो सब सखियन से
गोपाल कहे सो सही ॥

अन्तरा –(३)

वृन्दावन की कुंज गलिन में
बरबस घेर लई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग झिंझोटी-दीपचन्दी

स्थायी

सा	ग	ग	म	ग	म	(ग)रे	रेग	म	म	ग	रे	सा	—
ज	सो	दा	के	ऽ	ऽ	ऽ	लाऽ	ऽ	ल	ने	ऽ	ऽ	ऽ
०			३				×			२			
ध़	सा	—	नी़	ध़	नी़	प़	प़	ध़	—	सा	—	सा	—
मे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	भ	र	ऽ	पि	ऽ	च	ऽ
०			३				×			२			
रे	सा	—	रेग	मप	—	म	ग	—	—	म	ग	म	रे
का	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽ	द	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०			३				×			२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा (१)

सा	सा	–	ग	–	म	ग	प	–	–	प	–	–	–
भ	र	ऽ	पि	ऽ	च	ऽ	का	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	–	गम	पध	प	–	ग	प	–	मग	रेग	–	–
मु	ख	ऽ	पऽ	ऽऽ	र	ऽ	मा	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	रे	सा	–	–	–	रे	सा	–	रेग	मप	–	म
छ	ति	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ध	र	ऽ	कऽ	ऽऽ	ऽ	ग
×			२				०			३			
म	–	–	म	ग	म	रे	सा	ग	ग	म	ग	म	(ग)रे
ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	सो	दा	के	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (२)

सा	सा	–	ग	–	–	म	प	प	–	प	–	प	–
ह	म	ऽ	री	ऽ	ऽ	न	मा	नो	ऽ	पू	ऽ	छो	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	–	गम	पध	प	–	ग	प	–	मग	रेग	–	–
स	ब	ऽ	सऽ	ऽऽ	खी	ऽ	य	न	ऽ	सोंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	–	रे	सा	–	सा	सा	रे	सा	–	रेग	मप	–	म
गो	ऽ	ऽ	पा	ऽ	ल	क	हे	ऽ	उ	सोंऽ	ऽऽ	ऽ	स
×			२				०			३			
ग	–	–	म	ग	म	रे	सा	ग	ग	म	ग	म	रे
ही	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	सो	दा	के	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा (३)

सा	–	–	ग	–	म	ग	प	प	–	प	–	–	–
बृ	ऽ	ऽ	न्दा	ऽ	ऽ	ऽ	व	न	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	–	–	गम	पध	प	पं	ग	प	–	मग	रेग	–	–
कुं	ऽ	ऽ	जऽ	ऽऽ	ऽ	ग	लि	न	ऽ	मेंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
ग	ग	–	सा	–	सा	–	रे	सा	–	रेग	मप	–	म
व	र	ऽ	व	ऽ	स	ऽ	घे	ऽ	ऽ	रऽ	ऽऽ	ऽ	ल
×			२				०			३			
ग	–	–	म	ग	म	रे	सा	ग	ग	म	ग	म	रे
ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	सो	दा	के	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६२

राग विहाग-त्रिताल

स्थायी-

कन्हैया, बैयाँ मुरक गई मोरी रे,
देखो देखो री देखत सब लोगवा ठाड़े;
बैयाँ मुरक गई मोरी रे।

अन्तरा-

मैं जमुना जल भरन जात थी,
आन अचानक घेरी;
जाय कहूँ जसोदा के द्वार;
बैयाँ मुरक गई मोरी रे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग–त्रिताल

स्थायी

			प	प	पमं	गम	ग	ग	म	प	म	ग	गरे	सा	ऩी
ऽ	ऽ	ऽ	क	न्हैं	याऽ	ऽवैं	याँ	मु	र	क	ग	ई	ऽऽ	मो	री
×				२				०				३			
										सां					
सा	–	–	–	–	–	सा	ऩी	प़	ऩी	सा	प	म	गरे	सा	ऩी
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दे	खो	दे	खो	री	दे	ख	तऽ	स	व
×				२				०				३			
		सां													
प़	ऩी	सा	ग	गरे	सा	गम	ग–	ग	म	प	म	ग	गरे	सा	ऩी
लो	ग	वा	ठा	ऽऽ	ड़े	वैंऽ	याँऽ	मु	र	क	ग	ई	ऽऽ	मो	री
×				२				०				३			
सा	–	–	प	प	पमं	गम	ग								
रे	ऽ	ऽ	क	न्हैं	याऽ	ऽवैं	याँ								
×				२											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

ग म ग म	प – नी^ध नी	सां सां सां सां	– सां सां –
मैं ऽ ज मु	ना ऽ ज ल	भ र न जा	ऽ त थी ऽ
०	३	×	२
नी – नी नी	नी – नी सां	सांसां नीनी^ध – –	प – गम ग
आ ऽ न अ	चा ऽ न क	घेऽ ऽऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२
सा – ग म	प – नी सां	नी – प ध	– ग गम गग
जा ऽ य क	हूँ ऽ ज सो	दा ऽ के द्वा	ऽ र वैंऽ याँऽ
०	३	×	२
ग म प म	ग गरे सा ऩी	सा – – प	प पम गम ग
मु र क ग	ई ऽऽ मो री	रे ऽ ऽ क	न्हैं याऽ ऽवैं याँ
०	३	×	२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६३

राग बिहाग–त्रिताल

स्थायी–

देखो सखी, कन्हैया रोके ठाड़ो है गैल;
पनियाँ भरन कैसे जाऊँ मोरी आली।

अन्तरा–

मैं जमुना जल भरन जात थी,
बीच में मिल गयो नन्द को छैल ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग–त्रिताल

स्थायी

प़	नी़	सा	ग	–	सा	ग	मग	प	पमं	ग	म	ग–	ग	रे	सा
दे	खो	स	खी	ऽ	क	न्है	याऽ	रो	केऽ	ठा	ड़ो	हैऽ	गै	ऽ	ल
०				३				×				२			
									मं						
सा	म	ग	म	प	प	सां	नीध	प	–	ग	म	ग	–रे	सा	नी़
प	नी	याँ	भ	र	न	कै	सेऽ	जा	ऽ	ऊँ	मो	री	ऽऽ	आ	ली
०				३				×				२			

अन्तरा

						ध									
गम	–	ग	म	प	–	नी	नी	सां	सां	सां	सां	–	रें	सां	–
मैंऽ	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	ज	ल	भ	र	न	जा	ऽ	त	थी	ऽ
०				३				×				२			
सांगं	–	गं	मं	गं	गंरें	सां	सां	प	–	मं	पप	गम	ग	रे	सानी़
बीऽ	ऽ	च	में	मि	लऽ	ग	यो	नं	ऽ	द	कोऽ	ऽऽ	छै	ऽ	लऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६४

राग बिहाग—त्रिताल

स्थायी—

कान्हा मोरी गगरिया फोरी रे,
कान्हा मोरी गगरिया फोरी रे;
देखो देखो री लँगरवा ने कीन्ही बराजोरी।

अन्तरा—

हूँ जमुना जल भरन जात थी,
बीच लँगर मोसे कीन्हीं बराजोरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग–त्रिताल

स्थायी

			सां नी
			का न्हा
प प – ग	– मप म ग	रे सा – ऩी	सा – सां नी
मो री ऽ ऽ	ऽ गग रि या	ऽ फो ऽ री	रे ऽ का न्हा
	०	३	×
प प – ग	– मप म ग	रे सा – ऩी	सा – सा ऩी
मो री ऽ ऽ	ऽ गग रि या	ऽ फ ऽ री	रे ऽ दे खो
	०	३	×
प़ ऩी सा प	म गरे सा रे	ऩी सा सा रेरे	ऩी सा सां नी
दे खो री लँ	ग रऽ वा ने	की नी ब राऽ	जो री का न्हा
२	०	३	×

अन्तरा

ग म ग म	प – नी नी	प नी नी सां	– सां सां –
हूँ ऽ ज मु	ना ऽ ज ल	भ र न जा	ऽ त थी ऽ
२	०	३	×
प नी सां मं	गं रें सां नी	प नी सां रें	नी सां प सांनी
बी ऽ च लँ	ग र मो से	की नी ब रा	जो री ऽ कान्हा
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६५

राग बिहाग–त्रिताल

स्थायी–

देखो री सखी री, काहे मोरी बैंयाँ झझकोरी ?
बराजोरी सगरी चूरियाँ फोरी । देखो ॥

अन्तरा–

हूँ तो जात थी,
कोरी कोरी मटकिया फोरी;
ऐसो नन्द को कुँवर किशोरी ॥ देखो री ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग–त्रिताल

स्थायी

			प नी
			दे खो
सां सांनीध	प ध मं प	(प) ग म	प प प नी
री स खी री ऽ ऽ	का हे मो री	वैं यां झ झ	को री दे खो
२	०	३	×
सां गं सां सांनीध	प ध मं प	मं (प) ग म	प प – सारे
री स खी री ऽ ऽ	का हे मो री	वैं यां झ झ	को री ऽ ब ऽ
२	०	३	×
सानी सा गम गग	म प सां नी	सां रें नीं प	ग म प नी
ऽ ऽ रा जोऽ ऽ ऽ	री स ग री	चु रि यां फो	ऽ री दे खो
२	०		×

अन्तरा

ग म प सां	– रें सां –	गं गं गं मं	गं रें गं सांनी
हूँ ऽ तो जा	ऽ त थी ऽ	को री को री	म ट कि या ऽ
×	२	०	३
प प ग म	ग म प प	नी – प नी	सां रें नी प
फो री ऐ ऽ	सो ऽ नं द	को ऽ कुं व	र कि ऽ शो
×	२	०	३
ग म प नी	सां गं सां सांनीध	प ध मं प	
ऽ री दे खो	री स खी री ऽ ऽ	का हे मो री	
×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६६

राग हमीर–त्रिताल

स्थायी–

मोहे छेड़त मोहन गिरधारी
डगर चलत मोहे देखो देत गारी।

अन्तरा–

मैं जमुना जल भरन जात थी
बिंदा देखो मैं हारी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग हमीर—त्रिताल

स्थायी

नी	प	नी	
सां सां ध प	मं प ग म	ध ऽ नी ध	धनी सां ध नी
छे ड़ त मो	ह न गि र	धा ऽ ऽ ऽ	रीऽ ऽ मो हे
०	३	×	२
नी	प	नी	
सां सां ध प	मं प ग म	ध – नी ध	नी सां – –
छे ड़ त मो	ह न गि र	धा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
रे ग म प	म रे सा सा	ध नी सां रें	(सां) – ध नीप
ड ग र च	ल त मो हे	दे खो दे त	गा ऽरी ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

			नी
प – सां सां	सां – सां सां	ध नी सां रें	सांनी सां ध प
मै ऽ ज मु	ना ऽ ज ल	भ र न जा	ऽऽ त थी ऽ
०	३	×	२
गंमं पं गं मं	– रें सां –	ध – – नी	सां नी ध नी
बिंऽ ऽ दा दे	ऽ खो मैं ऽ	हाऽ ऽ ऽ ऽ	री ऽ मो हे
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६७

राग सिन्दूरा–त्रिताल

स्थायी –

आज मन बस गई साँवरे की सुरतिया प्यारी प्यारी,
सखि री, मैं का कहूँ तोसे अपने जिया की व्यथा सगरी,
वाहू के देखे बिन कल न परत मैंका ।

अन्तरा –

हा हा खात तोरे पैंयाँ परत हूँ, जो पिया आन मिलावे मैंका,
हूँ तो चेरी सनद भई तेरी ।। आज मन ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सिन्दूरा-त्रिताल

स्थायी

–	नी	ध	नी	प	ध	म	प	नी	सां	–	सां	–	रें	नी	सां
ऽ	आ	ऽ	ज	म	न	ब	स	ग	ई	ऽ	सां	ऽ	व	रे	की
०				३				×				२			
												म		प	
ध	नी	ध	नी	प	ध	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	–	म	प
सू	र	ति	या	प्या	री	प्या	री	स	खि	री	मैं	का	ऽ	क	हू
०				३				×				२			
ग	–	रे	सा	रे	नी	ध	नी	प	ध	म	प	नी	नी	सां	रें
तो	ऽ	से	ऽ	अ	प	ने	जि	या	की	व्य	था	स	ग	री	ऽ
०				३				×				२			
	मं														
मं	गं	रें	सां	–	सां	नी	प	ग	ग	म	प	ग	ग	रे	सा
वा	हू	के	दे	ऽ	खे	वि	न	क	ल	न	प	र	त	मैं	का
०				३				×				२			
सा	नी	ध	नी												
ऽ	आ	ऽ	ज												
०															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नी प – नी	म प नी सां	(रे सां) गं रें – मं	गं रें सां –
हा हा ऽ खा	ऽ त तो रे	पैं या ऽ प	र त हूँ ऽ
०	३	×	२
सां – सां सां	नी – प प	ग – ग म	रे – सा –
जो ऽ पि या	आ ऽ न मि	ला ऽ वे ऽ	मैं ऽ का ऽ
०	३	×	२
म – म प	नी सां सां सां	रें गं रें सां	रें सां रें नी
हूँ ऽ तो ऽ	चे ऽ री स	न द भ इं	ते ऽ री ऽ
०	३	×	२
सां नी ध नी			
ऽ आ ऽ ज			
०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६८

राग बागेश्री–त्रिताल

स्थायी–

जाने बीर को पीर पराई ?
निसदिन पिया को मैं देत दुहाई।

अन्तरा–

व्यथा कहूँ कासे अपनी ?
सनद पिया मोरी सुध बिसराई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री–त्रिताल

स्थायी

नी		म	
ध – – पम	ग – रेसा रे	ग – रे सा	रे – सा ऽ
जा ऽ ऽ नेऽ	वी ऽ रऽ को	पी ऽ र प	रा ऽ ई ऽ
०	३	×	२
सां	म	म	
पध नी – धप	ग – रेसा रे	ग – रे सा	रे – सा –
जाऽ ऽ ऽ नेऽ	वी ऽ रऽ को	पी ऽ र प	रा ऽ ई ऽ
०	३	×	२
नी सा रे म	प धध म प	प रें –सां सां	सांध (सां) नीध पध
नि स दि न	पि याऽ को मैं	दे ऽ ऽत दु	हाऽ ऽ ईऽ ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म म – प	सां नीसां सां –	सांरें गं रें सां	सांनी (सां) नी ध
व्य था ऽ क	हूँ ऽऽ का ऽ	सेऽ ऽ ऽ ऽ	अऽ प नी ऽ
०	३	×	२
ध ध ध ध	पध नी ध म	म म प ध	ग – रे सा
स न द पि	याऽ ऽ मो री	सु ध बि स	रा ऽ ई ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६९

राग अड़ाना–सूल ताल

स्थायी–

छाइस तेरे री तनमन–
मथ मद अब,
थिरहु बैठ गृह अपने,
वीर सुन्दरी री !

अन्तरा–

कोऊ रसिया की दृष्टि परे
जनि, मोरा जिय घबराये;
नंद ललन रस रूप लुटेरो,
जानत सब बृज़ नगरी रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अड़ाना–सूल ताल

स्थायी

सां	–	नी	प	नी	म	प	–	ग	म
छा	ऽ	इ	स	ते	ऽ	रे	ऽ	री	ऽ
×		०		२		३		०	
म	म	रे	सां	रे	रें	सा	सा	नी	सा
त	न	म	न	म	थ	म	द	अ	ब
×		०		२		३		०	
रे	म	प	नी	म	प	नी	सां	रें	रें
थि	र	हु	बै	ऽ	ठ	गृ	ह	अ	प
×		०		२		३		०	
सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	प	म	प
ने	बी	ऽ	र	सुं	ऽ	द	री	ऽ	री
×		०		२		३		०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	नी	प	नी	–	सां	सां	नी	सां
को	ऊ	र	सि	या	ऽ	की	ऽ	दृ	ऽ
×		०		२		३		०	
रें	सां	रें	–	सां	सां	नी	सां	गं	मं
ष्टि	प	रे	ऽ	ज	नि	मो	ऽ	रा	ऽ
×		०		२		३		०	
रें	रें	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	प
जि	य	घ	व	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ
×		०		२		३		०	
म	–	म	म	म	म	म	म	रे	–
नं	ऽ	द	ल	ल	न	र	स	रू	ऽ
×		०		२		३		०	
म	म	प	–	प	–	प	–	रें	रें
प	लु	टे	ऽ	रो	ऽ	जा	उ	न	त
×		०		२		३		०	
सां	नी	सां	सां	नी	प	नी	म	पम	प
स	व	वृ	ज	न	ग	री	ऽ	रेऽ	ऽ
×		०		२		३		०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७०

राग अड़ाना—झपताल

स्थायी—

मेरी सुनो श्याम, छाड़ो अचरवा;
कहा मान ले प्यारे, हूँ तेरी चेरी ।

अन्तरा—

जाने नाहीं देत मोहे ढीठ लँगरवा;
बिन्दा कहत नाहीं माने श्याम मेरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अड़ाना—झपताल

स्थायी

सां					रें				
नी	–	सां	–	रें	नी	सां	नी	म	प
मे	ऽ	री	ऽ	सु	नो	ऽ	श्या	ऽ	म
×		२			०		३		
म									
ग	–	ग	म	प	ग	म	रे	–	सा
छाँ	ऽ	ड़ो	ऽ	अ	च	र	वा	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
सा	सा	म	–	म	नीप	मप	ग	म	म
क	हा	मा	ऽ	न	लेऽ	ऽऽ	प्या	ऽ	रे
×		२			०		३		
नी	–	सां	–	रें	नी	सां	नी	म	प
हूँ	ऽ	ते	ऽ	री	चे	ऽ	री	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

		नी							
म	प	ध	–	नी	सां	नी	सां	–	सां
जा	ने	ना	ऽ	ही	दे	त	मो	ऽ	हे
×		२			०		३		
				सां					
नी	सां	नीसांरें	–	सां	नी	सां	नी	म	प
ढी	ऽ	ठऽऽ	ऽ	लँ	ग	र	वा	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
मं	मं								
गं	–	गं	–	मं	रें	रें	सां	–	सां
बिं	ऽ	दा	ऽ	क	ह	त	ना	ऽ	ही
×		२			०		३		
नी	नी	सां	–	रें	नी	सां	नी	म	प
मा	ने	श्या	ऽ	म	मे	ऽ	री	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७१

राग शहाना-त्रिताल

स्थायी-

जाने दे मैंका सुनो सजनवा,
काहे करत तुम नित नित हम सन रार ?
नाहीं नाहीं मानूंगी अब मैं तोरी।

अन्तरा-

छेड़ करत नहीं माने,
बराजोरी करत गहे लीनी श्याम मोहे,
बिन्दा कहत तुम नित नित हम सन रार,
नाहीं नाहीं मानूँगी अब मैं तोरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शहाना–त्रिताल

स्थायी

सा	म	ग	म	प	–	प	–	नी	प	–	नी	प	म	ध	रे
जा	ने	ऽ	दे	मैं	ऽ	का	ऽ	सु	नो	ऽ	स	ज	न	वा	ऽ
०				३				×				२			
सा	म	ग	म	प	प	प	प	प	प	रें	रें	सां	सां	रे	सां
का	हे	ऽ	क	र	त	तु	म	नि	त	नि	त	ह	म	स	न
०				३				×				२			
नी	ध	नी	म	प	ध	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा	नी
रा	ऽ	ऽ	र	ना	हीं	ना	हीं	मा	नो	गी	अ	ब	मैं	तो	री
०				३				×				२			

अन्तरा

म	–	म	प	नी	नी	नी	नी	सां	–	–	–	नी	–	प	–
छे	ऽ	ड़	क	र	त	न	हीं	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ने	ऽ
०				३				×				२			
म	म	म	प	नी	नी	नीसां	रें	सांरें	गं	गं	रें	–	रें	सां	सां
व	रा	जो	री	क	र	गऽ	हे	लीऽ	ऽ	नी	श्या	ऽ	म	मो	हे
०				३				×				२			
म	–	म	प	नी	नी	सां	सां	प	प	रें	रें	सां	सां	रें	सां
विं	ऽ	दा	क	ह	त	तु	म	नि	त	नि	त	ह	म	स	न
०				३				×				२			
नी	ध	नी	म	प	ध	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा	नी
रा	ऽ	ऽ	र	ना	हीं	ना	हीं	मा	नो	गी	अ	ब	मैं	तो	री
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७२

राग मिश्र तिलक कामोद–ताल पंजाबी

स्थायी–

रात सैयाँ बिन नींद न आवे रे!
तलफ तलफ सारी रैन गँवाई रे !

अन्तरा–

ऊधो जी, तुम कहियो सँदेसा,
प्रीतम पिया बात बनाई रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मिश्र तिलक कामोद–ताल पंजाबी

स्थायी

सारे	ग	रे	प	मग	रेग	-सा	नीसा	रे	–	रे	ग	गम	प,धप	मग	रेग
राऽ	ऽ	त	सैं	याऽ	ऽऽ	ऽवि	नऽ	नीं	ऽ	द	न	आऽ	वे,ऽऽ	रेऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

गम	गमपध	नीसां	नीनी	सांनीधप	–	ध	प	गपधसां	नीधनी	ध	प
तल	फऽऽऽ	ऽऽ	तल	फऽऽऽ	ऽ	सा	री	रैंऽऽऽ	ऽऽऽ	न	ग
०				३				×			

गम	प,धप	मग	रेग
वाऽ	ईं,ऽऽ	रेऽ	ऽऽ
२			

अन्तरा

												ध		नी	
गम	गम	प	–	पधपध	नीसां	नी	–	पप	नीनी	नी	सां	नी	–	सां	–
ऊऽ	धोऽ	जी	ऽ	तुऽऽऽ	ऽऽ	म	ऽ	कहि	योसैं	दे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

प	नी	नीनी	धनी,सां	सांनीधप	प	धध	प	गपधसां	नीधनी–	ध	प
ऽ	ऽप्री	तमृपि	याऽ,ऽ	ऽऽऽऽ	से	कहि	यो	बाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	त	ब
०				३				×			

गम	प,धप	मग	रेग
नाऽ	ईं,ऽऽ	रेऽ	ऽऽ
२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७३

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी—

दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी ?
तलफ तलफ निकसो जात पिया बिन जिया,
नाहीं परत एक घड़ी पल कल ।। दुखवा मैं ।।

अन्तरा—

ना जानूं कवन देस बिलम रहे,
प्रेमदास कौन सौतन बैरन भई?
अब एरी सखी, बीती मोहे सगरी रैन तारे गिन गिन ।। दुखवा मैं ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी

प़	नी़	सा	सा	(रे)ग	रे	प	म	ग	गरे	सा	रे	नी़	नी़	सा	–
दु	ख	वा	मैं	का	ऽ	से	क	हूँ	ऽऽ	मो	री	स	ज	नी	ऽ
२				०				३				×			
रे	रे	म	म	प	प	प	नी	नी	सां	(रें)–	सां	नी॒	ध	प	म
त	ल	फ	त	ल	फ	नि	क	सो	जा	ऽ	त	पि	या	बि	न
२				०				३				×			
ग	रे	रे	नी॒	ध	नी॒	प	ध	म	प	ग	म	रे	ग	नी़	सा
जि	या	ना	ऽ	हीं	प	र	त	ए	क	घ	ड़ी	प	ल	क	ल
२				०				३				×			
रे	गरे	सानी़	सा												
दु	खऽ	वाऽ	मैं												
२															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म रे – म –	नी प – प नी	नी सां – सां	नी ध प म
ना ऽ जा ऽ २	नू ऽ क व ०	न दे ऽ स ३	वि ल म र ×
ग रे रे प	म ग – सा	ग रे प म	ग सा – –
है ऽ प्रे ऽ २	म दा ऽ स ०	कौ न सौ त ३	न बै ऽ ऽ ×
रे नी़ सा सा	सा सा रे –	म म प –	म प नी –
र न भ ई २	अ व ए ऽ ०	री स खी ऽ ३	बी ऽ ती ऽ ×
नी नी नी सां	नी (सां) – सां	नीसां रें नी –	ध प म ग
मो हे स ग २	री रै ऽ न ०	ताऽ ऽ रे ऽ ३	गि न गि न ×
रे गरे सानी़ सा			
दु खऽ वाऽ मैं २			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७४

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी–

ऐसो ढीठ लँगर मोरी बैंयाँ मरोरी ।।ऐसो।।

अन्तरा (१)–

जात रही जल भरन जमुना तट;
बीच लँगर ठाड़ो वो नटखट !
औचकि आये,धाये,मोरी चट सिर की गागर फोरी ।।ऐसो।।

अन्तरा (२)–

झपट चीर मोहे कियो उघारी;
मुख चूमें बैंयाँ गरे डारी;
छतियाँ धर अँगिया धर फारी और मोतिन लर तोरी ।।ऐसो।।

अन्तरा (३)

हाँ हाँ कर लागूँ मैं पैंयाँ;
बार बार सखि लेहुँ बलैयाँ;
निरदैया वो एक न माने नानक नेक निहोरी ।।ऐसो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी

सा रे
ऐ सो

प – प पध	मग रेग –म पध	ग प ग म	मग रेग –सा रे
ठी ऽ ठ लँऽ	गऽ रऽ ऽमो रीऽ	बैं ऽ याँ म	रोऽ रीऽ ऽऐ सो
×	२	०	३

अन्तरा (१)

गम गम पप नीनी	नीनी नीनी नीनी सांसां	प– नीनी नीनी नी–
जाऽ तर हीऽ जल	भर नज मुना तट	बीऽ चलँ गर ठाऽ
×	२	०

धनीसां नीसां धनी पप
ड़ोऽऽ वोऽ नट खट
३

प– नीनी नी– सांसां	नीध प– प– सांसां	प ध– पध पम
औऽ चकि आऽ येधा	ऽये मोऽ रीऽ चट	सिर कीऽ गाऽ गर
×	२	०

मग रेग –सा रे
फोऽ रीऽ ऽऐ सो
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (२)

गम	गम	पप	नीनी	नीनी	–नी	नी–	सां–	पप	नी–	नी–	नी–
झप	टची	ऽर	मोहे	कियो	ऽउ	घाऽ	रीऽ	मुख	चूऽ	मेंऽ	बैंऽ
×				२				०			
धनीसां	नीसां	धनी	प								
याँऽऽ	गरे	डाऽ	री								
३											

पप	नी–	सांसां	नीध	नी–	धप	प–	धसां	धसां	नीध	पध	पम
छति	याँऽ	धर	अँगि	याऽ	धर	फारी	रीऽ	और	मोऽ	तिन	लर
×				२				०			
मग	रेग	–सा	रे								
तोऽ	रीऽ	ऽऐ	सो								
३											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (३)

गम	गम	पप	नी–	नी	नी	नी	सां	प–	पनी	–नी	नीनी
हाँऽ	हाँऽ	कर	लाऽ	गूँ	मैं	पैं	याँ	वाऽ	रवा	ऽर	सखि
×				२				०			

धनीसां	नीसां	धनी	प–
लेऽऽ	हुँव	लैऽ	याँऽ
३			

पप	नीं–	सां–	सां–	धसां	नीध	प–	धनीसां	धसां	नीध	पध	पम
निर	दैऽ	याऽ	वोऽ	एऽ	कन	माऽ	नेऽऽ	नाऽ	नक	नेऽ	कनि
×				२				०			

मग	रेग	–सा	रे
होऽ	रीऽ	ऽऐ	सो
३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७५

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी –

छाँड़ो बैंयाँ मोरी घर जाने दे;
न कर जोरा-जोरी, बँगरी मोरी मरोरी;
लोग देखेंगे आँख रे !

अन्तरा –

अगल बगल सुने सास ननँद मोरी;
हम्से लड़ाय आये मारने को तत्काल;
करूँगी उपाय क्या नंदा जू के नन्दलाल?
इतनी अरज सुन ले ।। छाँड़ो बैंयाँ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी

रे	ग	म	प	म	ग	रे	म	ग	रे	–	ऩी	सा	–	–	सा
छाँ	ड़ो	बैं	याँ	मो	री	ऽ	घ	र	जा	ऽ	ने	दे	ऽ	ऽ	न
२				०				३				×			
ऩी	सा	ऩी	सा	रे	रे	–	रे	रे	ग	म	प	धप	मग	रेग	–
क	र	जो	रा	जो	री	ऽ	बैं	ग	री	मो	री	मऽ	रोऽ	रीऽ	ऽ
२				०				३				×			
ग	म	ग	म	प	–	सां	–	प	प	ध	प	मग	रेग	–	–
लो	ऽ	ग	दे	खें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	आँ	ऽ	ख	रेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म ग म	प प नी नी	प – नी नी	सां नी सां सां
अ ग ल व	ग ल सु नें	सा ऽ स न	नँ द मो री
०	३	×	२
प – नी नी	नी नी नी नी	धनी सां नी सां	नीध नी प प
ह ऽ म्से ल	ड़ा य आ ये	माऽ ऽ नें को	तऽ ऽ त्का ल
०	३	×	२
ग म ग म	प प नी –	नी सां नी (सां)	नी ध प प
क रूँ गी उ	पा य् क्या ऽ	नं द जू के	न न्द ला ल
०	३	×	२
ग ग ग ग	रे ग म धप	म – ग –	रे ग म प
इ त नी अ	र ज सु नऽ	ले ऽ ऽ ऽ	छाँ ड़ो बैं याँ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७६

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी—

चुभी गई जिया बिच प्यारे छबि तिहारी;
नैंना रतनारे मतवारे मारत बान ।

अन्तरा—

सनद पिया घायल कर डारत;
जित चितवत भौंहें तान ॥ चुभी गई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तिलक कामोद–त्रिताल

स्थायी

पम (प) मग म	गरे (ग) –सा नी	प नी सा रे	म ग – सारे
चुऽ भी ऽग ई	जिऽ या ऽवि च	प्या रे छ बि	ति हा ऽ रीऽ
०	३	×	२
रे रे म म	प प –ध सां	नी धप पध म	म मग रेसा रे
नै ना र त	ना रे ऽम त	वा रेऽ माऽ र	त वाऽ ऽऽ न
०	३	×	२

अन्तरा

रे रे म म	प – म प	नी नी नी नी	सां – सां सां
स न द पि	या ऽ घा ऽ	य ल क र	डा ऽ र त
३	×	२	०
सां नीसांरें सां नी	ध प पध नीध	धप मग रेसा रे	पम (प) मग म
जि तऽऽ चि त	व त भौंऽ ऽऽ	हेंऽ ताऽ ऽऽ न	चुऽ भी ऽग ई
३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७७

राग देस–ताल दीपचन्दी

स्थायी–

दई पिया बिन कैसे रतियाँ भईं भारी ?
छिन ना परत चैन अकुला गई !

अन्तरा–

छिन छिन कटे न रैन;
और दुखत नैन;
इतनो निठुर मोरी सुध ना लई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस–ताल दीपचन्दी

स्थायी

								ध					
सां	नी	–	ध	–	प	–	म	प	धप	मग	पम	गरे	–
दई	ऽ	ऽ	पि	ऽ	या	ऽ	बि	ऽ	नऽ	कैऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽ
×			२				०			३			
रे	रे	–	रे	ग	रे	सा	रेनी	–	–	सा	–	–	–
र	ति	ऽ	याँ	ऽ	भ	ई	भाऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			२				०			३			
सा	सा	–	रेग	म	ग	रे	रे	म	म	प	–	प	–
छि	न	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	र	त	चै	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
सां	सां	–	सां	नी	रेंसां	रें	नी	–	–	ध	प	–	–
अ	कु	ऽ	ला	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ई	ऽ	ऽ
×			२				०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

म	म	–	प	–	नी	–	नी	सां	नी	सां	–	सां	–
छि	न	ऽ	छि	ऽ	न	ऽ	क	टे	न	रै	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
नी	–	सां	रें	–	ग॒	रे	सांनी	सां	–	नी॒	–	प	–
औ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	दु	खऽ	त	ऽ	नै	ऽ	न	ऽ
×			२				०			३			
ग	मं	–	(मं)रें	–	–	–	रेंनी	नी	नी	सां	–	सां	–
इ	त	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ	निऽ	ठु	र	मो	ऽ	री	ऽ
×			२				०			३			
प	प	–	न	सां	रें	–	नी॒	–	–	ध	–	प	–
सु	ध	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ई	ऽ
×			२				०			३			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७८

राग देस–त्रिताल

स्थायी–

हो श्याम मोरी बैंयाँ गहो ना !
बैंयाँ गहो ना, मोसे बतियाँ करो ना । हो श्याम ।

अन्तरा–

हूँ तो नारी पराये घरन की;
हमरे भरोसे गुपाल रहो ना ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस–त्रिताल

स्थायी

			सां
धप म ग म	गरे ग सा –	रे रे म –प	मप धनी ध प
होऽ श्या ऽ म	मोऽ ऽ री ऽ	बैं ऽ याँ ऽग	होऽ ऽऽ ना ऽ
०	३	×	२
म प नी नी	नी नी नी सां	नी धप म –म	पध सांनी धप –
बैं ऽ याँ ग	हो ना मो से	ब तिऽ याँ ऽक	रोऽ ऽऽ नाऽ ऽ
०	३	×	२
पध म ग म			
होऽ श्या ऽ म			
०			

अन्तरा

म – म प	नी – सां –सां	प – नी –नी	नी सांनी नीसां रें
हूँ ऽ तो ऽ	ना ऽ री ऽप	रा ऽ ये ऽध	र नऽ कीऽ ऽ
०	३	×	२
नी नी नी –नी	धनी सांनी धप –प	म – प –प	मप धप मग रे
ह म रे ऽभ	रोऽ ऽऽ सेऽऽगु	पा ऽ ल ऽर	होऽ ऽऽ नाऽ ऽ
०	३	×	२
पध म ग म			
होऽ श्या ऽ म			
०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७९

राग देस मल्हार–त्रिताल

स्थायी–

घन गगन घन घुमड़ कीनो,
आली री, बिन श्याम करन लागे,
बिरहा बेहाल । घन ॥

अन्तरा–

जो घन चलत पवन पुरवैया;
मन अनंद बिसराये;
मघवा झर–झर लागे रे !
चमकत चपलाई दुखदाई आनंद बढ़ाई;
इन बातन बृजराजदास पाती न पठाई;
बिसराई सुध नन्दलाल ॥ घन गगन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस मल्हार–त्रिताल

स्थायी

			ग रे
			घ न
म ग रे नी़	सा रे रे ग	म – प धप	म – ग म
ग ग न घ	न घु म ड़	की ऽ ऽ ऽऽ	नो ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
रे ग॒ रे सा	रे नी़ सा सा	नी सा सा सा	नी़ सा रेग म
आ ऽ ली ऽ	री ऽ बि न	श्या ऽ म क	र न लाऽ ऽ
०	३	×	२
ग रे – –	मं म प –	मप धप म –	गं गम ग रे
गे ऽ ऽ ऽ	वि र हा ऽ	वेऽ ऽऽ हा ऽ	ऽ ऽल घ न
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	–	ग	रे	म	ग	रे	सा	ऩी	सा	सा	सा	रेग	म	ग	रे
जो	ऽ	घ	न	च	ल	त	प	व	न	पु	र	वैऽ	ऽ	या	ऽ
२				०				३				×			
रे	रे	रे	म	–	म	म	म	प	–	प	–	म	म	प	–
म	न	अ	नं	ऽ	द	बि	स	रा	ऽ	ये	ऽ	म	घ	वा	ऽ
२				०				३				×			
म	म	प	प	मप	धप	म	ग	रे	–	–	–	म	म	म	प
क्ष	र	क्ष	र	लाऽ	ऽऽ	गे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	च	म	क	त
२				०				३				×			
नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	सां	नी	सां	सां	प	प
च	प	ला	ई	दु	ख	दा	ई	आ	नं	द	व	ढा	ई	इ	न
२				०				३				×			
प	–	नी	नी	नी	नी	सां	–	नी	सां	–	सां	सां	–	नीसां	रें
वा	ऽ	त	न	वृ	ज	रा	उ	ज	दा	ऽ	स	पा	ऽ	तीऽ	ऽ
२				०				३				×			
सां	रें	नी	–	ध	प	प	प	रें	–	सां	–	नी	ध	प	म
न	प	ठा	ऽ	ई	ऽ	बि	स	रा	ऽ	ई	ऽ	सु	ध	न	न्द
२				०				३				×			
मग	रेरे	ग	रे	म	ग	रे	ऩी	सा	रे	रे	ग	म	–	प	धप
लाऽ	ऽल	घ	न	ग	ग	न	घ	न	घु	म	ड़	की	ऽ	ऽ	ऽऽ
२				०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८०

राग तिलंग—त्रिताल

स्थायी—

फुलवा बीनन चली एजी भला !

अन्तरा—

इश्क की बगिया में—
गूँजत भँवरा रे !
छतियाँ विकल करी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तिलंग–झपताल

स्थायी

सां नी सां नी	प म ग म	ग — — सा	ग म पनी पम
फु ल वा बी	ऽ न न च	ली ऽ ऽ ए	जी ऽ भऽ लाऽ
०	३	×	२

अन्तरा

			प नी
म ग म	प प नी —	सां — — —	नी — सां —
ऽ इ श्क की	ब गि या ऽ	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
प नी सां	सांरें सांसां नी —	प — मप मम	ग — — —
ऽ गूँ ज त	भँऽ वऽ रा ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
सा सा ग म	पनी मप नीनी सां	सां — — —	नी — प —
छ ति याँ ऽ	विऽ कऽ लऽ क	रीऽ ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८१

राग तिलंग–त्रिताल

स्थायी–

राधे, जमुना के तीर;
अकेली मत जैयो जमुना के तीर।

अन्तरा–

राह बाट में ठग लागत है–
नन्द को ढोटा अहीर ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तिलंग–त्रिताल

स्थायी

प	नी	सां	नी	प	ग	–	म	ग	–	–सा	सा	सा	सा	ग	म
रा	धे	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	के	ती	ऽ	ऽर	अ	के	ली	म	त
०				३				×				२			
							प								
पनी	मप	गम	नी	प	ग	–	म	ग	–	–	–	–	सा	ग	म
जैऽ	योऽ	ऽऽ	ज	मु	ना	ऽ	के	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	म	प	नी	सां	नी	सां	–	प	नी	(सां)	सां	नी	प	म	ग
रा	ऽ	ह	वा	ऽ	ट	में	ऽ	ठ	ग	ला	ऽ	ग	त	है	ऽ
०				३				×				२			
						रें									
सा	–	ग	म	पनी	मप	नी	सां	नी	–	प	–	म	–	ग	म
नं	ऽ	द	को	ढोऽ	ऽऽ	टा	अ	ही	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८२

राग कौशिया–ताल पंजाबी

स्थायी—

आये मोहनवा मोरे भवनवा
धन धन हमरे भाग धन धनवा ।

अन्तरा –[१]

शुभ घड़ी शुभ दिन आये मोहनवा,
भाजि गये घर के दुरजनवा ॥

अन्तरा –[२]

पाये मोहनवा, भयो रे अनँदवा !
वारी डारूँ सब तन मन धनवा ॥

नोट :–मध्यम को षड्ज मान कर इस गीत को गाइए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कौशिया–ताल पंजाबी

स्थायी

(नी) प	~	नी	नी	सानी	(सा)	सानी	धनी	सा	–	सा	सा	सां	रे	सानी	धनी
आ	ऽ	ये	मो	हऽ	न	ऽवा	ऽऽ	शो	ऽ	रे	भ	व	न	वाऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

						सा		रे							
नी	सा	रे	रे	रे	रे	रेग	रेरे	सासा	सा	–रे	ग	सा	रे	सारे	सा–
ऽध	न	ध	न	ह	म	रेऽ	ऽऽ	ऽभा	ग	ऽध	न	ध	न	वाऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा [१]

सा रे सा ग	ग ग म ग	–ग मग मग रे	ग रेग रेरे सानी
शु भ घ ड़ी	शु भ दि न	ऽआ येऽ ऽमो ह	न वाऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

नी			रे
सासा – रे रे	रे ग –म प	म ग– रेसा सा	रे ग सारे सासा
ऽभा ऽ जि ग	ये ऽ ऽध र	के ऽऽ ऽदु र	ज न वाऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा [२]

सा रे सा ग	ग ग ग –	–ग ग मग मग	रे ग रेग रेरे
ऽपा ऽ ये मो	ह न वा ऽ	ऽभ यो रेऽ ऽअ	नँ द वाऽ ऽऽ
०	३	×	२

नी	ग		
सा – रे रे	रे ग म प	म गरे सा सा	रे ग सारे सानी
वा ऽ री डा	रूँ ऽ स ब	त नऽ म न	ध न वाऽ ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८३

राग भैरवी-त्रिताल

स्थायी-

कान्हाँ मोरे द्वारे बंसिया बजाए,
व्याकुल भई राधा गोरी ।

अन्तरा-

बाँसुरी की धुन सुन
भई रे बावरी !
तलफ-तलफ जिया जाय ॥ कान्हा मोरे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी

ग रे –ग म	गरे (ग) रेसा नीसा	गरे ग सा रे	सा – सा –
का न्हा ऽमो रे	द्वाऽ ऽ रेऽ ऽऽ	बंऽ सि या व	जा ऽ ए ऽ
२	०	३	×
ध सा –रे ग	सा ग रेसा नीसा	गरे (ग) सा रे	सा – सा –
का न्हा ऽमो रे	द्वा ऽ रेऽ ऽऽ	बंऽ सि या ब	जा ऽ ए ऽ
२	०	३	×
– – – –	प – प –	ध प म प	मप ध प म
ऽ ऽ ऽ ऽ	व्या ऽ कु ल	भ ई रा ऽ	धाऽ ऽ गो री
२	०	३	×
ग रे –ग म	गरे (ग) रेसा नीसा		
का न्हा ऽमो रे	द्वाऽ ऽ रेऽ ऽऽ		

अन्तरा

ग म ध नी	सां सां रें सां	नी नी सां नीसांरें	नीसां ध प –
बाँ सु री की	धु न सु न	भ ई रे बाऽऽ	ऽऽ व री ऽ
०	३	×	२
प प प प	प प मप नी	ध – ध पम	ग रे –ग म
त ल फ त	ल फ़ ऽजि या	जा ऽ ऽ ऽय	का न्हा ऽमो रे
०	३	×	२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८४

राग भैरवी–झपताल

स्थायी—

कटत नहीं सजनी !
पिया बिन सगरी रैन,
देखो सखी, आज रतनारे भये नैन ।

अन्तरा—

आवो मेहेरबान आन मिलो;
दरस दिखाओ अपने, बलम बिन;
परत नाहीं मोहे चैन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी–झपताल

स्थायी

सा	सा	सा	रे	नी	ग	ग	गम	पध	पम
क	ट	त	न	हीं	स	ज	नीऽ	ऽऽ	ऽऽ
×		२			०		३		
ग	रे	ग	ग	पम	रेग	रेसा	सा	–	सा
पि	या	वि	न	सऽ	गऽ	रीऽ	रै	ऽ	न
×		२			०		३		
प	–	प	–	(नी)ध	पम	प	ग	–	ग
दे	ऽ	खो	ऽ	स	खीऽ	ऽ	आ	ऽ	ज
×		२			०		३		
सा	ग	साग	मप	म	गरे	ग	रे	सा	सा
र	त	नाऽ	ऽऽ	रे	भऽ	ये	नै	ऽ	न
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ध	—	नी	सां	सां	रें	सां	सां
आ	ऽ	वो	ऽ	में	हे	र	बा	ऽ	न
×		२			०		३		
नी	—	सांरें	गं	रें	सांनी	सां	ध	प	—
आ	ऽ	नऽ	ऽ	ऽ	मिऽ	ऽ	लो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग	म	गम	प	म	गरे	ग	रे	सा	—
द	र	सऽ	ऽ	दि	खाऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ग	म	नी ध	—	नी	सां	सां	रें	सां	—
अ	प	ने	ऽ	व	ल	म	बि	न	ऽ
×		२			०		३		
नी	नी	नी	रें	सांनी	ध	प	म	—	म
प	र	त	ना	हीऽ	मो	हे	चै	ऽ	न
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८५

राग भैरवी–त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी –

गोरी दरवजवा ठाड़ी रहूँ,
हो पिया के अवन की भई बिरिया री ।

अन्तरा –

धाव पिया को बेगि बुलैयो,
निकसो ही जात जिया बिन देखे पिया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग भैरवी–त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी

ध सा – रेग	सा रे सानी सा	गरे (ग) सा रे	सा – – –
गो री ऽ दर	व ज वाऽ ऽ	ठाऽ ऽ ड़ी र	हूँ ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
– – नीसा गम	पध पप प प	प (ध) प –	गप पध ध– पधपम
ऽ ऽ होऽ ऽऽ	ऽऽ पिया के अ	व न की ऽ	भई बिरि याऽ गोऽऽऽ
२	०	३	×
गमप म गरे ग	सा रे सानी सा	गरे (ग) सा रे	सा – – –
ऽऽऽ री दऽ र	व ज वाऽ ऽ	ठाऽ ऽ ड़ी र	हूँ ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×

अन्तरा

– गम ध नी	सां नीसां सां –	– नी सां सां	रेंसां नीसां ध प
ऽ धाऽ व पि	या ऽऽ को ऽ	ऽ वे गि बु	लैऽ ऽऽ यो ऽ
३	×	२	०
– गग प ध	प – ध सांनी	धप ध पम प	म – म ग
ऽ निक सो ही	जा ऽ त जिऽ	याऽ ऽ बिऽ न	दे ऽ खे पि
३	×	२	०
मप ध – –	पध पम गम प	म – गरे ग	सा रे सानी सा
याऽ ऽ ऽ ऽ	गोऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	री ऽ दऽ र	व ज वाऽ ऽ
३	×	२	०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८६

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी -

बाट चलत मोरी चुनरी रँग डारी रे !
कैसो है बेदरदी बनवारी ?
कैसो है निडर डरत न काहू से लँगर;
अपनी धींगाधींगी है करत रहत;
हे मोरे राम, हे मोरे राम, हे मोरे राम !

अन्तरा—

इतने दिनन मोसे कबहूँ न अटक्यो;
नित उठ जात भवन में;
कुँवर कान्ह खेलत फाग मोसे;
हे मोरे राम, हे मोरे राम, हे मोरे राम ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी

सा – सा प	प प ध नी	ध प म ध	प ग – म
बा ऽ ट च	ल त मो री	चु न री रँ	ग डा ऽ री
×	२	०	३
गम पध मप –	ग रे ग म	गरे ग – सा	रे सा – सा
रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	कै सो है बे	दर दी ऽ व	न वा ऽ री
×	२	०	३
नी स ग म	प प ग म	प प प सां	नी ध प प
कै सो है नि	ड र ड र	त न का हू	से लँ ग र
×	२	०	३
ध सां नी सां	नी सां नी ध	प म ग रे	सा सा सा सां
ध प नी धीं	गा धीं गी है	क र त र	ह त हे मो
×	२	०	३
नी सां – सां	ध नी ध नी	– नी ध म	ग रे सा सा
रे रा ऽ म	हे मो रे रा	ऽ म हे मो	रे रा ऽ म
×	२	०	३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ध	नी	सां	सां	रें	सां	नी	नी	सां	सां	रे	सांनी	ध	प
इ	त	ने	दि	न	न	मो	से	क	ब	हुँ	न	अ	टऽ	क्यो	ऽ
२				०				३				×			
ध	गं	रें	गं	सां	रें	नी	सां	(नी) प	ध	प	–	प	सां	नी	सां
नि	त	उ	ठ	जा	ऽ	त	भ	व	न	में	ऽ	कुँ	व	र	का
२				०				३				×			
–	सांनी	ध	नी	ध	नी	–	ध	प	म	म	सां	नी	सां	–	सां
ऽ	न्हऽ	खे	ल	त	फा	ऽ	ग	मो	से	हे	मो	रे	रा	ऽ	म
२				०				३				×			
ध	नी	ध	नी	–	नी	ध	म	ग	रे	सा	सा	सा	–	सा	प
हे	मो	रे	रा	ऽ	म	हे	मो	रे	रा	ऽ	म	बा	ऽ	ट	च
२				०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८७

राग भैरवी-त्रिताल

स्थायी—

गुजरी गागर भरने चली,
लँगरवा ढीठ मग रोकत ठाड़ो ।

अन्तरा—

कौने गाँव की थी ऐसी गुजरी ?
नैनों के सैन करत;
प्यारी प्यारी न्यारी न्यारी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी

नी सा ग म	प – ध प	ध प पध नी	ध प – प
गु ज री ऽ	गा ऽ ग र	भ र नेऽ ऽ	च ली ऽ लँ
३	×	२	०
ध प ग म	पध नी ध प	ग ग प म	ग रे सा रे
ग र वा ऽ	ढीऽ ऽ ठ म	ग रो क त	ठा ऽ ढ़ो ऽ
३	×	२	०

अन्तरा

ग म ध नी	सां – रें सां	नी – सां सां	रें सां नी ध प
कौ ऽ ने ऽ	गाँ ऽ व की	थी ऽ ऐ सी	गु ज री ऽ
०	३	×	२
प – प प	ध प ग म	प नी ध प	ग ग प म
नै ऽ नो के	सै ऽ न क	र त प्या री	प्या री न्या री
०	३	×	२
ग रे सा रे	नी सा ग म	प – ध प	
न्या ऽ री ऽ	गु ज री ऽ	गा ऽ ग र	
०	३	×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८८

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी—

बाँसुरी बाज रही धुन मधुर,
कन्हैया खेलत गावत होरी।

अन्तरा—

जिन जावो सखियन संग;
नीलजा वो तो नटखट तट तट;
अंग बोरी ना छोरी होरी ॥ बाँसुरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी

नी	सा	ग	म	प	–	प	ध	प	–	ग	म	प	नी	प	ध
बाँ	सु	री	ऽ	वा	ऽ	ज	र	ही	ऽ	धु	न	म	धु	र	क
३				×				२				०			
म	ध	ग	म	सां	–	सां	सां	ग	–	प	म	ग	रे	सा	रे
न्है	ऽ	या	ऽ	खे	ऽ	ल	त	गा	ऽ	व	त	हो	ऽ	री	ऽ
३				×				२				०			

अन्तरा

ग	म	ध	नी	सां	–	रें	सां	नी	नी	सां	सां	रें	सां	नीध	प
जि	न	जा	ऽ	वो	ऽ	स	खि	य	न	सं	ग	नी	ल	जाऽ	ऽ
२				०				३				×			
प	गं	रें	गं	सां	रें	नी	सां	प	प	ध	सांनी	ध	प	प	ध
वो	तो	न	ट	ख	ट	त	ट	त	ट	अं	गऽ	बो	री	ना	ऽ
२				०				३				×			
सां	–	सां	–	ग	रे	सा	रे	नी	सा	ग	म				
छो	ऽ	री	ऽ	हो	ऽ	री	ऽ	बाँ	सु	री	ऽ				
२				०				३							

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८९

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी–

काहे रामा मोरी बँगरी मुरक गई,
छैला तू ही को बुलावे मतवारे।

अन्तरा–

अयोध्या नगरी में राज तिहारो,
चिरंजीव रहें चारो भाई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी–त्रिताल

स्थायी

नी	सा	ग	म	गम	पध	प	–	नी	ध	प	म	गरे	ग	रे	सा
का	हे	रा	मा	मोऽ	ऽऽ	री	ऽ	बँ	ग	री	मु	रऽ	क	ग	ई
३				×				२				०			
ऽ	सारे	म	–	ग	ग	रे	नी	सा	रे	ग	म	गरे	ग	रे	सा
ऽ	छैऽ	ला	ऽ	तू	ही	को	बु	ला	वे	म	त	वाऽ	ऽ	रे	ऽ
३				×				२				०			

अन्तरा

ग	म	ध	–	नी	सां	रें	सां	नी	–	सां	सां	रेंसां	नीसां	ध	प
अ	यो	ध्या	ऽ	न	ग	री	में	रा	ऽ	ज	ति	हाऽ	ऽऽ	रो	ऽ
३				×				२				०			
ग	प	प	प	प	ध	नी	सां	पध	नीसां	रेंसां	नीध	पम	गरे	सानी	सा–
चि	रं	जीव	र	हे	ऽ	चा	रो	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽऽ
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९०

राग आसा–झपताल

स्थायी–

कैसे भरूँ मैं जल की गगरिया,
जमुना के तट पे ठाड़ो सँवरिया।

अन्तरा –[१]

मोर मुकुट वाके तिलक बिराजे,
कुंडल की छब दिखला रे सँवरिया।

अन्तरा –[२]

जमुना के नीर तीर धेनु चरावे,
हाथ बँसुरिया काँधे कमरिया ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग आसा—झपताल

स्थायी

रे	–	म	–	म	प	–	धनी	धप	ध
कै	ऽ	से	ऽ	भ	रूँ	ऽ	मैं ऽ	ऽ ऽ	ऽ
×		२			०		३		
						रें			
ं	सां	सां	–	सां	नी	सां	सांनी	धप	ध
ज	ल	की	ऽ	ग	ग	रि	याऽ	ऽ ऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां	सां	सां	–	सां	नी	सां	नी	ध	–
ज	मु	ना	ऽ	के	त	ट	पे	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ध	–	पध	नीं	ध	प	प	म	–	–
ठा	ऽ	ड़ोऽ	ऽ	सँ	व	रि	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (१)

म	–	प	–	ध	सां	सां	सां	–	सां
मो	ऽ	र	ऽ	मु	कु	ट	वा	ऽ	के
×		२			०		३		
ध	ध	सां	–	रें	सांरें	गं	गंरें	सांनी	ध
ति	ल	क	ऽ	बि	राऽ	ऽ	जेऽ	ऽऽ	ऽ
×		२			०		३		
ध	–	ध	–	म	म	–	प	–	प
कुं	ऽ	ड	ऽ	ल	की	ऽ	छ	ऽ	ब
×		२			०		३		
ध	ध	सां	सां	नी	ध	ध	प	म	–
दि	ख	ला	रे	सँ	व	रि	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा (२)

म	म	प	–	ध	सां	सां	सां	–	सां
ज	मु	ना	ऽ	के	नी	र	ती	ऽ	र
×		२			०		३		
ध	–	सां	–	रें	सांरें	गं	गंरें	सांनी	ध
घे	ऽ	नु	ऽ	च	राऽ	ऽ	वेऽ	ऽऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां	–	सां	–	सां	नी	रेंसां	नी	ध	–
हा	ऽ	थ	ऽ	बँ	सु	रिऽ	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ध	–	पध	नी नी	ध	प	प	म	–	–
कां	ऽ	धेऽ	ऽ	क	म	रि	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९१

राग आसा—झपताल

स्थायी—

सूरत कृष्णा प्यारे दीं,
नित उठ याद करे मनवा मोरा ।

अन्तरा—

बाग भी तेरा बगिचा भी तेरा,
बुलबुल बोले तेहारे दीं,
नित उठ याद करे मनवा मोरा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग आसा–झपताल

स्थायी

रे	–	म	–	म	प	–	धनी	धप	ध
सू	ऽ	र	ऽ	त	कृ	ऽ	ष्णाऽ	ऽऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां	–	–	–	सां	नीसां	नीध	पध	–	–
ध्या	ऽ	ऽ	ऽ	रे	दींऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां	सां	सां	–	सां	नीसां	रेंसां	नी	ध	ध
नि	त	उ	ऽ	ठ	याऽ	ऽऽ	द	ऽ	क
×		२			०		३		
पध	नीध	प	म	प	गम	गरे	रे	सा	–
रेऽ	ऽऽ	य	ऽ	न्वा	मोऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	–	प	–	ध	सां	–	सां	–	–
बा	ऽ	ग	ऽ	भी	ते	ऽ	रा	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
ध	ध	सां	–	रें	सांरें	म	सांरें	सांनी	ध
ब	गि	चा	ऽ	भी	तेऽ	ऽ	राऽ	ऽऽ	ऽ
×		२			०		३		
ध	–	ध	म	–	प	–	प	–	ध
बुल्	ऽ	बुल्	ऽ	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	ते
×		२			०		३		
पध	नीसां	–	–	सां	नीसां	नीध	ध	–	–
हाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रे	दींऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
सां	सां	सां	–	सां	नीसां	रेंसां	नी	ध	प
नि	त	उ	ऽ	ठ	याऽ	ऽऽ	द	ऽ	क
×		२			०		३		
पध	नीध	प	म	प	गम	गरे	रे	सा	–
रेऽ	ऽऽ	म	ऽ	न्वा	मेऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९२

राग सामन्त सारंग-त्रिताल

स्थायी-

मेरी सुनो, मेरी सुनो राम ! मेरी सुनो, मेरी सुनो राम !
दयासिंधु और अन्तरयामी
जग-प्रतिपालक, सकल सृष्टि-करतारा राम।

अन्तरा- [१]

प्रह्लाद ले खंभहिं बाँध्यो, नरसिंह रूप तुरत हरि धार्‌यो;
भयो गयो पुर हाहाकार्‌यो, नख से उदर विदार्‌यो राम॥

अन्तरा -[२]

गौतम तिय पाषाण वहीं तार्‌यो, मुनि को शाप निमिष में टार्‌यो,
द्रौपदी लाज सभा में राख्यो, गज की टेर सुनि धायो राम॥

अन्तरा -[३]

को अस काज कठिन जग माहीं, जो नहिं होत विष्णु तुम पाहीं;
मैं तो अधम पतित, तुम पावन, बिन्दा की अरज निवारो राम॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सामन्त सारंग–त्रिताल

स्थायी

नी̱	ध	प	म	प	–	नी̱	ध	प	म	प	म	रे	म	प	ध
मे	ऽ	री	सु	नो	ऽ	मे	ऽ	री	सु	नो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म्
×				२				०				३			
नी̱	ध	प	म	प	–	नी̱	ध	प	म	प	स	रे	म	प	ध
मे	ऽ	री	सु	नो	ऽ	मे	ऽ	री	सु	नो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म्
×				२				०				३			
–	–	–	–	–	–	–	–	प	सां	–	सां	–	सां	सां	सां
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	या	ऽ	सिं	ऽ	धु	औ	र
×				२				०				३			
नी̱	–	प	प	म	–	म	–	रे	म	प	म	रे	–	सा	सा
अं	ऽ	त	र	या	ऽ	मी	ऽ	ज	ग	प्र	ति	पा	ऽ	ल	क
×				२				०				३			
सा	नी̱	नी̱	नी̱	–	नी̱	नी̱	नी̱	नी	–	प	म	रे	म	प	ध
स	क	ल	सृ	ऽ	फ्टि	क	र	ता	ऽ	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म्
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	–	प	–	प	नी	प	नी	—	सा	नी	सां	–	सां	–
प्र	हृ	ऽ	ल्ला	ऽ	द	ले	ऽ	खं	ऽ	भ	हिं	बाँ	ऽ	ध्यो	ऽ
×				२				०				३			
प	प	नी	प	नी	सां	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	–	प	–
न	र	सिं	ह	रू	ऽ	प	तु	र	त	हृ	रि	धा	ऽ	र्यो	ऽ
×				२				०				३			
म	म	–	म	म	–	म	म	रे	–	म	–	प	–	प	–
भ	यो	ऽ	ग	यो	ऽ	पु	र	हा	ऽ	हा	ऽ	का	ऽ	र्यो	ऽ
×				२				०				३			
प	प	रें	–	नी	सां	रें	सा	नी	–	प	म	रे	म	प	ध
न	ख	से	ऽ	उ	द	र	बि	दा	ऽ	र्यो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म्
×				२				०				३			

अन्तरा दूसरा :–गौतम तिय पाषाण वहीं तार्यो, मुनि को शाप निमिष में टार्यो;
द्रौपदी लाज सभा मैं राख्यो, गज की टेर सुन धायो राम ।।

अन्तरा तीसरा:–को अस काज कठिन जग माहीं, जो नहिं होत विष्णु तुम पाहीं;
मैं तो अधम पतित, तुम पावन, बिन्दा की अरज निवारो राम ।।

नोट :–दूसरे व तीसरे अन्तरे पहिले अन्तरे की भाँति ही गाये जायेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९३

राग पीलू–ताल पंजाबी

स्थायी –

गये री माधो !
सैंयाँ विदेस गये, गये री माधो ।

अन्तरा –

अपने पिया को ढूंढन निकसी,
कर जोगनियाँ को भेस माधो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू–ताल पंजाबी

स्थायी

सा	ग गरे नीसा सा	– रेम पनी प	ग गरे सा नी
ऽ ऽ ऽ ग	ये रीऽ माऽ धो	ऽ सैंऽ याँऽ बि	दे ऽऽ स ग
×	२	०	३
सा – – प	प पध मप मग	रेग गम पध प	ग गरे सा
ये ऽ ऽ ग	ये रीऽ माऽ धोऽ	ऽ ऽ सैं ऽ याँऽ बि	दे ऽऽ स
×	२	०	३

अन्तरा

सा सा ग म	प – प –	ग म नी पम	ग गरे सा –
अ प ने पि	या ऽ को ऽ	ढूँ ऽ ढ नऽ	नि कऽ सी ऽ
०	३	×	२
सां प प पध नी	ध ध प प	मप मग रेग –ग	साग मप प –
क र जोऽ ऽ	ग नि याँ को	भेऽ ऽऽ ऽऽ ऽस	माऽ ऽऽ धो ऽ
०	३	×	२
– गम पनी प	ग गरे सा नी	सा – –	
ऽ सैंऽ याँऽ बि	दे ऽऽ स ग	ये ऽ ऽ	
०	३	×	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१४

राग पीलू–दीपचन्दी

स्थायी –

पपीहा, पी की बोली न बोल,
पपीहा रे, पी की बोली न बोल।

अन्तरा –

सुन लेगी कोई बिरहा की माती,
देगी पंख मरोर।
पी की बोली न बोल, पपीहा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू–दीपचन्दी

स्थायी

रे	प	म	
सा गग मग ग	रेम नी प	ग गरे (सा) नी	सा – –सा
प पीऽ हाऽ ऽ	पीऽ ऽ की	बो ऽऽ ली न	बो ऽ ऽल
२	०	३	×
प प धप मग	रेग गम नीप	ग गरे सा नी	सा – –सा
प पी हाऽ रेऽ	ऽऽ पीऽ ऽकी	बो ऽऽ ली न	बो ऽ ऽल
२	०	२	×

अन्तरा

सा सा गम	प – ध प	गम नी प	ग गरे सा नी
सु न लेऽ	गी ऽ को ई	बिर हा की	मा ऽऽ ती ऽ
×	२	०	३
प प पध	नी धप मग रेग	गम पध प	ग गरे सा नी
दे गी पंऽ	ऽ खम रोऽ ऽर	पीऽ ऽऽ की	बो ऽऽ ली न
×	२	०	३
सा – –सा	ग गरे नीसा नी–	रेम पनी प	ग गरे सा
बो ऽ ऽल	प पीऽ हाऽ ऽऽ	पीऽ ऽऽ की	बो ऽऽ ली
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९५

राग पीलू-त्रिताल

स्थायी-

कदर प्यारे लागे तुम्से नैंन।

अन्तरा -

जब से गये मोरी सुधहू न लीनी,
तलफत हूँ दिन रैन॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पीलू–त्रिताल

स्थायी

			ग	ग	ग	रेम	गरे	सानी	सा	–	ग	गरे	नी	सा	नी
ऽ	ऽ	ऽ	क	द	र	प्याऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ला	गेऽ	तु	ऽ	म्सें
×				२				०				३			
सा	–	सा	ग	ग	ग	रेम	गरे	सानी	सा	–	ग	गरे	नी	सा	नी
नै	ऽ	न	क	द	र	प्याऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ला	गेऽ	तु	ऽ	म्से
×				२				०				३			

अन्तरा

सा	सां	ग	मं	पं	प	धु	प	ग	म	पध	पम	ग	गरे	सानी	सा
अ	ब	से	ग	ये	ऽ	मो	री	सु	ध	हूँऽ	नऽ	ली	ऽऽ	नीऽ	ऽ
०				३				×				२			
पं	प	पं	प	पध	नी	ध	प	(म)	–	म	ग	ग	ग		
त	ले	फं	त	हूँऽ	ऽ	दि	न	रै	ऽ	न	क	द	र		
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९६

राग पीलू–पंजाबी

स्थायी—

चालो हिंडन चालो, चालो महाराज साहबान!
नैण रा लोभी रे!

अन्तरा—

सोती थी मैं अपने महल में;
काँकरि मार जगायो रे!
काँकरियां की लागी कमर में;
घायल हो गई रे!
कमर में घायल हो गई रे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग पीलू–पंजाबी

स्थायी

सा	ग नी		
ग ग रे म	ग रे सा –	नी – – प	नी सा – नी
चा लो ऽ हिं	ड न चा ऽऽ	लो ऽ ऽ चा	लो म ऽ ह
०	३	×	२
ध प ध म	प नी सा नी	सा – – –	– – नी सा
रा ऽ ऽ ऽ	ज सा ऽ हे	बा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ न
०	३	×	२
			सा
प – ग –	रे – ग रे	नी सा रे ग	रे – – –
नै ऽ ण ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	लो ऽ भी ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	–	ग	म	प	–	प	–	ग	म	नी	प	ग	गरे	सा	–
सो	ऽ	ती	ऽ	थी	ऽ	मैं	ऽ	अ	प	ने	म	ह	लऽ	में	ऽ
०				३				×				२			
												सा			
ग	–	ग	गरे	रेम	गरे	सानी़	सा	नी़	सा	रे	ग	रे	–	–	–
काँ	ऽ	क	रिऽ	माउ	ऽऽ	रऽ	ज	गा	ऽ	यो	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
प	–	प	प	प	ध	पध	नीध	पम	ग	–	ग	ग	गरे	सा	–
काँ	ऽ	क	रि	याऽ		कीऽ	ऽऽ	लाऽ	गी	ऽ	क	म	रऽ	में	ऽ
०				३				×				२			
				नी़											
ग	–	ग	गरे	सा	–	रे	ग	रे	–	–	प	प	प	प	पम
घा	ऽ	य	लऽ	हो	ऽ	ग	ई	रे	ऽ	ऽ	क	म	र	में	ऽऽ
०				३				×				२			
ग	–	ग	गरे	सा	नी़सा	रे	ग	रे	–	–	–	ग	–रे	सा	–
घा	ऽ	य	लऽ	हो	ऽऽ	ग	ई	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९७

राग भीमपलासी—त्रिताल

स्थायी—

कृष्ण मुरारी, विनती करत कर हारी !
चूरियाँ करक, बँगरी मुरक, छतियाँ छुवत लाज न आवे;
निठुर कन्हाई ठिठोली करत, डरत नाहीं, मैं तो हारी ।

अन्तरा—

सब ही नर-नारी देखत,
लाज न आवे; नित उठ काहे को मुसक्यात, ऐसी
अबकी जाने दे बात, मिलूँगी रात, रहूँगी साथ, सुनूँगी बात,
घर को जाने दे, रतिया आने दे, सास सुनेगी तो देगी गारी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीम पलासी-त्रिताल

स्थायी

नी	–	प	प	ध	प	ग	म	प	नी	प	पम	ग	रे	नी	सा
कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	री	वि	न	ती	क	र	तऽ	क	र	हा	री
×				२				०				३			
नी	सा	ग	म	प	प	ग	म	ग	म	प	नी	प	नी	प	नी
चु	रि	याँ	क	र	क	बँ	ग	री	मु	र	क	छ	ति	याँ	छु
×				२				०				३			
सां	रें	सांरें	गं	रें	सां	नी	प	प	रें	सां	रें	नी	सां	प	रें
व	त	लाऽ	ऽ	ज	न	आ	वे	नि	ठु	र	क	म्हा	ई	ठि	ठो
×				२				०				३			
सां	नी	ध	प	सां	सां	सां	म	–	प	ग	–	रे	नी	–	सा
ली	क	र	त	ड		त	ना	ऽ	ही	मैं	ऽ	तो	हा	ऽ	री
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

नी

सा सा सा ग	म प प नी	सां रें सांरें गं	रें सां नी प
स व ही न	र ना री दे	ख त लाऽ ऽ	ज न आ वे
×	२	०	३
म प नी सां	पं गं पं गं	रें गं – सां	सां – सां नी
नि त उ ठ	का हे को गु	स क्या ऽ त	ऐ ऽ सी अ
×	२	०	३
नी प ग ग	रे ग – सा	सां रें सां रें	– सां नी सां
व की जा ने	दे वा ऽ त	मि लूँ गी रा	ऽ त र हूँ
×	२	०	३
नी सां – सां	प नी प नी	– नी म म	म प प नी
गी सा ऽ थ	सु नूँ गी वा	ऽ त घ र	को जा ने दे
×	२	०	३
प नी प नी	सां रें पं –	मं गं रें सां	नी प ग म
र ति या आ	ने दे सा ऽ	स सु ने तो	दे गी गा री
×	२	०	३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९८

राग धानी-त्रिताल

स्थायी—

श्याम दृगन की चोट बुरी री,
जो जो नाम लेत तुम वाको,
मो घायल पे नोन बुरी री।

अन्तरा —[१]

ना जानूँ मैं सुध-बुध अपनी,
कौन विपिन में जाय दुरारी ॥

अन्तरा —[२]

नारायण नहीं छूटे सजनी,
जाकी जासों प्रीत लगी री ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग धानी-त्रिताल

स्थायी

सां	–	नी	प	ग	(नी) ग	सा	–	ग	–	ग	सा	ग	म	प	–
श्या	ऽ	म	दृ	ग	न	की	ऽ	चो	ऽ	ट	बु	री	ऽ	री	ऽ
०				३				×				२			
प	–	प	–	पम	नीप	पम	ग	म	म	प	प	नी	सां	सां	–
जो	ऽ	जो	ऽ	नाऽ	ऽऽ	मऽ	ले	ऽ	त	तु	म	वा	ऽ	को	ऽ
०				३				×				२			
गं	–	गं	–	गं	गं	सां	नी	प	नी	प	म	ग	म	(नी) प	मप
मो	ऽ	घा	ऽ	य	ल	पे	ऽ	नो	ऽ	न	बु	री	ऽ	री	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा (१)

प	–	प	–	पम	प	ग	म	प	प	नी	नी	सां	सां	सां	–
ना	ऽ	जा	ऽ	नूऽ	ऽ	मैं	ऽ	सु	ध	बु	ध	अ	प	नी	ऽ
०				३				×				२			
गं	–	गं	गं	गं	गं	सां	नी	प	नी	प	म	ग	म	प	मप
कौ	ऽ	न	वि	पि	न	में	ऽ	जा	ऽ	य	दु	रा	ऽ	री	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा (२):–नारायण नहीं छूटे सजनी, जाकी जासों प्रीत लगी री ।।

नोट :–दूसरा अन्तरा पहिले अन्तरे के समान ही गाया जायेगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९९

राग धानी–त्रिताल

स्थायी–

ऐसा तू मोरा सैंया निपट अनारी भयो,
हमको छाँड़ सौतन के बिलम रहे।

अन्तरा–

इनायत कर मौला मेरी अरज सुनो,
मोहे दुखिया की तोहे लाज शरम रहे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग धानी-त्रिताल

स्थायी

ग	–	ग	सा	ग	म	प	प	ग	म	नी	प	ग	ग	नी	सा
ऐ	ऽ	सा	तू	मो	रा	सैं	यां	नि	प	ट	अ	ना	री	भ	यो
०				३				×				२			
प	नी	नी	सां	–	सां	नी	प	ग	म	नी	प	ग	ग	नी	सा
ह	म	को	छाँ	ऽ	ड़	सौ	ऽ	त	न	के	वि	ल	म	र	हे
०				३				×				२			

अन्तरा

म	म	म	प	नी	नी	सां	सां	प	नी	सां	गं	गं	सां	नी	प
इ	ना	य	त	क	र	मौ	ला	मे	ऽ	री	अ	र	ज	सु	नो
०				३				×				२			
प	सां	सां	सां	नी	प	म	प	ग	–	म	(नी)प	ग	ग	नी	सा
मो	हे	दु	खि	या	की	तो	हे	ला	ऽ	ज	श	र	म	र	हे
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१००

राग माँड-त्रिताल

स्थायी—

कैसी बजाई आज बाँसुरी,
मनमोहन गोपाल लाल,
भक्त जन प्रतिपाल जगत को लाल तेने।

अन्तरा—

मधुर बाँसुरी बाजन लागी,
सरस सुर सो भरी;
राग अलाप तान मिल श्याम तेने ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग माँड–त्रिताल

स्थायी

ध	–	म	प	ग	सा	रेसा	ग	ग	सां	–	सा	ग	म	पध	नी
कै	ऽ	सी	ब	जा	ऽ	ईऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ज	वाँ	सु	रीऽ	ऽ
०				३				×				२			
प	ध	पध	नीसां	सां	सां	सां	–	नीसां	रें	सां	नी	ध	ध	प	प
म	न	मोऽ	ऽऽ	ह	न	गो	ऽ	पाऽ	ऽ	ल	ला	ऽ	ल	भ	क्त
०				३				×				२			
प	प	ध	ध	म	–	म	प	ग	ग	रेसा	ग	गम	पध	नी,सां	सांनी
ज	न	प्र	ति	पा	ऽ	ल	ज	ग	त	कोऽ	ऽ	लाऽ	ऽऽ	ऽ,ऽल	तेने
०				३				×				२			

अन्तरा

म	प	प	पध	नीसां	नी	ध	–	पनी	धप	म	म	प	–	पध	नी
म	धु	र	बाँऽ	ऽऽ	सु	री	ऽ	बाऽ	ऽऽ	ज	न	ला	ऽ	गीऽ	ऽ
२				३				×				२			
							नी								
प	प	प	प	ध	पध	नीसां	ध	सां	–	–	–	नी	ध	सां	–
स	र	स	सु	र	सोऽ	ऽऽ	भ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
नीसां	रें	सां	नी	ध	–	ध	पनी	धप	म	म	म	गम	पध	नीसां	सांनी
राऽ	ऽ	ग	अ	ला	ऽ	प	ताऽ	ऽऽ	न	मि	ल	श्याऽ	ऽऽ	ऽ,ऽम	तेने
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०१

राग गौरी–त्रिताल

स्थायी –

श्याम मोरी बैंयाँ न मरोर गिरधारी !
विनती करत गयी मैं हारी;
देखो जी बिहारी, पैंयाँ परत और न्यारी ॥ श्याम मोरी ॥

अन्तरा –

देखत नई–नई ठिठोली मोसे नाहीं कर,
मैं हूँ नारी, तू अनारी बैंयाँ मुरकाय लीनी,
ऐसो ढीठ और कारी ॥ श्याम मोरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

POP

राग गौरी–त्रिताल

स्थायी

प मग रे सानी	सारे ग(ग) रे म	म मग रे सारे	नी सा सा –
श्या मऽ मो रीऽ	बैंऽ याँ न म	रो रऽ गि रऽ	घा ऽ री ऽ
२	०	३	×
सा रे सा रे	सा नी सा सा	सारे ग – रे	म म म मग
वि न ती क	र त ग इं	मैंऽ हा ऽ री	दे खो जी बिऽ
२	०	३	×
रे – सा –	सा ध ध प	प (ध)प– (ध)ध प	म – ग रे
हा ऽ री ऽ	पैं ऽ याँ प	र तऽ औ र	न्या ऽ री श्या
२	०	३	×
प मग रे सानी			
ऽ मऽ मो रीऽ			
२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा रे सा नी	सा सारे ग गरे	मम म म म	प प प प
दे ऽ ख त	न ईऽ न ईऽ	ठिठो ली मो से	ना हीं क र
०	३	×	२
म म म म	प प नी नी	सां रें सां रें	नीसां सांनी ध प
मैं हूँ ना री	तू अ ना री	बैं याँ मु र	काऽ यऽ ली नी
०	३	×	२
सा ध – ध प	– प प प	म – म रे	प मग रे सा
ऐ ऽ सो ढी	ऽ ठ औ र	का ऽ री श्या	ऽ मऽ मो री
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०२

राग गौरी–त्रिताल

स्थायी–

डगर चलत दीन्ही गारी,
कान्हा ने मैंका;
मैं पर-घर की नार बिरानी ॥

अन्तरा–

आयेगा मोरा प्रीतम प्यारा,
सुध बुध लेगा तिहारी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग गौरी–त्रिताल

स्थायी

रे ग रे म	म मग -रे सानी	सा – सा रे	सा रे रेसा नी
ड ग र च	ल तऽ ऽदी नीऽ	गा ऽ री का	न्हा ने मैंऽ का
०	३	×	२
			म
सा रे सा नी	सा रे ग रे	म – –म पम	ग ग रे सानी
मैं ऽ प र	घ र की ऽ	ना ऽ ऽर बिऽ	रा नी मैं काऽ
०	३	×	२

अन्तरा

		म	
नी नी नी नी	सा – सा रे	ग ग रे सारे	नी – सा –
आ ये गा ऽ	ऽ ऽ मो रा	प्री ऽ त मऽ	प्या ऽ रा ऽ
०	३	×	२
		ग	
–सा ध ध ध–	प – म पम	रे – रे प	म मग रे सानी
ऽसु ध बु धऽ	ले ऽ गा तिऽ	हा ऽ री का	न्हा नेऽ मैं काऽ
	३	×	२

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०३

राग यमन–त्रिताल

स्थायी–

देखी छवि साँवरिया की,
सो मेरो मन भइलो भँवर की नैया।

अन्तरा –

मोर मुकुट वाके तिलक विराजे,
मुरली मधुर बजैया;
सो मेरो मन भइलो भँवर की नैया॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन–त्रिताल

स्थायी

सा गरे सा नी़	सा – ग रे	ग – पध पमं	ग – रे रे
दे खीऽ छ बि	साँ ऽ व रि	या ऽ ऽऽ ऽऽ	की ऽ ऽ सो
३	×	२	०
ग रे सा नी़ध़	नी़ सा – सा	नी़ रे गमं प	रे – सा –
मे रो म नऽ	भइ लो ऽ भँ	व र कीऽ ऽ	नै ऽ या ऽ
३	×	२	०

अन्तरा

ग मं ग प	प प प पमं	ग ग मं ध	नींसां (मं)धनी प –
मो ऽ र मु	कु ट वा केऽ	ति ल क बि	राऽ ऽऽ जे ऽ
×	२	०	३
ग ग ग –	ग ग ग म	गरे ग रे रे	ग रे सा नी़ध़
मु र ली ऽ	म धु र व	जैऽ ऽ या सो	मे रो म नऽ
×	२	०	३
नी़ सा – सा	नी़ रे गमं प	रे – सा –	सा गरे सा नी़
भइ लो ऽ भँ	व र कीऽ ऽ	नै ऽ या ऽ	दे खीऽ छ बि
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi